७८

hindi.dept@idol.mu.ac.in

Programme B.A
Semester – I
Course Code – UBA 1.43
Hindi Ancilliary

© 2018, University of Mumbai

डॉ. सुहास पेडणेकर
कुलगुरू,
मुंबई विद्यापीठ, मुंबई.

डॉ. शेफाली पंड्या
प्रभारी संचालक,
दूर व मुक्त अध्ययन संस्था
मुंबई विद्यापीठ, मुंबई.

प्रा. अनिल बनकर
प्रभारी अभ्यास साहित्य विभाग,
दूर व मुक्त अध्ययन संस्था
मुंबई विद्यापीठ, मुंबई.

अभ्यास समन्वयक : **डॉ. संध्या एस. गर्जे**
सहायक प्राध्यापक हिन्दी साहित्य
दूर व मुक्त अध्ययन संस्था
मुंबई विद्यापीठ, मुंबई - ४०० ०९८.

संपादक : **डॉ. शीतला प्रसाद दुबे**
सेवा निवृत्त प्रोफेसर
के.सी. महाविद्यालय, चर्चगेट,
मुंबई - ४०० ०१२.

लेखक : **डॉ. उषा दुबे**
सहायक प्राध्यापक
के.सी. महाविद्यालय, चर्चगेट,
मुंबई - ४०० ०१२.

डॉ. सत्यवती चौबे
विल्सन महाविद्यालय, गिरगाँव चौपाटी,
मुंबई - ४०० ००७.

डॉ. प्रवीण चंद्र बिष्ट
रामनारायण रुईया महाविद्यालय
माटुंगा, मुंबई - ४०० ०१९.

डॉ. शैलेश कुमार दुबे
एस.आय.ई.एस. महाविद्यालय
सायन (प.), मुंबई - ४०० ०२२.

डॉ. जयश्री सिंह
जोशी बेडेकर महाविद्यालय
ठाणे (प.), मुंबई - ४०० ६०१.

डॉ. श्याम सुन्दर पाण्डेय
बिरला महाविद्यालय
गौरीपाडा, कल्याण-४२१ ३०४.

जुन २०१९, प्रथम वर्ष, हिन्दी (ऐच्छिक)

प्रकाशक : प्रभारी संचालक,
दूर व मुक्त अध्ययन संस्था
मुंबई विद्यापीठ, मुंबई.

अक्षरजुळणी व छपाई : मुंबई विद्यापीठ मुद्रणालय
विद्यानगरी, कालिना,
सांताक्रुझ, मुंबई - ४०० ०९८.

मुद्रण : प्रिंट प्लस प्रायव्हेट लिमिटेड, १२२, शाह आणि नाहर इंडस्ट्रियल इस्टेट,
(अे-२), धनराज मिल कंमाऊंड, एस्. जे. मार्ग, लोअर परेल (प.),
मुंबई - ४०० ०१३, दूरध्वनी : ९१-२२-६६६१ १०१७/१८/१९/२०

अनुक्रमाणिका

क्रमांक	अध्याय	पृष्ठ क्रमांक

१.	अध्याय	
१.१	हिन्दी कहानी का विकास	
१.२	नौकरी पेशा	
२.	डाची	
२.१	भेड़िए	
३.	कर्मनाशा की हार	
३.१	काला शुक्रवार	
४.	टेपचु	
४.१	प्रतिशोध	
५.	नजर नसाई गई मालिक	
५.१	जैसे उनके दिन फिर	
६.	महाभारत की एक साँझ	
६.१	सरहद के उस पार	
७.	आज के अतित	
७.१	भाषा बहता नीर	
८.	सरयू भैया	

H H H

F.Y.B.A. HINDI ANCILLARY LIST OF TEXT BOOK

भाग–१

१. **१० प्रतिनिधि कहानियाँ :**
संपादन - हिंदी अध्ययन मंडल,
मुंबई विश्वविद्यालय, मुंबई,
प्रकाशक : परिदृश्य प्रकाशन मुंबई.

२. **गद्य विविधा :**
संपादन - हिंदी अध्ययन मंडल,
मुंबई विश्वविद्यालय, मुंबई,
प्रकाशक : परिदृश्य प्रकाशन मुंबई.

भाग–१

१. **१० प्रतिनिधि कहानियाँ :**

पाठ्यक्रम के लिए निर्धारित कहानियाँ

१.	नौकरीपेशा	कमलेश्वर
२.	परदा	यशपाल
३.	डाची	उपेंद्रनाथ अश्क
४.	भेड़िए	भुवनेश्वर
५.	कर्मनाशा की हार	शिवप्रसाद सिंह
६.	काला शुक्रवार	सुधा अरोड़ा
७.	टेपचू	उदय प्रकाश
८.	प्रतिशोध	पुरूषोत्तम सत्यप्रेमी

गद्य विविधा

पाठ्यक्रम के लिए निर्धारित कहानियाँ

१.	नजर नसाई गई मालिक (रेखाचित्र)	नलिनी विलोचन शर्मा
२.	जैसे उनके दिन फिर (व्यंग्य)	हरिशंकर परसाई
३.	महाभारत की एक सांझ (एकांकी)	भरतभूषण अग्रवाल
४.	सरहद के उस पार (रिर्पोताज)	फणीश्वरनाथ रेणु
५.	आज के अतीत (आत्मकथ्य)	भीष्म साहनी
६.	भाषा बहता नीर (निबंध)	कुबेरनाथ राय
७.	सरयू भईया (संस्मरण)	रामवृक्ष बेनीपुरी

II

यूनिट विभाजन

(१० प्रतिनिधि कहानियाँ)

यूनिट १	व्याख्यान १०	नौकरी पेशा, परदा, डाची, भेड़िए (पाठ वाचन एवं व्याख्या)
यूनिट २	व्याख्यान १०	कर्मनाशा की हार, काला शुक्रवार, टेपचू, प्रतिशोध (पाठ वाचन एवं व्याख्या)
यूनिट ३	व्याख्यान १५	आलोचनात्मक प्रश्न

(गद्य विविधा)

यूनिट ४	व्याख्यान १०	नजर नसाई गई मालिक, जैसे उनके दिन फिरे, महाभारत की एक साँझ
यूनिट ५	व्याख्यान १०	सरहद के उस पार, आज के अतीत, भाषा बहता नीर, सरयू भईया
यूनिट ६	व्याख्यान ५	चर्चा एवं अन्य रचनात्मक कार्य

इकाई १

१

हिन्दी कहानी का विकास – डॉ. सत्यवती चौबे

BH$mB H$s ê$naoIm

१.१ आरंभिक काल

१.१ द्वितीय उत्थान काल

१.३ उत्कर्ष काल

गद्य की अन्य विधाओं की भाँति हिन्दी कहानी का विकास आधुनिक युग में हुआ। कहानी के विकास के संबंध में विद्वानों में मतभेद है। कुछ आलोचक कहानी का आरंभ मिश्र के 'नासिकेतोपाख्यान' और इंशाअल्ला खाँ की 'रानी केतकी की कहानी से मानते हैं। किन्तु इन कहानियों में आधुनिक कहानी के तत्वों का समावेश नहीं है। उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरादूर्ध में राजा शिवप्रसाद सितारे हिन्द ने 'राजा भोज का सपना' कहानी की रचना की, लेकिन इस कहानी में चमत्कार, कल्पना और आदर्श की प्रधानता है, इसे आधुनिक कहानी की श्रेणी में रखना उचित नहीं लगता। कुछ लोग हरिश्चंद की 'एक अद्‌भुत और अपूर्व स्वप्न' को भी आधुनिक कहानी की पहली कहानी मानते हैं पर यह भी आधुनिकता की कसौटी पर खरी नहीं उतरती। अधिकांश विद्‌वानों ने किशोरीलाल गोस्वामी 'इन्दुमति' को पहली कहानी माना है। लेकिन इस पर भी विद्‌वानों में मतभेद है।

उपरोक्त बातों को ध्यान में रखते हुए हम हिन्दी कहानी की विकास यात्रा को निम्नलिखित रूप से प्रस्तुत कर सकते हैं।

१.१ आरंभिक काल

सन् १९०० से सन् १९१० तक जो कहानियाँ प्रकाश में आती हैं वे हैं –

किशोरीलाल गोस्वामी की 'इंदुमति' (१९००), माधव प्रसाद मिश्र की 'मन की चंचलता' और 'टोकरी भर मिट्‌टी' (१९१०), रामचंद्र शुक्ल की 'ग्यारह वर्ष का समय' (१९०३), गिरिजा दत्त बाजपेयी की 'पंडित और पंडितानी' (१९०६), बंग महिला की 'दुलाईवाली'(१९०७), वृंदावनलाल वर्मा की 'राखीबंद भाई' (१९०९)।

इनमें से 'इंदुमति' कहानी पर यह आरोप किया जाता है यह कहानी मौलिक कहानी नहीं है। इस पर शेक्सपियर के 'टेम्पेस्ट' का प्रभाव है। लेकिन कथानक की समरसता, वातावरण का सजीव चित्रण और भाषा प्रवाह की दृष्टि से इस कहानी को हिन्दी साहित्य की पहली कहानी माना जा सकता है।

इन सभी कहानियों में कथावस्तु, चरित्र-चित्रण, देशकाल वातावरण, शिल्प विधान जैसे कहानी के सभी तत्व विद्यमान हैं। इस काल में मौलिक कहानियों की अपेक्षा अनुवादों को अधिक बढ़ावा मिला। बंगमहिला और पार्वतीनंदन ने बंगला भाषा से, राधाकृष्ण दास ने संस्कृत से अनेक कहानियों का हिन्दी में अनुवाद किया।

१.२ द्वितीय उत्थान काल :

इस काल को विकास काल भी कहा जाता है । इसका समय १९११ से १९४६ तक माना जाता है। सन् १९११ में चंद्रधर शर्मा 'गुलेरी' जी की 'सुखमय जीवन' और जयशंकर प्रसाद की कहानी 'ग्राम' तथा जी.पी. श्रीवास्तव की 'पिकनिक' कहानियों के प्रकाशन से हिन्दी में कहानी के एक नए युग का सूत्रपात हुआ। इस कहानी के प्रमुख कहानीकार चंद्रधर शर्मा 'गुलेरी', प्रेमचंद, विश्वम्भरनाथ शर्मा 'कौशिक', जय शंकर प्रसाद, चंडी प्रसाद, हृदयेश, विनोद शंकर व्यास, राम शरण गुप्त, वृंदावनलाल वर्मा, भगवती प्रसाद वाजपेयी, पांडेय बेचेन शर्मा 'उग्र', यशपाल, भगवती चरण वर्मा, जैनेन्द्र, इला चंद्र जोशी, अज्ञेय आदि माने जाते हैं। इस युग की पत्रिकाओं- 'इन्दु', 'सरस्वती', 'सुधा', 'माधुरी', 'चाँद', 'कमला', 'अभ्युदय' आदि में हिन्दी कहानियों को उपयुक्त स्थान प्राप्त हुआ और कहानी लेखन को एक नई गति मिली।

हिन्दी कहानी का यह द्वितीय उत्थान काल बहुत महत्त्वपूर्ण है। इस काल में बहुत सी मौलिक कहानियाँ समाने आईं, जो हिन्दी कहानी साहित्य की अमूल्य स्थायी निधि बन गई। इस युग में भावमूलक और यथार्थवादी दो प्रकार की कहानियाँ लिखी गईं। भावमूलक कहानियों के जनक जयशंकर प्रसाद और यथार्थवादी आदर्शोन्मुख कहानियों के जनक प्रेमचंद थे। प्रसाद के भावमूलक कहानियों के कथोपकथन कवित्वमय और हृदय में चुभने वाले हैं। उनमें प्राचीन समय की संस्कृति और वातावरण का सफल मिश्रण हुआ है। प्रसाद की कहानियों का शिल्प-विधान सर्वथा मौलिक है। उसका आरंभ इतना मनोवैज्ञानिक तथा नाटकीय होता है कि पाठक को वे स्वत: ही आकर्षित कर लेती हैं। उनका अंत भी प्रभावशाली और अप्रत्याशित होता है कि पाठक का मन झकझोर उठता है और वह एक समस्या पुन: सुलझाने लगता है। प्रसादजी की कहानियों ने हिन्दी को एक नई दिशा प्रदान की और इस प्रकार की कहानियों की एक नवीन धारा ही प्रवाहित हो चली जिसमें राम कृष्णदास, वाचस्पति पाठक आदि प्रमुख हैं।

जिस प्रकार प्रेमचंद उपन्यास साहित्य के सम्राट हैं उसी प्रकार हिन्दी कहानी के भी सम्राट माने जाते हैं । हिन्दी कहानी के विकास में इनका प्रमुख स्थान है। पहली बार प्रेमचंद ने हिन्दी कहानी को सामाजिकता से जोड़कर देखने का प्रयास किया। इनकी तीन सौ कहानियाँ 'मान सरोवर' के नाम से आठ भागों में प्रकाशित हैं, जिसमें भारतीय जन मानस की समस्त आशाओं-आकांक्षाओं और विसंगतियों का दर्शन किया जा सकता है।

प्रेमचंद-युग के अन्य कहानीकारों में विश्वम्भरनाथ शर्मा कौशिक ने आदर्शवादी दृष्टिकोण से सामाजिक और पारिवारिक कहानियों की रचना की है। इनकी कहानियों में

जहाँ प्रेमचंद जैसी सरल व्यावहारिक भाषा मिलती है, वहीं हृदयेश की प्रवृत्ति, प्रसाद की संस्कृतनिष्ठता और कवित्वपूर्ण शैली भी विद्यमान है। विनोदशंकर व्यास की कहानियों में प्रेमचंद और प्रसाद की कहानी कला का समन्वय मिलता है । इसके विपरीत राधिकारमण प्रसाद सिंह की कहानियों में भी इस प्रवृत्ति के दर्शन होते हैं। इनकी कल्पनामूलक यथार्थवादी कहानी 'कानों में कंगना' (१९१६) की गणना हिन्दी की श्रेष्ठतम कहानियों में की जाती है।

इसी समय सुदर्शन ने प्रेमचंद और कौशिक की भाँति सामाजिक तथा पारिवारिक कहानियों की रचना की, जिसमें आदर्शवादी मनोवृत्ति पर अधिक बल दिया गया। इनकी कहानियाँ 'सुदर्शन-सुमन','सुदर्शन-सुधा', 'तीर्थ यात्रा', सुप्रभात आदि संग्रहों में संकलित हैं। चतुरसेन शास्त्री ने सामाजिक कहानियों के अतिरिक्त ऐतिहासिक कहानियों की भी रचना की जिनमें 'भिक्षुराज' तथा 'दुखवा मैं कासे कहूँ मोरी सजनी' अधिक प्रसिद्ध है। सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' की कहानियाँ भी इसी काल के अंतर्गत आती हैं जिसमें 'सुकुल की बीवी', 'सखी', 'चतुरी चमार', 'लिली' आदि प्रमुख हैं।

विकास काल के अधिकांश कहानीकार प्रेमचंद की शैली से प्रभावित रहे हैं। सियाराम शरण की कहानियों में मनोवैज्ञानिक यथार्थ की पृष्ठभूमि में आदर्शवादी जीवन दृष्टि पर अधिक ध्यान दिया गया है । वृंदावनलाल ने ऐतिहासिक और सामाजिक कहानियाँ लिखी हैं। भगवती प्रसाद वाजपेयी की कहानियाँ भी प्रेमचंद की प्रभाव-परंपरा में आती हैं। दूसरी ओर उग्र और यशपाल की कहानियों में सामाजिक और राजनीतिक विसंगतियों को उघाड़ा गया है।

प्रेमचंद के पश्चात जैनेन्द्र का नाम कहानी क्षेत्र में विशेष रूप में लिया जाता है। इन्होंने कहानी को मनोविज्ञान से जोड़कर एक नई दिशा दी। इनकी कहानियों में व्यक्ति की भावनाओं को स्थान मिला है। इसी प्रकार के कहानीकार इलाचंद जोशी भी हैं । इनकी कहानियाँ 'छाया', 'आहुति', 'दिवाली' आदि में संकलित हैं। ये फ्रायड के सिद्धांत से प्रभावित हैं। अज्ञेय भी मनोवैज्ञानिक कहानीकारों में आते हैं। इन पर भी फ्रायड के सिद्धांत का प्रभाव है। ये व्यक्तिवाद से प्रेरित दिखाई देते हैं। इनके कहानीसंग्रह - 'कोठारी की बात', 'विपथगा', 'कड़ियाँ', 'जयदोल', ये तेरे प्रतिरूप' और 'अमर बल्लरी' आदि हैं । इस काल में कुछ प्रगतिवादी कहानियाँ भी लिखी गई हैं जिनमें यशपाल, रांगेय राघव, चंद्रकिरण सोनरिक्सा, पहाड़ी की कहानियाँ प्रमुख हैं।

विकासकाल की अन्य उपलब्धियों में जे.पी. श्रीवास्तव और अन्नपूर्णानंद की हास्यरस की कहानियाँ तथा महादेवी वर्मा, सुभद्राकुमारी चौहान, उषादेवी मित्रा, होमवती देवी, कमला चौधरी आदि की पारिवारिक कहानियाँ भी महत्त्वपूर्ण हैं।

इस प्रकार, स्पष्ट होता है कि विकास काल में समाज, राजनीति, इतिहास, मनोविज्ञान आदि से संबद्ध विविध प्रकार की कहानियाँ लिखी गईं। इनमें या तो आदर्शवादी दृष्टिकोण प्रमुख है अथवा यथार्थ का आदर्शोन्मुखी चित्रण किया गया है। मनोविज्ञान, दर्शन आदि का स्वर भी इस युग की कहानियों में मुखरित हुआ है।

१.३ उत्कर्ष काल

इसका समय सन् १९४७ से अब तक माना जाता है। प्रेमचंद युग में कहानी-कला प्राय: सभी दिशाओं में विकसित हो चुकी थी तथापि उत्कर्ष काल में कुछ प्रवृत्तियाँ उभरीं। आँचलिक कहानी और नई कहानी इस दृष्टि से विशेषत: उल्लेखनीय हैं। आँचलिक कहानीकारों में फणीश्वरनाथ रेणु, शिवप्रसाद सिंह, मार्कण्डेय, रांगेय राघव और राजेन्द्र अवस्थी प्रमुख हैं। इस युग की दूसरी उल्लेखनीय प्रवृत्ति नई कहानी है, जिसका उदय सन् १९५५ के लगभग हुआ। वर्तमान कहानीकार देशकाल की सीमा में आबद्ध रहकर समग्र विश्व की घटनाओं से प्रभावित हैं। समकालीन जीवन की उलझनों में व्यक्ति की कुंठाओं और समस्याओं का अंकन इनका मूल उद्देश्य हैं। ऐसे कहानीकार मोहन राकेश, कमलेश्वर, राजेन्द्र यादव, भीष्म साहनी, मन्नू भंडारी आदि हैं जो विषय की प्रामाणिकता और कथा शिल्प पर अधिक जोर देते हैं । नई कहानी ने अपने को पूर्ववर्ती कहानी की जिन जड़ताओं से मुक्त किया था, सन् १९६२-६४ तक आते-आते वह स्वयं कुछ बँधे-बँधाए फार्मूलों, नुस्खों में पड़कर चुकने लगती है। सन् १९६४-६५ के बाद नए कहानीकारों ने कहानी को एक नया तेवर प्रदान किया, उसे समकालीन कहानी के रूप में प्रतिष्ठित किया गया। समकालीन कहानी, नई कहानी से जिन भूमियों पर अलग हुई, उनकी चर्चा विभिन्न कहानीकारों और कथा समीक्षकों द्वारा बड़े-बड़े दावों के साथ की गई। नई कहानी और समकालीन कहानी के बीच पहचान के बिन्दु इतने स्पष्ट नहीं थे, जितने नई कहानी और पूर्ववर्ती कहानी के बीच । फिर भी समकालीन कहानी में कुछ ऐसी विशेषताएँ हैं जो उन्हें अलग पहचान देती हैं वे हैं-यथार्थ की ओर प्रयाण, रचना प्रक्रिया का मौलिक अन्तर, परिवेश के प्रति अतिशय जागरूकता, नई मूल्य दृष्टि, संबंधों के परंपरागत रूप का नकार, नया नैतिक बोध, स्त्री-पुरूष संबंधों में दृष्टि का बदलाव, कहानी में जीवन के आर्थिक पक्ष की प्रधानता, व्यवस्था के प्रति रोष, विद्रोही स्वर और दुर्दम जिजीविषा, कहानी का राजनीतिक परिप्रेक्ष्य, नगर और महानगर को मुख्य कथा भूमियाँ, भाषा की नई तराश और समृद्ध शिल्प आदि।

नई कहानी और उसके बाद के कहानी आंदोलनों में महिला लेखिकाओं ने भी महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है। मन्नू भंडारी, कृष्णा सोबती, शिवानी, उषा प्रियंबदा, ममता कालिया, मेहरून्निसा, चित्रा मुद्गल, नासिरा, मृदुला गर्ग, मैत्रेयी पुष्पा, चंद्रकान्ता आदि अनेक लेखिकाओं ने स्त्री जीवन को केन्द्र बनाकर समकालीन समाज के जटिल यथार्थ को अभिव्यक्त किया। नारी को एक अलग पहचान दी।

नई कहानी के बाद हिन्दी कहानी नई दिशाओं में विकसित होती रही। हिन्दी कहानी को कई आंदोलनों से गुजरना पड़ा है जैसे अकहानी, समानान्तर कहानी, अचेतन कहानी, जनवादी कहानी आदि। उत्कर्ष काल में इन आंदोलनों को भी समेटना आवश्यक है।

बदलते समय के साथ समस्याएँ भी बदल रही हैं। राजनीतिक व्यवस्था के सभी रूपों पर हावी होकर उसे भीतर से खोखला कर रही हैं। भूमंडलीकरण के नाम

पर पूँजीवाद का नया संकट सामने आ रहा है। मीडिया की ताकत का बोलबाला है और उसके सामने व्यक्ति-अस्मिता संकट ग्रस्त हो रही है, इन सभी बातों का प्रभाव आज के कहानीकारों पर स्पष्ट दिखाई पड़ता है। ऐसे कहानीकार हैं - उदय प्रकाश, अब्दुल्लाह, शिवमूर्ति, सृजय, संजीव, संजय खाती, सतीश जमाली, धीरेन्द्र अस्थाना, स्वयं प्रकाश, अरूण प्रकाश, अलका सरावगी, सूर्यबाला, ओम प्रकाश बाल्मिकी आदि। इस प्रकार हिन्दी कहानी आज भी कथ्य और शिल्प के नए प्रतिमान रचते हुए विकास की अनेक दिशाओं की ओर उन्मुख है।

H H H

इकाई १.१

१.१

नौकरी पेशा – कमलेश्वर

BH$mB éna I m

1.1 BH$mB éna I m

1.1 ZmH$ar nem - H$‘bída

1.1.1 H$‘bída: OrdZ n[aM¶ Ama H¥${V¶m

1.1.2 ZmH$ar nem H$hmZr H$s nð^{‘

1.1.3 ZmH$ar nem H$hmZr H$s H$WmdñV

1.1.4 Mm[a{ÌH$ {defVmE

1.1.5 XeH$mb n[apñWVr Ama dmVmdaU

1.1.6 ZmH$ar H$hmZr H$m CÔí¶

1.1.7 g‘rjmË‘H$ àíZ

1.1.8 bKÎmar àíZ ({Qßn{U¶m)

1.1.9 gX^ g{hV AdVaU

1.1.10 dñV{Zð àíZ

१.१.१ कमलेश्वर : जीवन परिचय और कृतियाँ

हिन्दी साहित्यकारों में कमलेश्वर जी ने अपना विशेष स्थान बनाया है। इनका नाम नई कहानी आंदोलन से जुडे अगुआ कथाकारों में आता है। इन्होने अपने काव्यं साहित्य में तत्कालिन समाज से जुड़े समस्याओं को उभारा है। इनका जन्म ६ जनवरी को उ. प्र. के मैनेपुरी जिले में भारत में हुआ। इन्होने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से हिन्दी में उपाधि प्राप्ति की। पारिवारिक परीस्थिती ठीक न होने के बावजूद इन्होने अपने शिक्षा की गति धिमी न की। समाज में फैले अंधविश्वासी, जातिवाद आदि पर अपनी लेखनी के माध्यम से प्रहार किया। जीवन में वे कभी रूके नही और लगातार अलग-अलग विषयों पर गंभीर विचार किया और उसे साहित्यिक रूप प्रदान किया।

लगातार संघर्ष और प्रयत्न-शील प्रवृत्ति के कारण वे सफल साहित्यकार हुए। कई पत्रिकाओं का संपादन किया। उनके अनेक उपन्यास, कहानी, नाटक आदि विधाओं पर लेखन किया।

उनकी कहानी में आर्थिक, सामाजिक और राजनितिक समस्याओं से झुझते हुए मध्यमवर्गीय परिवार का चित्रण किया गया है। नयी कहानी में प्रमुख रचनाएँ है – राजा निरबंसिया, खोई हुई दिशाए, सोलह छतोंवाला घर इत्यादि ।

कमलेश्वर ने कई ढेर सारी कहानियाँ लिखी, उनकी कहानियों में दरिया, नील झील, तलाश, बयान, नागमणि, अपना एकांत, आसक्ति, जिंदा मुर्दे, जार्ज पंचम की नाम, मुर्दो की दुनिया, कसबे का आदमी, एवं स्मारक आदि उल्लेखनीय है।

''एक सड़क सत्तावन गलियाँ कमलेश्वर का सर्वप्रथम उपन्यास है, जो १९५८–५९ मे लिखा गया था। और बाद में प्रकाशक की भूल के कारण १९६८ में बदनाम गली शीर्षक से भी प्रकाशित हुआ। तीसरा आदमी, समुद्र में खोया आदमी और आँधी प्रमुख है। आँधी पर गुलजार द्वारा निर्मित आँधी नाम से बनी फिल्म ने अनेक पुरस्कार जीते, उनके अन्य उपन्यास है – लौटे हुए मुसाफिर वही बात आगामी अतीत आदि उपन्यास 'इनके द्वारा' लिखे गये। 'कितने पाकिस्तान' उपन्यास इनका चर्चित उपन्यास है।

इनके कई नाटक है – अधूरी आवाज, रेत पर लिखे नाम, हिंदोस्तां हमारा के अतिरिक्त बाल नाटकों के चार संग्रह भी इन्होने लिखे ।

पत्रकारिता के क्षेत्र में इन्होने अपनी अपनी अमिट छाप छोड़ी, उन्होने 'नई कहानी, सारिका, गंगा कथायात्रा, रंगित जैसी महत्त्वपूर्ण पत्रिकाओं का संपादन किया। हिंदी दैनिक दैनिक जागरण (१९९०–९२) के भी वे संपादक रहे है। दैनिक भास्कर से १९९७ से वे लगातार जुड़े है। इस बीच जैन टी.वी. के समाचार प्रभाग का कवि भार संभाला। १९८०–८२ तक कमलेश्वर दूरदर्शन के अतिरिक्त महानिदेशक भी रहे। दूरदर्शन पर साहित्यिक कार्यक्रम 'पत्रिका' की शुरूआत इन्ही के द्वारा हुई तथा पहली टेलीफिल्म 'पंद्रह अगस्त' के निर्माण का श्रेय भी इन्ही को जाता है। कमलेश्वर स्वातंत्र्योत्तर भारत के सर्वाधिक क्रियाशील, विविधतापूर्ण और मेधावी हिंदी लेखक है।

कमलेश्वर जी का निधन २७ जनवरी, २००७ में हुआ।

१.१.२ नौकरी पेशा कहानी की पृष्ठभूमि

लेखक ने कहानी में मध्यमवर्गीय परिवार की मानसिकता का चित्रण किया है। कहानी गहन सामाजिक बोध से जुड़ा है, 'नौकरी पेशा' कहानी के माध्यम सें लेखक ने बताया है कि किस प्रकार लोग गाँवों की तुलना में शहर या कस्बों में रहना अधिक पसंद करते हैं। उनके अनुसार ग्रामीणों में रहनेवाला व्यक्ति का सामाजिक और आर्थिक रूप से विकास नही होता है । लोग गाँव छोड़कर शहरों या कस्बों में रहने के लिए बाधित है और अंत में शहरों की चकाचौध से थककर वह अपने गाँव को याद करते है।

१.१.३ नौकरी पेशा कहानी की कथावस्तु

कहानी के आरंभ में बताया गया कि किस प्रकार गाँव से उखड़े हुए लोग कस्बों में आकर पनाह लेते हैं। कस्बों में रहना वे अपनी प्रतिष्ठा समझते हैं । इस कहानी के मुख्य पात्र राधेलाल इसी प्रवृत्तिवाले व्यक्ति है।

राधेलाल शहरों या कस्बो में रहने वालो को आधुनिक या समझदार समझते है। कहानी में राधेलाल को लोग लाला पुकारते हैं। उनके पिताजी को भी इसी नाम से संबोधित किया जाता था, क्योकि उनकी वहीं पर परचूनी की दुकान थी। इसलिए सभी लोग उन्हे लाला कहते है। राधेलाल दसवी पास किए थे, और टाइपिंग भी जानते थे इसप्रकार लोगों के बीच उनका नाम बढ़ा हुआ था। कभी–कभार लोग उन्हे बाबू कहकर भी संबोधित करते है। तब बाबू सुनने पर उनका रोम–रोम फुल उठता है। उन्हे लगता है कि बाबू शब्द उन्ही के लिए है जो पढ़ा लिखा और समझदार है।

राधेलाल जितने भी कार्य करते थे वे सभी केवल दूसरों के सामने अपनी साख जमाने के लिए। वे ग्रामीणो ंको दीन–हीन समझते है।

राधेलाल बाबू, लायब्रेरियन आदि तरह के काम अपने जीवन में कर चुके थे। उनकी कोई स्थायी नौकरी नहीं थी पाँच–छह महीनों से ज्यादा किसी दफ्तर में उन्हे न रहने मिलता । सरकारी – गैर सरकारी सभी महकमों के लिए राधेलाल कार्यकता थे। यदि उनसे कोई पूछ बैठ बैठता कि क्या काम करते हो, तो बड़े ही रूबाब से कहते कि नौकरी पेशा हूँ। अपने आपको नौकरी पेशा कहने में गर्व का अनुभव करते है। घर में और बाहर दोनों ही जगह अपना रुतवा बढ़ाने के लिए कई झुठ कहते है।

कहानी में राधेलाल को कायदा पंसद व्यक्ति बताया है। जो हर काम नियम, तथा समय से करते है। इसलिये जब राधेलाल को रामभरोसे के यहाँ पूड़ी तलने का काम सौपा गया था तब वे वहाँ समय से पहुँच जाते हैं। और घासलेटी तेल में पुड़ी तलने का विरोध करते है। बिरादरी तथा पुर्वजों का हवाला देकर देशी घी में पुड़ी तलने के लिए कहते हैं। ताकि लोग यह न कहें कि राधेलाल के रहते हुए यह अनर्थ कैसे हो गया।

कुछ दिनों बाद राधेलाल की एवजी वाली नौकरी छूट जाती है उसी समय रामभरोसे से पिडित हो जाते है। राधेलाल को लोग कहते है कि वे रामभरोसे की जगह पर चले जाये नौकरी के लिए लेकिन राधेलाल को लगता है कि रामभरोसे उनके हित के लिए कुछ नही करेगा। कुछ दिन बाद राधेलाल को खबर मिलती है कि रामभरोसे स्वर्ग सिधार गये।

उसके बाद राधेलाल मुख्तार साहब से मिलने जाते है नौकरी के लिए जब वे राधेलाल को बताते है कि रामभरोसे ने उनका नाम नौकरी के लिए सुझाया तब उन्हे आश्चर्य होता है कि उन्होने रामभरोसे के बारे गलत राय बना रखी थी।

उन्हे आत्मग्लानि होती है और वे भारी कदमों से वहाँ से निकल जाते हैं। जीवन के इतने वर्ष गुजरने के बाद उन्हे अपना गाँव याद आता है।

चारित्रिक विशेषताएँ

कहानी में दो ही पात्र मुख्य है। वे है - राधेलाल कहानी के केंद्र पात्र हैं और दुसरे रामभरोसे गौण पात्र हैं।

१) राधेलाल :

राधेलाल कहानी के मुख्य पात्र है। उनकी जीवन शैली नौकरी पेशा व्यक्ति की तरह है। जो अपने आप को नौकरी पेशा व्यक्ति कहलाने में अपनी शान समझते है। अपना गाँव छोड़कर कस्बे में आकर बस जाते है। शहरी बनने की दौड़ में वे सबसे आगे है। घर में अपने आप को बड़ा बताने के लिए हर छोटी-छोटी बात पर झूठ बोलते दफ्तर से निंबु चुराकर लाते है और कहते है कि ''ये दफ्तर के बगीया के हैं, माली कहने लगा बाबू इतना रस है इनमे अभी भी ... पकने पर तो मुसम्मी को मात करेंगे। वह तो चार-पांच दे रहा था, हमने कहा दो काफी हैं।'' दूसरों को प्रभावित करने के लिए गंदी सी कोट में फाउन्टन नुमा पेन और एक डायरी रखते है। ताकि लोगों को लगे कि वे पढ़े- लिखे बाबू साहब है इसलिए जब दूसरे उन्हे 'बाबू राधेलाल कहकर कोई पुकारता तो जैसे उनका रोम-रोम पुलक उठता और उन्हे लगता कि जीवन की सार्थकता तो अब हाथ आई है।' राधेलाल मिलनसार व्यक्ति है। वे अधिकतर लोगों को जानते पहचानते है । सरकारी तथा गैरसरकारी सभी तरह के दफ्तरों में काम कर चुके हैं। हर जगह अपनी अलग पहचान बनाई। किसी भी दफ्तर में काम करने के बाद उसकी आलोचना करना उनके स्वभाव में नही था।

इस प्रकार कहानी में राधेलाल के माध्यम से शहरीकरण की प्रवृत्ति को बताया है और साथ ही कस्बाई आत्मीयता की और ध्यान आकर्षित किया है।

२) रामभरोसे :

रामभरोसे काहानी के गौण पात्र है। रामभरोसे अपनी परचूनी की दूकान छोड़कर कस्बे में शहरी बनने के लिए मुख्तार साहब के मुन्शी थे। राधेलाल और रामभरोसे में भीतर ही भीतर सबसे पुराना शहरी कहलाने की प्रतियोगिता थी, जबकी रामभरोसे की एक पुश्त कस्बे में आकर बसी थी जबकी राधेलाल काफी पुरानी थी। रामभरोसे की जब तबीयत खराब होती है तब वे मुख्तार साहब से राधेलाल को एवजी की नौकरी पर रखने के लिए सिफारिश करते है। इस प्रकार वे मानवीय संवेदना का परिचय देते है। उनके आत्मियता के कारण राधेलाल जैसा व्यक्ति मानव बन जाता है और अपने गाँव को याद करने लगता है।

देशकाल परिस्थीति और वातावरण :

देशकाल, वातावरण और परिस्थीति कहानी का महत्त्वपूर्ण तत्व है। बिना इसके कहानी पूरी नही होगी। देशकाल परिस्थीति पात्रों के माध्यम से होती है। उसका रहन-सहन और बोली आदि के माध्यम से देशकाल का पता चलता है। कमलेश्वर जी ने कस्बाई जीवन को जीया है इसलिए कस्बाई वातावरण को अपनी कहानी में

जिवंतता प्रदान की। किस प्रकार मध्यम वर्गीय परिवार अपने गाँव को छोड़कर रोजगार प्राप्त करने के लिए कस्बे में आकर बस जाता है।

कहानी में लेखक ने बड़ी रोचक ढंग से कस्बाई मनोवृत्ति और उसके विकास को दर्शाया है। नौकरी पेशा कहानी मे कस्बाई वातावरण को बताया है। कहानी में जिस गाँव से राधेलाल और रामभरोसे आते है और किस कस्बे में आकर बसते हैं, दोनों का ही विस्तारपूर्वक वर्णन नहीं हैं।

कहानी में राधेलाल के पिताजी की परचूनी की दूकान थी लेकिन राधेलाल नौकरी पेशा कहने में अधिक रूचि रखते है। कोट पहनना, पेन रखना साइकिल की देख-भाल यह सभी कस्बाई मनोवृत्ति को दर्शाते है। सरकारी तथा गैर सरकारी सभी तरह के काम राधेलाल को प्राप्त होते है, इस प्रकार उन्हे नौकरी न मिलने की परेशानी नही थी, किसी भी तरह उनका काम चल जाता था। इस प्रकार कमलेश्वर जी की नौकरी पेशा कहानी में शहरो के प्रति बढ़ते आकर्षण को बड़े ही रोचक दंग से प्रस्तुत किया है। कहानी में राधेलाल और रामभरोसे के कारण कस्बाई वातावरण को समझने में सहायक सिद्ध हुआ है। उन्होने कहानी में कस्बाई वातावरण को बहखूबी ढ़ंग से प्रस्तुत किया है।

१.१.५ नौकरी पेशा कहानी का उद्देश्य :

बिना किसी उद्देश्य के व्यक्ति कार्य नही करता। उसके हर कार्य के पीछे कोई-न-कोई उद्देश्य छिपा होता है। समाज को जागृत करना, मनोरंजन करना आदि उद्देश्य से साहित्यकार अपना साहित्य रचता है, उद्देश्य एक तरह साहित्य की आत्मा है। इस आधार पर जब नौकरी पेशा कहानी के उद्देश्य की और ध्यान दे तो यह बात स्पष्ट होती है कि लेखक ने कस्बों और शहरों के प्रति लोगों के आकर्षण को बताया है, आज इस प्रवृत्ति के कारण गाँव का गाँव खाली नजर आता है। लोग नौकरी की तलाश में शहरों की और दौड़ते है। वहाँ की व्यस्त जिंदगी में अपना गाँव अपने लोगों को भूल से जाते है। आज इस चाह ने गाँवों को बूरी तरह से प्रभावित किया है।

कस्बों में भी लोग आपस में ही शहरी बनने की प्रतियोगिता करते है। यह चित्रण राधेलाल और रामभरोसे के माध्यम से देख सकते है। टाई लगाना, डायरी रखना, जुते पहनना, नौकरी करना आदि तरह की प्रवृत्ति ने मनुष्य को उपरी तौर पर ही नही बल्कि भीतर से शहर बनने के लिए उक्सा रही है। गाँव को छोड़कर और शहरों में बस जाने से उनकी औकात बढ़ जाएगी। खेत खलिहान छोड़कर नौकरी करने में अपना बड़प्पन समझते है। इसलिए राधेलाल से पूछने पर कि आप क्या काम करते है तो बड़े ही रूबाब से कहते है कि नौकरी पेशा आदमी हूँ।

इसप्रकार आज के लोगों ने शहरों तथा कस्बों के प्रति बढ़ते प्रभाव और गाँव के प्रति उदासीनता का चित्रण करना लेखक का उद्देश्य हो सकता है। साथ ही

शहरी सोच से जब व्यक्ति भीतर से टूट जाता है तब उसे अपना गाँव अपने लोग याद आते है इसकी और भी लेखक ने पाठक का ध्यान आकर्षित किया है।

१.१.६ समीक्षात्मक प्रश्न :

१. नौकरी पेशा कहानी की कथावस्तु अपने शब्दों में लिखिए।

२. राधेलाल के माध्यम से कहानी में किस समस्या को बताया है?

३. नौकरी पेशा कहानी के शीर्षक की सार्थकता स्पष्ट या सिद्ध किजीए।

४. कहानी का उद्देश्य लिखिए।

१.१.७ लघुत्तरीय प्रश्न (टिप्पणियाँ) :

१. राधेलाल का चरित्र-चित्रण

२. रामभरोसे का चरित्र-चित्रण

३. कहानी का मूल भाव

४. कहानी का सारांश लिखिए

५. रामभरोसे के प्रति राधेलाल कि क्या सोच रहती है? और क्यो ?

६. लेखक ने कस्बाई जीवन को किस प्रकार उभारा है अपने शब्दों में लिखिए ।

१.१.८ संदर्भसहित अवतरण :

१. बाबू राधेलाल कहकर कोई पुकारता तो जैसे उनका रोम-रोम पुलक उठता और उन्हे लगता कि जीवन की सार्थकता तो अब हाथ आई है।

२. एक मरतबा उलटवाने कारण उपर वाली जेब बायी से दाहिनी ओर आ गई थी, जिसमे फाउण्टेन पेननुमा मोटी पेन्सिल हर वक्त लगी रहती और एक छोटी सी निहायत गन्दी डायरी पड़ी रहती थी।

३. सफाई के बाद उन्हे पैरों में डालकर कोट-पतलून पहनते हुए पत्नी से बोले ''जरा देख ही आऊँ । असल बात यह है कि साहब का मुझ पर जितना इत्मीनान है उतना बड़े बाबु पर भी नहीं है । मेरे टाइप से बहुत खुश है, कहते थे इतने सिले घूम आया हूँ पर तुम जैसा होशियार टाइप बाबू नहीं मिला।

४. भारी कदमों से वे मुख्तार साहब का अहाता पार करके स्मशान की तरफ जा रहे थे और इक्कीस बरस की नौकरी पेशा जिन्दगी में उन्हें आज पहली बार अपने छुटे हुए गाँव की याद आई थी, एक कसकभरी याद।

१.१.९ वस्तुनिष्ठ प्रश्न

१. कमलेश्वर जी की कौन सी रचना पाठ्यक्रम में है?

उत्तर. नौकरी पेशा

२. राधेलाल के बाबा को लोग लाला क्यो पुकारते है?

उत्तर. क्योंकि उनकी परचूनी की दूकान थी ।

३. रविवार को छुट्टी के दिन राधेलाल कौन-सा कार्य करते हैं?

उत्तर. सफाई का काम

४. राधेलाल स्टेण्डिग कार्यकर्ता किसके लिए है?

उत्तर. सरकारी तथा गैर-सरकारी महकमों के लिए

५. किसे फालिज मार गया था?

उत्तर. लाला रामभरोसे को

६. रामभरोसे किसके यहाँ नौकरी करते थे?

उत्तर. मुख्तार साहब

७. मुख्तार साहब ने किसे नौकरी पर रखा था?

उत्तर. लाला रामभरोसे को

८. राधेलाल किसके यहाँ नौकरी के लिए जाते हैं?

उत्तर. मुख्तार साहब

१.१.१० संदर्भ सहित अवतरण (उदाहरण सहित)

पता नही क्यों राधेलाल को इस खबर से कोई कष्ट नही हुआ, पर दिखाने के बोल ही पड़े, ''मुझे टोकते थे किकाहे जान दिये देते हो, और खुद पड़ रहे''।

संदर्भ :

प्रस्तुत अवतरण हमारी पाठ्यपुस्तक प्रतिनिधि काहनियाँ के नौकरी पेशा कहानी से ले गई है। कहानी के लेखक कमलेश्वर है, इनके कहानियों में तत्कालीन समाज से जुड़े हुए समस्याओं का चित्रण मिलता है।

प्रसंग :

प्रस्तुत कहानी में कस्बाई जीवन को उभारा है। साथ ही मध्यमवर्गीय परिवार की मानसिकता को उभारा है। कहानी मे रामभरोसे को फालिज मार गया था। उनके दफ्तर में उनकी जगह खाली थी, फिर भी राधेलाल को लगता था कि रामभरोसे उनकी सिफारिश कभी नही करेगे। इसलिए राधेलाल को रामभरोसे के साथ हुए घटना के बारे में सुनने के बाद भी अफसोस नहीं है।

व्याख्या :

नौकरी पेशा कहानी के मुख्य पात्र राधेलाल सरकारी–तथा गैर–सरकारी महकमों के लिए स्टेडिंग कार्यकर्ता है। राधेलाल दो–तीन महीनों के लिए ऐवजी नौकरी करते थे। कुछ महीनों से उन्हे कहीं पर भी एवज में नौकरी नही मिली थी।

रामभरोसे अक्सर राधेलाल के काम को देखकर कहा करते थे कि ''काहे को जान देते हो एतवार के दिन भी राधेलाल को काम करते देखकर उनका मजाक लेते थे। राधेलाल का एक स्वभाव था कि वे कहीं पर भी काम करते हुए या काम करने के बाद किसी की बुराई नही करते थे राधेलाल की एवजी की नौकरी छुटने के बाद वे कई महीनों तक घर पर ही थे। एक दिन उन्हे खबर मिलती है कि रामभरोसे को फालिज मार गया है। यह सुनने पर राधेलाल को किस तरह का कोई दुख नहीं होता है। क्योंकि दुनिया के लिए भले वे अच्छे साथी रहे हो लेकिन अंदर ही अंदर दोनों में पुराना शहरी बनने की प्रतिस्पर्धा थी। शायद यही कारण था कि राधेलाल को रामभरोसे के प्रति सहानुभुति नहीं थी।

इसमें लेखक ने स्वार्थ प्रवृत्ति और कस्बाई जीवन के यथार्थ को नौकरी पेशा कहानी के माध्यम से चित्रित किया है।

H H H

इकाई १.२

१.२

परदा – यशपाल

BH$mB H$s ê$na I m

१.२.० रुपरेखा

१.२.१ यशपाल : जीवन परिचय और कृतियाँ

१.२.२ परदा कहानी की कथावास्तु

१.२.३ चारित्रिक विशेषताँए

१.२.४ देशकाल, परिस्थिति और वातावरण

१.२.५ काहानी का उद्देश्य

१.२.६ संदर्भ सहित व्याख्या

१.२.७ संदर्भ सहित व्याख्या के लिए अन्य अवतरण

१.२.८ बोध प्रश्न

१.२.९ लघुत्तरी प्रश्न

१.२.१०वस्तुनिष्ठ प्रश्न

१.२.११टिप्पणी

१.२.१ यशपाल : जीवन परिचय और कृतियाँ

हिन्दी के यशस्वी कथाकार और क्रांतिकारी विचारधारा के यशपाल का जन्म ३ दिसेंबर, १९०३ ई. मे फिरोजपुर छावनी में हुआ था। यशपाल मुख्यत: मध्यम वर्गीय जीवन के कलाकार हैं। मध्यमवर्गीय लोगों में फैले हुए अंधविश्वासों को अपने साहित्यमें स्थान दिया, ताकि लोगों में जागृति उत्पन्न हो सके। इनके परिवार ने इन्हे गुरूकुल कांगड़ी भेज दिया। गुरूकुल के वातावरण में यशपाल के मन में विदेशी शासन के प्रति विरोध की भावना जागृत हुई।

महान क्रांतिकारी के रूप यशपाल जी ने आजादी के समय महत्वपूर्ण योगदान दिया। भगतसिंह और सुखदेव के साथ कई आंदोलनों में भाग लिया। कई बार उन्हे जेल भी जाना पड़ा। जेल में रहकर कई गंभीर मुद्दों पर रचना रची।

इनकी कई कहानियाँ, उपन्यास, संस्मरण, जीवनी प्रकाशित हुई। अबतक उनके लगभग सोलह कहानी संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। जिसमें मध्यम वर्ग की असंगतियों, कमजोरियों विरोधास, रूढियों आदि पर विद्रोह व्यक्त किया है ।

कहानियों में उन्होने ज्ञानदान, तर्क का तूफान, भस्मावृत्त, वो दुनिया, धर्मयुध्द आदि की रचना की।

दादा कामरेड, देशद्रोही, पार्टी कामरेड दिव्या, मनुष्य के रूप, अमिता, झूठा-सच आदि उपन्यास की रचना की। निबंधो में न्याय का संघर्ष, चस्कर क्लब आदि है। गांधीवाद की शव-परीक्षा अन्य कृतियाँ भी उपलब्ध है।

यशपाल ने राजनीतिक तथा साहित्यिक दोनो क्षेत्रों में क्रांति की है। मध्यमवर्गीय परिवार के हालात का मार्मिक चित्रण उनकी रचनाओं मे दिखाई देता है। उनके जीवन के उतार-चढ़ाव और उनकी जीवन की विड़बनाओं को साहित्य में उतारा है।

चौदह वर्ष की सख्त सजा उनको हुई इस दौरान उन्होने कई रचनाएँ रची। देश-विदेश के बहुत से लेखकों का मनोयोगपूर्ण अध्ययन किया 'पिंजरे की उडान' और वो दुनियॉ की कहानियाँ प्राय: जेल में ही लिखी गयी। उनके जीवन में उन्होने कई उतार-चढ़ाव का सामना किया। इन समस्याओं ने उन्हे और अधिक साहसी बनाया।

इनकी रचनाओं से प्रभावित होकर रीवा सरकार ने 'देव पुरस्कार' (१९५५) सोवियत लैंड सूचना विभाग से सोवियत लैंड नेहरू पुरस्कार (१९७०) हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग ने मंगला प्रसाद पारितोषिक (१९७१) तथा भारत सरकार ने 'पद्म भूषण' की उपाधि प्रदान कर इनको सम्मनित किया.

साहित्य को माध्यम बनाकर यशपाल जी ने समाज के यथार्थ को सामने रखा। उनकी समस्याओं से लोगों को अवगत कराया। अपनी ज्वलंत विचारोसे साहित्य जगत में अलग पहचान बनायी। २६ दिसंबर, १९७६ को यशपाल जी ने दुनिया से विदा ली।

कहानी की रूपरेखा

कहानी में चौधरी पीरबख्स की आर्थिक परिस्थिति का चित्रण है। पीरबख्स ने घर की आर्थिक परिस्थिति खराब होने के कारण चौधरी कई लोगों से उधार लेता है। उधार के बदले में घर के सामानों को गिरवी रखता है। एक समय ऐसा आता है कि उधार लेने के लिए घर में कोई सामान नही बचा है। परिस्थिति ने उसे इतना मजबूर बना दिया है कि वह पंजाबी खान के पास उधारी लेने चले जाता है। पंजाबी खान तो उसे उधार दे देता है लेकिन घर के दरवाजे पर लटके परदे को भी नही छोड़ता है। दरवाजे का परदा चौधरी पीरबख्स की सच्चाई को छुपाने का जरिया है। वह जरिया खत्म होने पर चौधरी पीरबख्स का सब कुछ तभी खत्म हो जाता है।

लेखक ने कहानी के माध्यम से समाज पर करारा व्यंग्य कसा है कि किस प्रकार पंजाबी खान और जमीदार और सभी उच्च वर्ग के व्यक्ति जो गरीबों पर शोषण करते है, और उपर से नकाब लगाकर रखा है कि कोई उसे पहचान न सके पंजाबी खान इसी तरह का व्यक्ति है। जो बिना किसी सामान के लोगों को उधार देता है। बाद में पैसे समय पर न मिलने पर किसी भी हद तक गुजरता है।

१.२.१ कहानी की कथावस्तु

कहानी का आरंभ चौधरी पीरबख्श के दादा जी से होता है। उन्होंने अपने बेटो के लिए एक पक्का मकान बनवा लिया। और लड़कों को अच्छी तालीम दी थी ताकि वे अपने जीवन में एक मुकाम पर पहुँच सके। दोनो लड़कों ने तालीम पा कर एक ने रेल्वें में और दुसरे ने डाकखाने में नौकरी पा ली थी।

दोनों ही बेटों का परिवार बढ़ा जिम्मेदारियाँ बढ़ी और तेजी से खर्च भी बढ़ा अब उस पक्के मकान में दोनों बेटों के परिवार का एक साथ रहना मुश्किल हो गया। अपनी समस्या घर के भीतर ही रहे दूसरों के सामने न आये इसलिए ड्योढी पर परदा लगा दिया है। चौधरी-खानदान अपने घर को हवेली पुकारते थे। घर की ड्योढ़ी पर उन्होने बोरी के टाट का नही बल्कि अच्छे किस्म का परदा रहता है।

परिवार में एक साथ तो रहते थे लेकिन खर्च और परिवार बढ़ने के कारण भीतर ही भीतर अलग-अलग हो गये थे। परदा भी धीरे-धीरे खराब होने लगा। अब समस्या ये उठती है कि परदा लाये कौन? ''इस समस्या का हल इस तरह हुआ कि दारोगा साहब के जमाने की पलंग की रंगीन चद्दरे एक के बाद एक ड्योढ़ी में लटकाई जाने लगी।

कहानी में फजल कुरबान और चौधरी इलाही बख्श ये दो बेटे है। चौधरी पीरबख्श इलाही बख्श की चौथी संतान है, बाकी सभी ने तालीम हासिल कर कुछ न कुछ नौकरी हासिल कर ली। किंतु पीरबख्श प्राइमरी से आगे न बढ़ सके परिवार को ध्यान में रखकर उन्होने भी तेल के मील में मुंशीगिरी कर ली। बारह रूपये महीने पर वे वहाँ नौकरी करते थे।

पंद्रह साल में उनका पगार बारह से अठारह रूपये हो गया। लेकिन परिवार की जरूरते दिन दुगने रात बढ़ती गई। परिवार की जरूरतों को पुरा करने के लिए १८ रूपये पुरे न पड़ते थे। ऐसी दशा में उन्हे घर की चीजों को गिरवी रख उनकी आवश्यकताओं की पूर्ति करते है। घर की औरतों के कपड़े जगह-जगह से फट चुके है। घर में खाने के लाले पड़ने लगे। लेकिन ड्योढ़ी पर उन्होने परदा लटकाये रखा। क्योंकि भीतर कुछ भी हो पर मुहल्ले में भीतर की बात बाहर न आने पाये।

ऐसा वक्त आ गया कि दरवाजा भी, पानी में गल-गल कट कर सड़ कर गिर जाता है। मकान मालिक को कहने पर उसने मकान खाली करने के लिए कहा। किसी तरह चौधरी ने दरवाजा को चौखट से टिका दिया। हाँलाकि की चोर से ज्यादा फ्रिक उन्हे अपने घर की आबरू की थी। एक परदा ही है जो उसे बचाकर रखा है। घर की औरतों के शरीर पर कपड़ा नाम मात्र रह गया था।

एक दिन पीरबख्श को रूपयों की बहुत जरूरत आ पड़ी लेकिन अब घर में गिरवी रखने के लिए कुछ भी नही है। ऐसे समय एक ही व्यक्ति उनको पैसे देता है, वह है पंजाबी खान। पंजाबी अली खाँ ने वे चार रूपये उधारी लेते है। चौधरी जानते थे कि यदि पंजाबी खान को पैसै समय पर न मिले तो वह उनकी हालत क्या करेगा। सब जानते हुए भी चौधरी समय पर रकम नही लौटा पाता है। कई जगह कर्ज माँगने

पर भी उन्हे कर्ज नहीं मिलता। दिन-ब-दिन पंजाबी खान का खौफ उसे सताने लगा। और वह उससे बचने के लिए यहाँ वहाँ छिपने लगते हैं। एक ऐसा समय आता है कि चौधरी को लगता है कि अब वह अपने नियमित समय से आकर चला गया होगा लेकिन ऐसा नहीं होता है और उसकी भेट उसके दरवाजे पर होती है जब वह दरवाजे पर खडे होकर चौधरी को गाली देता है। चौधरी को देखने पर गुस्से में उसे अपशब्द कहने लगता है, मुहल्ले के सभी लोग खडे होकर केवल तमाशा देखते है। चौधरी मिन्नते करता है कि वह और थोड़े दिन की मुहलत उसे दे दे किंतु वह नहीं मानता है। कुछ नही है तो परदा ही में लिये जाता हुँ यह कह कर वह परदे को खींच लेता है। जैसे ही परदे की डोर टूटती है वैसे ही चौधरी जमीन पर गिर पड़ते है।

परदा हटने पर वहाँ उपस्थित सभी लोग शर्म से अपनी नजरे झुका लेते है। पंजाबी खान का कठोर हृदय भी पिघल जाता है और परदा वहीं छोड़े वहाँ से ''लाहौल बिला...'' कहकर लौट जाता है। स्त्रीया घर के भीतर अर्धनग्न अवस्था में सिकुडकर खड़ी रहती है।

कहानी के अंत में नीचे पड़े हुए परदे को फिर से दरवाजे पर लटकाने की सुध भी चौधरी को नहीं रहती है। और अब इसे जरूरी भी नही समझते। शायद अब उनके पास छिपाने के लिए कुछ भी शेष नहीं बचा था।

इस प्रकार कहानी में चौधरी पीरबख्श के माध्यम से उच्च वर्ग की शोषण वादी प्रवृत्ति को बताया गया है।

१.२.३ चारित्रिक विशेषताएँ

कहानीकार कहानी की कथावस्तु को ध्यान में रखकर पात्रों को चित्रित करता है। ये पात्र कहानी में व्याप्त युगीन समस्याओं की और संकेत करते हुए कहानी को जिवंतता प्रदान करते है। इसीलिए पात्र-चरित्र का कहानी में एक विशेष स्थान होता है। कहानी आर्थिक विषमता के आधार पर है। कहानी में चौधरी पीरबख्स और पंजाबी खान इन दो किरदारों ने कहानी को शीर्ष स्थान पर पहुँचा दिया।

१) चौधरी पीरबख्श :

कहानी के केन्द्रीय पात्र चौधरी पीरबख्श है। चौधरी इलाही बख्स के पीरबख्श चौथी संतान है। चौधरी पीरबख्श ज्यादा पढ़े लिखे न होने के कारण एक तेल की कंपनी में मुशीगिरी की नौकरी करते है। अधिक पगार न होने के कारण वे अपने परिवार को लेकर एक सस्ते से मकान में रहते है। जितनी तेजी से परिवार की जरूरते बढ़ रही थी । उसकी आधी गति उनके पगार में नहीं हुई। पंद्रह बरस में केवल उनकी पगार बारह से अठराह रूपये ही होती है। अपने परिवार की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए वे बहुत मेहनत करते हैं। लेकिन असमर्थ है ।

घर की आबरू बचाये रखने के लिए दरवाजे पर हमेशा परदा लटकाये रहते है। क्योंकि उसी में ही सभी की भलाई है। घर की खराब अवस्था के कारण वे पंजाबी

खान से उधारी लेते है। पैसे समय पर न देने पर अपने परिवार की रक्षा के लिए उसके सामने मिन्नते करते है ताकि कुछ दिन और मिल जाये।

अंत में पंजाबी खान के द्वारा परदा खीचें जाने पर वे हतप्रभ हो जाते है। उनके अनुसार अब उनके लिए परदे का कोई महत्त्व नहीं हैं।

२) पंजाबी खान :

पंजाबी बबर अली खान कहानी के सांमतवादी प्रवृत्ति के परिचायक है। पंजाबी खान अपने स्थानीय तथा गैर-स्थानीय लोगों को पैसे देते है। बाबर अली खान का रोजगार ''सितवा के उस कच्चे मुहल्ले में अच्छा खासा चलता था।'' सभी तरह के मजदूर धोबी आदि सभी उससे पैसा लिया करते थे। पैसे समय पर न मिलने पर वह लोगों से जानवरों की तरह व्यवहार करता है। चार आना रूपया महिने पर चार रूपया कर्ज देता था।

पीरबख्श को पंजाबी खान से ही कर्ज मिलता है। जिसके बदले पंजाबी खान उसकी भरे समाज में बेइज्जती करता है।

इस प्रकार सदियों से चली आ रही शोषणवादी प्रवृत्ति को पंजाबी खान के माध्यम से बताया गया है।

देशकाल परिस्थिति और वातावरण :

देशकाल और वातावरण की दृष्टि से परदा कहानी में चित्रित चौधरी परिवार की आर्थिक दुर्दशा केवल उनकी ही नहीं है बल्कि समस्त मध्यम वर्गीय परिवार की है। आज सभी मध्यमवर्गीय परिवार में अभाव के कारण तनाव का माहोल बना रहता है। नये पुराने के बीच संघर्ष होता है, आपसी रंजिशे उत्पन्न होती है। पैसों के अभाव के कारण चौधरी का परिवार अलग-अलग स्थानों पर रहने चले जाते है, कहानी में पीरबख्श अपने परिवार के साथ गंदे से मुहल्ले में रहने के लिए बाध्य है। आर्थिक परिस्थिति खराब होने के घर के सामान बेचने पड़ते है। औरतो के शरीर पर नाम मात्र कपडे है। ऐसी दशा में दरवाजे पर लटका परदा ही पीरबख्श की आबरू बचाता है। ''बैठक न रहने पर भी घर की इज्जत का ख्याल था इसलिए परदा बोरी के टाट का नही, बढ़िया किस्म का रहता।'' इस प्रकार परदा की एक प्रतिक के रूप में समाज के सामने प्रस्तुत किया गया है, पूरी कहानी में हम देखते है कि किस प्रकार लेखक ने परदे के महत्व को शुरू से अंत तक बताया है।

परदा टूटने का डर चौधरी परिवार में सभी को है। पूरी घटनाओं में सभी को है। पूरी घटनाओं का यदि मूल्यांकन करें तो हम पाते है कि लेखक ने परदा कहानी में जिस वातावरण को बताया है वह कहानी में सबसे महत्त्वपूर्ण बन पड़ा है। पीरबख्श का गंदे मुहल्ले में रहना, वहाँ की गंदगी, बदबू आदि तरह की समस्याओं से कहानी के माध्यम से समाज का कड़वा सच सामने आता है।

वर्तमान के मध्यमवर्गीय समाज की मजबूरी तनाव, दर्द की जो अभिव्यक्ती आर्थिक दुर्दशा के कारण हुई है वह युगानुरूप है। आज मँहगाई आसमान छू रही है, परिवार में एक कमानेवाला और पूरे परिवार को पालना इसकी सच्ची तस्वीर कहानी में दी गई है।

१.२.५ कहानी का उद्देश्य

परदा कहानी में लेखक ने आर्थिक विषमता गरीबी अभाव से ग्रस्त जीवन जीने के लिए मजबुर लोगो का विश्लेषण है। पंजाबी खान जैसे शोषणवादी प्रवृत्ति वाले समाज के शोषक है, जो गरीबों को प्रताड़ित करते है। एक के बदले चार हिसाब लगाकर पूँजीवाद दिन-ब-दिन अमीर बनता जाता है। पीरबख्श जैसे लोग कर्ज चुकाते-चुकाते भिखारी बन जाते है। घर के सारे सामान बिक जाने पर भी ये उच्च वर्ग के लोगो को मानवता का भी ख्याल नही आता है।

पीरबख्श का पगार देश के विकास की गति से भी धीरे बढ़ता है। पंद्रह वर्ष में केवल पंद्रह रूपये से १८ रूपये ही बढ़ता है। कहानी के इस तरह के पूँजीपति लोग ही पीरबख्श जैसे शरीफ इंसान को दयनीय स्थिति में रहने के लिए मजबूर करता है।

श्रम के अनुसार एवज न मिलने पर गरीबों को पंजाबी खान जैसे शोषणवादी प्रवृत्तिवाले व्यक्ति का सहारा लेना पड़ता है। कर्ज समय पर न मिलने पर ऐसे लोग गरीबों की आबरू का ख्याल तक नहीं रखते हैं।

इस प्रकार लेखक का उद्देश्य गरीबो अभाव की जिन्दगी को दर्शाते हुए पूँजीपतियों और पंजाबी खान जैसे लोगों की शोषणवादी प्रवृत्ति के खिलाफ विद्रोह के व्यक्त किया है। अपने क्रांतिकारी विचारों से पाठकों के सामने समाज का कटु सत्य रखा है।

१.२.६ समीक्षात्मक प्रश्न :

१. परदा कहानी की कथावस्तु अपने शब्दों में लिखिए।

२. परदा कहानी का उद्देश्य स्पष्ट कीजिए।

३. चरित्र-चित्रण की दृष्टि से परदा कहानी का मूल्यांकन कीजिए।

४. परदा कहानी मध्यम वर्गीय परिवार की सच्ची तस्वीर प्रस्तुत करता है कैसे? स्पष्ट कीजिए।

५. कहानी के शीर्षक की सार्थकता सिद्ध कीजिए।

६. चौधरी परिवार का वर्णन अपने शब्दों में करीए।

१.२.७ लघुत्तरीय प्रश्न :

१. परदा कहानी का सारांश लिखीए।

२. पंजाबी खान किस वर्ग का प्रतिनिधित्व करता है ? स्पष्ट कीजिए।

३. परदा कहानी में परदे का महत्त्व बताइये।

४. परदा कहानी के पीरबख्श का चरित्र चित्रण कीजिए।

५. परदा कहानी में आर्थिक दशा का वर्णन कीजिए।

१.२.८ वस्तुनिष्ठ प्रश्न :

१. यशपाल की कौन-सी रचना पाठ्यक्रम में है?

२. चौधरी परिवार अपने पक्के मकान को क्या कहते थे?

३. पीरबख्श ने कितनी शिक्षा प्राप्त की थी?

४. फजल कुरबान कहाँ काम करते थे?

५. फजल कुरबान कौन-सी नौकरी करते थे?

६. चौधरी इलाही बख्श कहाँ काम करते थे?

७. चौधरी पीरबख्श कौन-सा कार्य करते थे?

८. पीरबख्श ने किससे उधारी ली थी?

९. गरीब का एक मात्र सहायक कौन है?

१०. पंजाबी खान का पूरा नाम क्या था?

१.२.९ संदर्भ सहित अवतरण :

१. ''जहाँ बाल-बच्चे और घर-बार होता है सौ किस्म की झंझटे होती ही है। कभी बच्चे को तकलीफ है, तो कभी जच्चा को। ऐसे वक्त में कर्ज की जरूरत कैसे न हो? घर-बार हो, तो कर्ज भी होगा ही।''

२. ''कपड़े की महँगाई के इस जमाने में घर की पाँचो औरतों के शरीर से कपड़े जीर्ण होकर यो गिर रहे थे, जैसे पेड़ अपनी छाल बदलते है। पर चौधरी साहब की आमदनी से दिन में एक दफें किसी तरह पेट भर सकने के लिए आटा के अलावा कपड़े की गुंजाइश कहाँ?''

३. मुहल्ले में चौधरी पीरबख्श की इज्जत थी। इज्जत का आधार था, घर के दरवाजे पर लटका परदा भीतर जो हो, परदा सलामत रहता।''

४. ''चौधरी साहब की जिंदगी में लड़कों के ब्याह और बाल-बच्चे भी है लेकिन खास तरक्की न हुई, वही तीस और चालीस रुपये महवार का दर्जा।

१.२.१० संदर्भ सहित व्याख्या (उदाहरण सहित) :

१. मुहल्लों में सफेदपोशी और इज्जत होने पर भी चोर के लिए घर में कुछ न था, शायद एक भी कपड़ा या बरतन ले जाने के लिए चोर को न मिलता, पर चोर तो चोर है।

संदर्भ :

प्रस्तुत अवतरण हमारी पाठ्य पुस्तक 'दस प्रतिनिधि कहानियाँ 'परदा' नामक शीर्षक से उद्धृत है। इसके लेखक यशपाल है। यशपाल जी की कहानियों में समाज की आशाओं आकांक्षाओं और विसंगतियों के साथ मुखरित हुआ है।

प्रसंग :

प्रस्तुत कहानी में निम्न मध्यमवर्गीय परिवार का चित्रण किया गया है। पीरबख्श अपने परिवार की जरूरतों को पूरा करने के लिए कठिन परिश्रम करता है बावजूद इसके उसे अपने घर का सामान गिरवी रखना पड़ता है। आमदनी कम और खर्च अधिक है। परिवार की जरूरते बढ़ती जा रही है लेकिन पीरबख्श की पगार नही। घर की जरूरतों को पूरा करने के लिए सारा सामान गिरवी रख देता है, यहाँ तक घर की औरतों के पास तन ढ़ँकने के लिए पूरे कपडे भी नही है। बारिश के कारण घर का दरवाजा भी टूट जाता है।

मकान मालिक दरवाजा लगाने के लिए तैयार नहीं होता है। मजबूरी में उसे टूँटे हुए दरवाजे को ही घर के कोने से टिकाना पडता है। हाँलाकि की घर में भुखे और बेबस लोगों के अलावा कुछ नहीं है फिर भी पीरबख्श को चोरी का डर बना है। इस प्रकार कहानी में निम्नमध्यम वर्गीय परिवार की पीड़ा को दर्शाया गया है।

H H H

इकाई २

२

डाची – उपेन्द्रनाथ अश्क

इकाई की रूपरेखा

२.० इकाई की रूप रेखा

२.१ उपेन्द्रनाथ ‘अश्क’ जीवन परिचय और कृतियाँ

२.२ कहानी की कथावस्तु

२.३ चारित्रिक विशेषताएँ

२.४ देशकाल, वातावरण और परिस्थिति

२.५ कहानी का उद्देश्य

२.६ संदर्भ सहित व्याख्या

२.७ लघुत्तरीय प्रश्न

२.८ टिप्पणियाँ

२.९ वस्तुनिष्ठ प्रश्न

२.१ उपेन्द्रनाथ अश्क और उनकी कृतियाँ

हिन्दी साहित्य में उपेन्द्रनाथ अश्क महान कहानीकार और उपन्यासकार के रूप में विख्यात है। उपेन्द्रनाथ अश्क का जन्म १४ दिसंबर १९१० को जालंधर में हुआ। इन्होने लाहोर से कानुन की शिक्षा प्राप्त की। बाद में स्कूल में अध्यापक हो गए। मध्यमवर्गीय परिवार में जन्म होने के कारण उन्होने अपने जीवन में कई संघर्ष का सामना किया। इसी बीच इन्होने कई लेखन कार्य किये।

अश्क जी ने आठ नाटक अनेक एकांकी, सात उपन्यास, दो सौ से अधिक कहानियाँ और अनेक संस्मरण लिखे। उर्दू में जुदाई की शाम का गीत नवरत्न आदि सप्ताह प्रकाशित है।

उपन्यासो में सितारों के खेल ‘‘गिरती दिवारे’’, ‘‘गर्म राख’’ आदि प्रसिद्ध है। दीप जलेगा इनकी बहु चर्चित कविता है।

२.२ कहानी की कथावस्तु

कहानी की शुरूवात मुसलमान जाट बाकर से होती है। जाट बाकर एक मजदूर है। नंदू चौधरी की डाची को देखकर जाट बाकर आकर्षित होता है। वे उसे खरीदना चाहता है। नंदू चौधरी उस सुंदर डाची का मालिक है। १५० रू में बाकर डाची को खरीद लेता है।

डाची खरीदने का कारण केवल एक है-वह है उसकी बेटी की इच्छा। बाकर अपनी बेटी से बहुत प्रेम करता है। क्योंकि बाकर की पत्नी ने आखरी समय रजिया को खुश रखने के लिए कहा था। तभी से बाकर ने दिन-रात बड़ी मेहनत कर रजिया को खुश रखने की ठान ली। बाकर जब भी काम पर से लौटता रजिया उसके टांगो से लिपट जाती। उसके प्रेम को देखकर बाकर भावुक हो जाता था। दिन-रात एक कर वह रजिया की इच्छाओं की पूर्ति में लगा रहता।

एक दिन रजिया मशीरमाल की सांडनी को देखती है। उसे देखकर उसे भी सांडनी पर बैठकर घूमने की इच्छा होती है। वह अपने पिता जी से डाची खरीदने की जिद्द करती है। उस वक्त बाकर उसे मना करता है, लेकिन मन ही मन दृढ़ निश्चय करता है कि वह रजिया को डाची खरीदकर देगा। कठिन परिश्रम करने के बाद वह रजिया के लिए १५० की डाची खरीदता है। तेजी से अपने घर की और बढ़ता है ताकि रजिया के सोने से पहले घर पहूँच जाये। वह कल्पना करने लगता है कि रजिया डाची को देखकर खूशी से झूम उठती है, और उसके गले लग जाती है। डाची पर बैठने पर रजिया किसी तरह की परेशान न हो इसिलिए गद्दा बनवाना चाहता था। वह बानक के घर जाता है गद्दा खरीदने के लिए लेकिन वह घर पर नही था। मंडी चला गया था। मंडी चला जाएगा तो उसे देरी हो जायेगी इसलिए वह मशीरमाल साहब के घर चला जाता है। यह सोचकर की उनके पास तो कई गद्दे पड़े होंगे, एक पुराना गद्दा उनसे ले लेगे।

बाकर उनके घर पहुँचता है। मशीरमाल उसकी डाची को देखकर उससे उसकी कीमत पुँछते है। बाकर को लगता है कि वह २०० रूपये बता दे किंतु वह १५० ही बताता है। डाची को देखकर मशीरमाल को लालच आता है और बाकर से उसकी इच्छा पुछे बिना १६५ रूपये कें उसकी डाची ले लेता है और उसके हाथ से डाची की रस्सी अपने नौकर के हाथ थमा देता है।

बाकर ठहरा मजदूर इंसान चाहकर भी कुछ बोल नही पाता है। उसके आँखो के सामने उसकी बेटी रजिया का चेहरा घूमने लगता है।

इस प्रकार कहानी के माध्यम से लेखक ने बताया कि गरीब इंसान की चाह अमीरों के सामने मायने नही रखती है। दिन-रात परिश्रम करने पर भी वह अपनी बेटी की इच्छा पूरी नही कर पाता है। इस तरह समाज में सांमतवादी प्रवृत्ति के प्रति लेखक ने अपनी चिंता व्यक्त की है। बाकर जैसे व्यक्तियों के प्रति अपनी सहानभूति प्रकट की है।

२.३ चारित्रिक विशेषताएँ

कथावस्तु की भाँति ही कहानी में पात्र योजना अथवा चरित्र अत्यंत महत्वपूर्ण होता है। यदि पात्र योजना सुनियोजित नही होगी तो कहानी की कथावस्तु निरस लगेगी।

कहानी में जाट बाकर मुख्य पात्र है। जाट बाकर 'काट'पी सिकंदर का मुसलमान है। जाट बाकर वह और उसकी बेटी है। बाकर की विधवा बहन भी उसी के साथ रहती है। बाकर की पत्नी की असमय मृत्यु हो जाती है। मृत्यु के समय उसकी पत्नी ५ वर्ष की बेटी को बाकर के हाथों सौपकर परलोक सिधार लेती है।

बाकर के जीवन में अब एक लक्ष्य है कि वह अपनी बेटी रजिया को खुश रखे। उसकी इच्छाओं की पूर्ति करे। उसके लिए वह दिन रात मेहनत करता है। ताकि रजिया को किसी भी तरह की तकलीफ न हो। रजिया मशीरमाल की साँडनी को देखती है। मशीरमाल अपनी बेटी के साथ साँडनी पर बैठकर उसके गाँव आता है। इसे देखकर रजिया के मन मे लालच आता है, और बाकर से साँडनी के लिए जिद्द करती है। बाकर उसे मना करता है, फिर भी मन ही मन उसकी इच्छा की पूर्ति के लिए प्रतिज्ञा लेता है। दिन-रात मेहनत कर बाकर १५० रू. इकट्ठा करता है। नंदू चौधरी से उसकी सुंदर डाची खरीद लेता है।

डाची को खरीदने पर वह घर जल्द से जल्द पहुँचकर अपनी बेटी के चेहरे पर मुस्कान देखना चाहता है। वह रास्ते में कल्पना करने लगता है कि डाची को देखकर रजिया बहुत खुश होती है। खुशी से कुदने लगती है। यह कल्पना कर ही बाकर मन ही मन मग्न होता है । उसे गद्दा खरीदने का ख्याल आता है और वह नानक के घर पहुँच जाता है, किंतु नानक मंडी गया होता है इसलिए उसे गद्दा नही मिल पाता।

गद्दे के लिए वह मशीरमाल के यहाँ जाता है। डाची को देखकर मशीरमाल की नियत खराब होती है। और उससे वह १६५ में बिना उसकी इच्छा जाने बिना डाची की रस्सी अपने नौकर के हाथ थमा देता है। बाकर चाहकर भी उसका विरोध नही कर पाता है। वह गरीब असहाय है इसलिए संकोच कर चुप बैठ जाता है। अपनी बेटी की इच्छा चाहकर भी पूरी नहीं कर पाता है।

कहानी में बाकर एक जिम्मेदार पिता है जो अपनी मेहनत और लगन से अपनी बेटी की परवरिश करता है। और उसकी सारी इच्छाओं को पूरा करने का प्रयास करता है।

२.४ देशकाल वातावरण और परिस्थिति

देशकाल और वातावरण कहानी का महत्वपूर्ण अंग है। कहानी 'कांट' पी सिकंदर मुसलमान बाकर की है। जो अपने मेहनत और लगन से अपने परिवार की जरूरतों को पूरी करता है। अपनी बेटी की सारी इच्छाओं को पूरी करने की वह प्रतिज्ञा लेता है। एक दिन उसकी बेटी रजिया को मशीरमाल की सांडनी अच्छी लगती है। उसे

भी डाची पर बैठकर घूमना था, इसलिए वह अपने पिता बाकर से डाची खरीदने की जिद्द करती है। पिता उस वक्त तो उसे मना कर देते है लेकिन मन ही मन डाची खरीदने की प्रतिज्ञा लेता है।

१५० रू में उसने चौधरी नंदू से उसकी डाची खरीद लेता है। घर जाते समय उसे डाची पर बैठने के लिए गद्दा खरीदना था। इसलिए वह नानक के घर जाता है, किंतु नानक मंडी गया होता है। मंडी जाना बाकर के लिए उस वक्त संभव न था। वह सोचता है कि मशीरमाल के पास पुराने गद्दे लेने उनके घर चला जाता है।

मशीरमाल बाकर की डाची को देखकर मोहित हो जाता है। उससे उसकी डाची १६५ रू में बिना उसकी इच्छा जाने बिना खरीद लेता है। डाची की रस्सी अपने नौकर के हाथों थमा देता है।

बाकर चाहकर भी मशीरमाल को कुछ नही कह पाता है।

इस प्रकार कहानी में बाकर के माध्यम से गरीबों की परिस्थितियों का यथापि चित्रण किया गया है।

२.५ कहानी का उद्देश्य

लेखक उपेन्द्रनाथ अश्क ने भारतीय समाज के यथार्थ को बड़े ही मनोवैज्ञानिक ढंग से प्रस्तुत करने का सफल प्रयास किया है। इस कहानी के पात्र बाकर ने अपनी पत्नी को दिये गए वचन तथा बेटी रजिया को खुशियाँ देने के लिए खुन-पसीना एक कर सभी साधन जुटाने का प्रयास किया। यही नहीं वह डाची खरीदने के लिए लगातार मेहनत कर पैसे इकट्ठा करता रहा कि बेटी रजिया की इच्छा को पूरी कर सके। लेकिन जब वह डाची खरीदकर अपनी बेटी को खुशियाँ देने के करीब पहुँचता है, तो मशीरमाल की बुरी दृष्टि का शिकार हो जाता है। कहानी का उद्देश्य एकदम साफ है कि समाज का कोई गरीब व्यक्ति बाकर की तरह मेहनत मजदूरी करके अपनों को प्रसन्न रखना चाहता जबकि मशीरमाल जैसे अमीर गरीबों की खुशियाँ नही देख सकते। वे अपनी अमीरी और पूँजी की शक्ती से बाकर जैसे गरीबों की डाची के रूप में उनकी इच्छाएँ और अभिलाषाओं पर कामयाब हो जाते है।

२.६ संदर्भ सहित व्याख्या

१. वह दिन रात काम करता था बल्कि अपनी मृत पत्नि की उस धरोहर को अपनी उस नन्ही सी गुडिया को, भाँति-भाँति की चीजे ला कर प्रसन्न रख सके।

संदर्भ :

प्रस्तुत अवतरण हमारी पाठ्य पुस्तक प्रतिनिधी दस कहानियाँ के 'डाची' कहानी से ली गई है, इसके लेखक उपेन्द्रनाथ अश्क है। उपेन्द्रनाथ अश्क मानवीय मूल्यों को लेकर चलनेवाले लेखक थे। उनके साहित्य में इसे देखा जा सकता है ।

प्रसंग :

प्रस्तुत अवतरण में बाकर अपनी बेटी रजिया जो कि बिन माँ की बेटी है। उसकी इच्छा को पुरा करना ही उसके जीवन का लक्ष्य बन चुका है। उसे खुश रखने के लिए अलग-अलग और तरह-तरह की चीजे लाता है।

व्याख्या :

प्रस्तुत अवतरण में लेखक ने बताया है कि एक पिता अपनी बेटी की इच्छाओ को पूरा करने के लिए कितनी मेहनत करता है। कहानी के मुख्य पात्र बाकर अपनी बेटी रजिया के लिए दिन-रात कडी मेहनत कर उसकी ख्वाहिशों को पूरा करता है।

रजिया की माँ आखिरी समय बाकर से भिगी आँखे लेकर कहती है कि मेरी बेटी का ख्याल रखना उसे कभी भी कष्ट ना देना । इसी वाक्य को बाकर अपने जहन में उतारता है, और उसी का अनुसरण करता है। ''जब भी कभी वह मंडी से आता, तो नन्ही-सी रजिया उसकी टाँगो से लिपट जाती और बड़ी-बड़ी आँखें उसके गर्द से अटे हुए चेहरे पर जमा कर पूछती 'अब्बा, मेरे लिए क्या लाए हो ?' उसका यह वाक्य कभी खाली न जाए इसलिए बाकर उसके लिए तरह-तरह की चीजे ला कर देता है।

इस प्रकार कहानी में एक पिता का अपनी बेटी के प्रति प्रेम स्नेह को बताया है।

संदर्भ संहित व्याख्या हेतु अन्य अवतरण :

---

१. ''वह काम अधिक करता हो, यह बात न थी, काम से उसने सदैव जी चुराया था । चुराता भी क्यों न, जब उसकी पत्नी उससे दुगुना काम करके उसके भार को बँटाने और उसे आराम पहुँचाने के लिए मौजूद थी।''

२. क्षण भर के लिए उस कठोर व्यक्ति का जी भर आया। यह सांडनी उसके यहाँ ही पैदा हुई और पली थी। आज पाल-पोस कर उसे दूसरे हाथ में सौपते हुए उसके मन की कुछ ऐसी दशा हुई, जो लड़की को ससुराल भेजते समय पिता की होती है।

३. बाकर की जेब में पड़े डेढ सौ के नोट जैसे बाहर उछल पड़ने के लिए व्यग्र हो उठे। तनिक जोश के साथ उसने कहा, तुम्हे इससे क्या कोई ले तुम्हे तो अपनी कीमत से गरज है, मोल बताओं?

२.७ दिर्घोत्तरी प्रश्न :

१. डाची कहानी शीर्षक की सार्थकता सिद्ध कीजिए।

२. डाची कहानी का उद्देश्य लिखिए।

३. बाकर के माध्यम से लेखक समाज को क्या संदेश देना चाहता है?

४. कहानी का सारांश लिखीए।

२.८ टिपणी :

१. रजिया का चरित्र-चित्रण।

२. बाकर की मनोव्यथा स्पष्ट कीजिए।

३. मशीरलाल का चरित्र-चित्रण कीजिए।

२.९ वस्तुनिष्ठ प्रश्न :

१. चौधरी नंदू ने डाची की कितनी कींमत तय की ?
उत्तर. १६० रू.

२. बाकर कितने रूपयों में डाची खरीदता है?
उत्तर. १५० रू.

३. डाची को बाकर के हाथों सौपते हुए नंदू चौधरी कैसा महसूस करता है ?
उत्तर. जो लडकी को ससुराल भेजते समय पिता की होती है।

४. रजिया किसकी बेटी है?
उत्तर. जाट बाकर

५. जाट बाकर की बेटी का क्या नाम है ?
उत्तर. रजिया

६. रजिया किस चीज के लिए जिद्द करती है ?
उत्तर. डाची के लिए

७. बाकर से उसकी डाची कौन खरीदता है ?
उत्तर. मशीरमाल साहब

८. मशीरमाल डाची के लिए बाकर को कितने रूपये देता है ?
उत्तर. १६५ रू.

९. मशीरमाल डाची खरीदने पर बाकर को कितने रूपये देता है ?
उत्तर. ६० रू.

H H H

इकाई २.१

२.१

भेड़िए – भुवनेश्वर

इकाई की रूपरेखा

२.१.१ इकाई की रूप रेखा

२.१.२ भेड़िए कहानी की कथावस्तु

२.१.३ चारित्रिक विशेषताएँ

२.१.४ कहानी का उद्देश्य

२.१.५ समीक्षात्मक प्रश्न

२.१.६ टिप्पणियाँ

२.१.७ संदर्भ सहित स्पष्टीकरण

२.१.१ भुवनेश्वर : जीवन परिचय और कृतियाँ

हिन्दी साहित्यकारों में भुवनेश्वर जी ने अपना विशेष स्थान बनाया है। उनका मूल नाम भुवनेश्वर प्रसाद श्रीवास्तव है। भुवनेश्वर जी का जन्म १९१० में शाहजाँपूर (उत्तर प्रदेश) में हुआ है। इनकी अनेक विधाएँ है–जैसे नाटक, कहानी, कविता, आलोचना इनका 'कारवाँ' एक नाटक संग्रह है। भुवनेश्वर साहित्य जगत का ऐसा नाम है, जिसने अपने छोटे से जीवन काल में साहित्य का सृजन किया। एकांकी कहानी कविता समीक्षा जैसी कई विधाओं में भुवनेश्वर ने साहित्य को नए तेवर वाली रचनाएँ दी। एक ऐसा साहित्यकार जिसने अपनी रचनाओं से आधुनिक संवेदनाओं की नई परिपाटी विकसित की। उनकी यह मान्यता उनकी रचनाओं में स्पष्टतया द्रष्टिगोचर होती है। इंसान को वस्तु में बदलते जाने की जो तस्वीर उन्होंने उकेरी, वो आज के समय में और भी अधिक प्रासंगिक हो जाती है। भुवनेश्वर की रचनाएँ आजादी एक, पत्र, एक रात, जीवन की झलक, डाकमुंशी माँ–बेटे इत्यादि ऐस अनेक नाटक भी लिखे है। एक साम्यहीन साम्यवादी इसका प्रसिद्ध नाटक है। एकाकी के भाव, प्रतिभा का विवाह आदि कई नाटक है।

२.१.२ कथावस्तु

भेड़िए कहानी में मानवीय प्रवृत्ति को बताया गया है। किस प्रकार मनुष्य अपने आप को बचाने के लिए दुसरे की जान की परवाह नहीं करता है।

कहानी में खारू अपने जीवन के बीते कुछ अंशो के बारे में लेखक को बता रहा है। खारू का पूरा नाम इफ्तखार था। लोगों ने उसे खारू पुकारना शुरू कर दिया

वह बताता है कि एक दिन खारू उसके पिता और तीन नटनियाँ १५-१५ साल की वे लोग ग्वालियर के आईन से पछाह की ओर जा रहे थे। रास्ते में उन्हे एक साथ २०० से अधिक भेड़िए नजर आते है। एक साथ इतने भेडियों का झुंड देखकर वे लोग सहम जाते है, और जिन गड्डों को लेकर जा रहे थे वे काफी भरा हुआ था जिसके कारण बैल तेजी से दौड़ नही पा रहे थे। पहले गड्डे को हलका किया गया ताकि वे लोग आगे बढ़ सके। इसके बावजूद भेडियाँ उनकी तरफ बढ़ते ही जा रहे थे। अपनी जान बचाने के लिए ग्वालियर से लाई हुई लड़कियों को एक-एक करके नीचे फेकने लगते है। फिरभी भेडियों से इनका पीछा नही छुटता है।

खारू के पिता के आग्रह करने पर दो बैलों में से एक बैल को छोड़ दिया जाता है ताकि भेडियों का झूंड बैलों की तरफ बढ़ जाये। किंतु थोडी ही देर में भेडिया उनकी ओर आने लगते है।

खारू के पिता ने जब देखा कि अब तो जान जाने ही वाली है तो उसने अपने बेटे को ढाढस बंधायॉ और कहाँ कि इस स्थिति में केवल एक ही व्यक्ति जिवित रह सकता है।

खारू के पिता अपने आप को बुढ़ा बताते हुए खारू को जिन्दा रहने की सलाह देते है। अपने हाथों में दो दो छूरियों ली और भेडियों के बीच कूद पड़ता है।

इस प्रकार कहानी में बंजारो के जीवन की दयनीय दशा को व्यक्त किया है। उनकी त्रासदी और विडंबनाओ को कहानी में बताया गया है। अपनी आर्थिक विपन्नता को संपन्नता में तबदील करने चले खारू और उसके पिताजी को जीवन की बहुत बड़ी किमत चुकानी पड़ती है।

२.१.३ चारित्रिक विशेषताएँ

कहानी में दो ही पात्र है। खारू और उसके पिताजी । हाँलाकि खारू के पिताजी का नाम लेखक नही बताया गया है। फिर भी कहानी में खारू के पिताजी के कारण कहानी में रोमांच बना रहता है। भेडियाँ कहानी के दोनों ही पात्र कहानी को जिवंतता प्रदान की।

खारू :

खारू कहानी के मुख्य पात्र है। कहानी के आरंभ में उसकी उम्र ७० के आस-पास बताई गई है। गरीबी और हॉलात ने उसे निर्दयी और साहसी बना दिया है। ग्वालियर से जाते समय उसका सामना भेड़ियों से होता है। उस लड़ाई में वह अपने साथ तीन नटनिया जिसे वह दूसरे शहर बेचने जाता है। उन्हे और अपने पिता को खो देता है।

उन सब के जाने के बाद खारू अकेले ही भेड़ियों का सामना कर आगे बढ़ जाता है। उस दिन ऐसा महसुस होता है कि जैसे उसका पुर्नजन्म होता है। मृत्यु से

जीतने पर उसके अंदर का भय खत्म हो चुका है। इस प्रकार खारू कहानी का मुख्य पात्र है।

खारू के पिताजी कहानी के गौण पात्र है। कहानी में खारू के पिता ने अपनी बहादुरी की मिशाल कायम की है। भेड़ियों, का सामना उन्होने मरते दम तक किया। भेड़ियों बीच कुदने पर ''थोड़ी देर में उसे चिल्लाते सुनता रहा-यह-यह ले! यह ले। भेड़िये की औलाद।'' मौत को समक्ष देखने पर भी वे डरते नही है। वे यह जानते थे कि आज के बाद वे अपने बेटे से नही मिलेंगे फिर भी अपने चेहरे पर शिकन या मायूसी आने नही देते है। और दोनों हाथों से खारू के गाल को चूमते है। और छूरा लेकर भेड़ियों के बीच कूद पडते है। इस प्रकार कहानी में अद्भूत बहादूरी का प्रमाण देते है।

देशकाल वातावरण और परिस्थिती :

प्रत्येक कहानी में देशकाल और परिस्थिती महत्त्वपूर्ण है। कहानी का मूल्यांकन करने पर पता चलता है कि आम जनता और बंजारो की परिस्थिती हमारे समाज में कैसी है ? यह केवल खारू और उसके पिताजी की कहानी नहीं है बल्कि सभी लोगों की है, जो मनुष्य को मनुष्य नहीं समझते है। ग्वालियर से लायी हुई तीनों लड़कियों को वो दोनों अपनी जान बचाने के लिए भेड़ियों के बीच ढकेल देते है।

इस प्रकार हमारे देश में असंख्य लोग है जो इस तरह जीवन जीते है। परिस्थितियों से हारकर खारू गरीबी भरी जिंदगी जीता है।

२.१.४ कहानी का उद्देश्य

लेखक भुवनेश्वर ने इस कहानी के माध्यम से दो बातों को स्पष्ट करना चाहा है। पहली बात यह कि अपनी क्षमता को समझे बिना यदि हम बहुत बड़ा बनने की अभिलाषा लिए काम करते है, तो ऐसी समस्याएँ सामने आती है कि हम न तो अपनी पहले की स्थिति में आ सकते है और न ही अपने उद्देश्य तक पहुँच पाते है।

इस कहानी का दूसरा मुख्य उद्देश्य यह है कि अपनी समस्याओं को बहुत बड़ी समझकर भयभीत नही होना चाहिए। इसके बजाय पूरी शक्ति के साथ उसका सामना करना चाहिए। यदि हम समस्याओं के सामने समर्पित होते रहेंगे तो धीरे-धीरे समस्याएँ हमे निगल जाऐंगी।

भेड़ियों का सामना करने के बजाए पहले लड़कियों को फिर अपने बैलो को उनके सामने फेंकना उचित नही कहा जा सकता। वर्तमान समाज में मनुष्य के जीवन के सामने कई बार ऐसी समस्याएँ आती है जिन्हे हम भेड़ियों का झुंड समझ बैठते है। आवश्यकता है उससे पूरी शक्ति के साथ लड़ने की, नही तो हम भेड़ियों के शिकार होते रहेंगे।

२.१.५ समीक्षात्मक प्रश्न

१. भेड़िए कहानी का सारांश अपने शब्दों में लिखिए।

२. भेड़िए कहानी का उद्देश्य लिखिए।

३. भेड़िए कहानी में चित्रित समस्याओं पर प्रकाश डालिए।

४. भेड़िए कहानी के माध्यम से लेखक क्या कहना चाहते है।

२.१.६ लघु प्रश्न (टिप्पणियाँ)

१. खारू का चरित्र-चित्रण कीजिए।

२. खारू के पिताजी के बहादुरी की व्याख्या कीजिए।

३. भेड़िए कहानी की समीक्षा लिखिए।

२.१.७ वस्तुनिष्ठ प्रश्न

१. खारू कितनी लड़कियों को पछाह लिये जा रहे थे?

२. भेड़िए कहानी के खीरू और उसके पिताजी तीन लड़कियों को कहाँ लिए जा रहे थे?

३. भेड़िए कहानी में चित्रित नटनियों की कितनी उम्र थी?

४. भेड़िए कहानी में खीरू कितने वर्ष का है ?

५. भेड़िए कहानी में खारू को किसके जूते पहनने के लिए मना करता है?

२.१.८ संदर्भ सहित स्पष्टीकरण

१. ''इन दोनों में बांदी भारी थी और कुछ सोचकर काँपते हाथों वह अपनी चाँदी की नथनी उतारने लगी थी और मैने शायद बताया नहीं, मुझे वह कुछ अच्छी भी लगती थी।''

२. 'रूको' उसने कहा - 'मैं नए जुते पहने हूँ, मैं इन्हे दस साल पहनता, पर देखो तुम इन्हे मत पहनना, मरे हुए आदमियों के जूते नही पहने जाते, तुम इन्हे बेच देना'।

३. बैल पागल होकर भाग रहे थे, हवा में उनके मुँह का फेन उडकर हमारे मुँहों पर मेह की तरह गिरता था, और वे रंभा रहे थे जैसे बंजारिने ब्यानेवाली भैसों की नकले करती हैं।

संदर्भ सहित स्पष्टीकरण (उदाहरण सहित) :

१. 'तू मेरा असली बेटा है। मेरे बाप ने कहा और मेरे दोनों गाल चूम लिये। उसने अपने दोनों हाथों में बड़ी-बड़ी छूरियाँ ले ली और गले में मजबूती से कपडा लपेट लिया।

संदर्भ :

प्रस्तुत अवतरण हमारी पाठ्य पुस्तक दस प्रतिनिधि कहानियाँ 'भेड़िए' नामक शीर्षक से उद्धृत है। इसके लेखक भुवनेश्वर है। भुवनेश्वर जी ने कई कहानियाँ नाटक आदि लिखे है। इनके साहित्य मे बदलते मानवीय प्रवृत्ति का चित्रण किया है।

प्रसंग :

उपर्युक्त अवतरण में खारू और उसके पिताजी की बहादूरी को बताया गया है। खारू का पिता बूढ़े होने पर भी खारू से ज्यादा तेज और साहसी है।

संदर्भ :

उपयुक्त अवतरण में लेखक ने खारू और उसके पिता के माध्यम से समाज के बदलते मूल्यों को बताया है। खारू और उसके पिताजी तीन नटनियों को लेकर एक स्थल से दूसरे स्थल जा रहे थे। तभी रास्ते में उनका सामना भेड़ियों से होता है। अपनी जान बचाने के लिए एक-एक कर नटनियों को भेड़ियों के आगे फेंक देते हैं। और अपने बैलों को भी फिर भी, वे भेड़ियो के आगे टिक नही पाते है। बाप और बेटे में से किसी को तो बचना चाहिए इस उद्देश्य से खारू का पिता अपने बेटे को आश्वासन देकर तैयारी के साथ भेड़ियों के सामने कूद पड़ता है। इस प्रकार कहानी में लेखक ने स्वार्थ प्रवृत्ति को दिखाया है।

H H H

इकाई ३

३

कर्मनाशा की हार – शिवप्रसाद सिंह

BH$mB H$sê$na I m

3.2 {edàg‌mX gh … OrdZ n[aM¶ Am H${V¶m

3.3 H$‘Zm‌e‌m H$hmZr H$s H$WmdñV

3.4 Mm[a{ÌH$ {defVmE

3.5 XeH$mb dmVmdaU n[apñW{V

3.6 H$hmZr H$m CXXí¶

3.7 gX^g{hV ì¶m»¶m H$ {bE ‘hÎdnU AdVaU

3.8 g‘rjmË‘H$ àíZ

3.9 bKÎmar¶ àíZ

3.10 dñV{Zð àíZ

३.२ परिचय ओर कृतियाँ

हिन्दी साहित्य जगत में शिवप्रसाद सिंह का महत्त्वपूर्ण स्थान है । शिवप्रसाद जी का जन्म १९ अगस्त १९२८ बनारस के जबलपुर गाँव में जमींदार परिवार में हुआ था। बनारस हिन्दु विश्वविद्यालय से अपनी शिक्षा पूर्ण की। घर में संपन्नता का वातावरण होने के बावजूद जीवन की सच्चाइयों या अभाव इन्होंने अनदेखा नही किया। शिवप्रसाद जी की दादी ने जीवन के उच्च मूल्यों की शिक्षा इन्हें दी थी? यही कारण रहा कि वे अपनी दादी के निकट थे। बचपन से दिये जा रहे विचार, मूल्य, आदर्श आदि सभी उनके साहित्य में प्राप्त होते है।

साहित्य की विधाओं पर अनेक कार्य किये। उपन्यास, कहानी, निबंध तथा आलोचना आदि विधाओं में पुस्तके प्रकाशित है। अलग-अलग वैतरणी, गली आगे मुडती है, और निला चांद आदि इनके प्रमुख उपन्यास है।

मुर्दा सराय कहानी ने साहित्य जगत में एक अलग तरह के विषय को जन्म दिया। कहानी अत्याधिक लोकप्रिय हुई। इनकी कहानियों में प्रमुख है। आर-पार की माला, कर्मनाशा की हार, इन्हे भी इंतजार है। आदि कहानियाँ है।

निबंधो में कस्तुरी मृग शिखरो के सेतु आदि है। घाटियों गुँजती हैं, इनका प्रसिध्द नाटक है।

शिवप्रसाद सिंह ने अलग-अलग मुद्दों पर अपने साहित्य के माध्यम से अपने विचारों को अभिव्यक्त किया। भले वह कर्मनाशा की हार हो जिसमें अंधविश्वास के प्रति समाज को जागृत किया। अलग-अलग वैतरणी उपन्यास में गाँव की दशा और भ्रष्ट राजनीति का चित्रण किया है।

साहित्य समाज का दर्पण होता है। इस कथन का इन्होंने अनुसरण किया है और अपने साहित्य के माध्यम से समाज को दिशा निर्देश किया।

३.३ कर्मनाशा कहानी की कथावस्तु :

कहानी के आरंभ में कर्मनाशा नदी का विवरण दिया गया है। कहानी एक गाँव की है जहाँ कर्मनाशा नदी का पानी नही पहुँचता था। क्योंकि वह एक उँचे डीह पर स्थित था। बाढ को देखकर वे लोग इकट्ठा होकर सावन के गीत-कजली गाते बजाते थे। एक दिन ऐसा समय आता है कि कर्मनाशा के बाढ़ का पानी उनके गाँव तक पहुँच जाता है। बाढ़ में कई लोगों की मृत्यु हो जाती है केवल मनुष्य ही नही जानवर भी बाढ़ में बह जाते हैं।

हालात ऐसे बन गये थे कि लगातार बाढ़ का प्रकोप बढ़ता जा रहा था। गाँव वालों का मानना था की अवश्य गाँव में कुछ गलत हो रहा है। इसलिए नदी अपना क्रोध दिखा रही है। गाँव वाले बाढ़ का कारण विधवा फूलमती को मानते है। उनका मानना था कि विधवा होने पर भी फूलमती एक बच्चे की माँ बनती है। इस कुकर्म के कारण गाँव में प्रलय आ रहा है।

भैरो पांडे कुलदीप के बड़े भाई है। 'उन्होंने कुलदीप को बचपन से पाला पोशा था। भैरो पांडे दिन-भर बरामदे में बैठकर रूई से बिनोले निकालते, जजमानी चलाते, पत्रा देख देते सत्यनारायण की कथा कह देने इससे जो कुछ आमदनी हो जाती थी। उसी से वे कुलदीप की पढाई और घर का खर्च देखते। कुलदीप और फुलमती के संबंधों के बारे में वे जानते थे। कई बार कुलदीप को आगाह भी किया था। परंतु कुलदीप नहीं माना। और जिस बात का डर भैरो पांडे को था वही घटना घटती है।

एक दिन भैरो पांडे कुलदीप को गुस्से में मार देते हैं उसे बहुत सुनाते है। जोश में आकर वह घर से चला जाता है। पुरे दिन भैरो पांडे उसे खोजते हैं, फिर भी कुलदीप नहीं मिलता है। समझ जाते है कि वह उन्हें छोड़कर चला गया। यह खबर सुनने पर फूलमती रोने लगती है, उसके स्वर में दर्द दिखाई पड़ता है- ''मोहे जोगिनी बनाके कहां गइले रे जोगिया''। यह वाक्य सुनकर पांडे जी भी अवाक् रह जाते है।

पाँच महिने बीत गये कुलदीप नहीं लौटता। अभी घाव पूरी तरह से भरा नहीं तब से फूलमती की बेटी का जन्म होता है, गाँव वालो का मानना है कि इस तरह के कुकर्म के कारण ही बाढ़ का प्रकोप बढ रहा है। जब तक किसी की बलि नही चढ़ेगी तब तक कर्मनाशा शांत नही होगा। गाँव वालो के मतानुसार जिसने यह पाप

किया है वही यह भोगेगा। सभी फूलमती और उसके दूध मुँहे बच्चे को नदी में फेकने के लिए तैयार होते है। इस तरह का दृश्य देखकर गाँव के कुछ लोगों को आश्चर्य भी होता है और बुरा भी लगता है, लेकिन गाँव के मुखिया के सामने कौन बोले।

मुखिया भैरो पांडे से उनकी राय पुछते हैं। भैरो पांडे वीभत्स सन्नाटे को तोड़ते हुए आगे बढ़ते हैं और उस बच्चे को फूलमती से छीनकर मुखिया से कहते है कि ''कर्म नाशा की बाढ़ दुध मुँहे बच्चे और एक अबला की बलि देने से नहीं रुकेगी, उसके लिए तुम्हे पसीना बहाकर बांधो को ठीक करना होगा।''

इस प्रकार कहानी में भैरो पांडे ने बढ़ते अंधविश्वास को रोकने का प्रयास किया। साथ ही समाज को इस समस्या से लड़ने के लिए प्रेरित किया।

३.४ चारित्रिक विशेषताएँ

प्रत्येक साहित्यकार अपने विचारों और सिद्धांतो के अनुरूप अपने साहित्य में पात्रों की सृष्टि करता है। शिवप्रसाद सिंह ने की ''कर्मनाशा की हार'' कहानी के पात्रो के कारण कहानी की घटनाएँ प्रत्यक्ष रुप से आँखों के सामने दिखाई पड़ती है।

कहानी में तीन ही पात्र ऐसे है जो कहानी शुरु से लेकर अंत तक रोमांच बनाये रखते है। कहानी के केन्द्र पात्र भैरो नाथ पांडे है जो कुलदीप के बड़े भाई है। भैरोनाथ को अपने पिता से संपत्ति के रूप में कर्ज मिला, काम-धाम के लिए दुध मुँहे भाई की देखरेख रहने के लिए बखरी। जो कि बाढ़ के कारण अब कमजोर हो गई है, भैरोनाथ कुलदीप को अपने बच्चे की तरह पाल-पोश कर बड़ा करते है। उसकी पढ़ाई ओर खर्च चलाने के लिए सत्यनारायण की कथा वाचते है पत्रा पढ़ते है। इस तरह जो भी आमदनी होती उसी से कुलदीप की पढ़ाई करवाते है।

कुलदीप और फूलमती के संबंधों के बारे में जानने के बाद वे कुलदीप को प्रेम से डॉट से सभी तरह समझाते है । लेकिन वह नहीं समझता है ।

भैरोनाथ के द्वारा फटकार सुनने पर कुलदीप घर छोड़कर चला जाता है। कुलदीप के जाने के बाद भैरोनाथ अकेले पड़ जाते है। उसके जाने का उन्हे अतिशय दुःख होता है। पाँच महिने हो जाते है किंतु कुलदीप नहीं आता है।

कहानी में भैरोनाथ ऐसे पात्र है, जो अंधविश्वास को बढ़ावा नही देते है। उनका मानना है कि समस्या का समाधान ढूँढना चाहिए। ना कि अंधविश्वास को बढावा दे। गाँव वाले जब फूलमति को और उसके बेटे को नदी में फेकने का फैसला लेते हैं तब फूलमती और उसके बच्चे को बचाने के लिए वे गाँववालों के विरुध्द खड़े हो जाते है वे कहते है कि ''मुखिया जी मैं आपके समाज को कर्मनाशा से कम नहीं समझता किंतु मै एक-एक के पाप गिनाने लगूं तो यहाँ खडे सारे लोगों को परिवार समेत कर्मनाशा के पेट में जाना पडेगा।''

इस प्रकार भैरो पांडे एक जिम्मेदार नागरिक की तरह अपने कर्तव्य को पूरा करते है। साथ ही इंसानियत के नाम पर मिसाल कायम करते है। अंधविश्वास के नाम पर हो रहे अत्याचार को रोकते है।

कहानी में फूलमती नारी पात्र है, जो कि घटनाएँ उसी के इर्द-गिर्द घूमती रहती है। पिता की मृत्यु फिर पति की मृत्यु घटनाओं से फुलमति अबला नारी का जीवन जीने के लिए विवश है। कुलदीप से उसे प्रेम होता है। लेकिन जब कुलदीप भी बड़े भाई के द्वारा फटकार सुनने पर फुलमति को छोड़कर चला जाता है। फुलमति पुनः अकेली पड़ जाती है। कुलदीप के बच्चे की माँ बनने पर गाँव वाले उसके उसे कुकर्म का नाम देते है। और उसे गाँव में प्रलय का कारण भी उसी को मानते है। फलस्वरुप गाँववाले उसे और बाद में उसके बच्चे को पानी में फेकने के लिए तैयार होते है, उस वक्त भी वह अपनी नीरिह आँखो से गाँव वालो से मदद की उम्मीद करती है लेकिन आगे कोई नहीं आता है। इस स्थिति में भी वह असमर्थ है अपने आप को और बच्चे को बचाने में भैरोनाथ पांडे उसकी और उसके बेटे की रक्षा करते है।

इस प्रकार फूलमति को एक अबला के रूप में प्रस्तुत किया है।

३.५ देशकाल वातावरण परिस्थिति

कर्मनाशा की हार कहानी में देशकाल और परिस्थितियों का यथार्थ चित्रण किया गया है। कहानी में सामाजिक समस्याओं का यदि मूल्यांकन किया जाये तो बात स्पष्ट हो जाती है कि तत्कालीन समाज में अंधविश्वास लोगों में कितना फैला हुआ था। गाँव के मुखिया और धनेसरा चाची जैसे लोग अपने स्वार्थ और झूठी शान के लिए असहाय लोगो पर अत्याचार करते है। यहाँ तक कि अपनी स्वार्थपूर्ति के लिए किसी की जान भी चली जाए तो इन्हे परवाह नहीं रहती।

कहानी में कर्मनाशा नदी का चित्रण किया गया है, बाढ़ का पानी लगातार गाँव में बढ़ता जाता है। बाढ़ के प्रकोप से बचने के लिए गाँव वाले असहाय लोगों की बलि चढ़ाते है। उसे पापी घोषित कर प्रकोप का कारण उसपर ढकेल देते है। वे लोग शरीफ बने रहे। कहानी के पात्रों के माध्यम से देशकाल और वातावरण की दृष्टि से कहानी की घटनाओं में रोचकता उत्पन्न होती है। कहानी की कथावस्तु पुरीतरह से देशकाल और वातावरण के अनुरूप है। जिसके कारण कही भी इसमे असंगति नहीं जान पड़ती।

३.६ कहानी का उद्देश्य

प्रत्येक कहानीकार की कहानी के पीछे कोई न कोई उद्देश्य होता है। अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए कहानी की कथावस्तु और पात्रो की ऐसी संरचना करता है जो उसके उद्देश्य की पूर्ति कर सके।

'कर्मनाशा की हार' कहानी का उद्‌देश्य है, समाज से अंधविश्वास खत्म करना। मनुष्य अपने स्वार्थ की पूर्ति के लिए किस प्रकार दुसरों की बलि देना चाहता है। इस बात की ओर लोगों का ध्यान आकृष्ट करना। भैरो पांड़े अपनी जान की परवाह किये बिना गाँववालों के सामने फूलमती पर किये जा रहे अत्याचारों को रोकता है। उसका विद्रोह करता है। यह एक मानवीय संवेदना का मिसाल कायम करती है। भैरो पांड़े के माध्यम से लेखक ने समाज के प्रति सकारात्मक दृष्टि रखे ऐसा संदेश दिया है।

समस्याओ के नाम पर बढ़ते अत्याचार को रोके उन समस्याओं का समाधान ढूढ़े ना कि अंधविश्वास को बढ़ावा दे।

इस प्रकार कहानी में लेखक ने पात्रों के माध्यम समाज को नई दृष्टिकोण अपनाने का संदेश दिया है। समाज का यथार्थ चित्रण उपन्यास में किया गया है।

व्याख्या के लिए महत्त्वपूर्ण अवतरण :

१. परलय न होगी, तब क्या बरक्कत होगी? हे भगवान जिस गाँव में ऐसा पाप करम होगा वह बहेगा नही, तब क्या बचेगा?

संदर्भः

प्रस्तुत अवतरण हमारी पाठ्‌य पुस्तक प्रतिनिधि दस कहानियों के कर्मनाशा नामक शीर्षक से उद्‌धृत है। इसके लेखक शिवप्रसाद सिंह है। शिवप्रसाद सिंह क्रांतिकारी विचारों के साहित्यकार है। इनके साहित्य में सामाजिक, आर्थिक तथा राजनीतिक परिस्थितियाँ से संबंधित समस्याओ का चित्रण मिलता है।

प्रसंगः प्रस्तुत अवतरण में कर्मनाशा नदी के बाढ़ का पानी गाँव तक फैल गया है जिसके कारण कई लोगों की मृत्यु हो जाती है। विधवा फूलमती ने एक बेटी को जन्म दिया है। उसी के कुकर्म के कारण गाँव में प्रलय आया। कहानी में अंधविश्वास को बताया है।

व्याख्याःप्रस्तुत कहानी में लेखक ने समाज में अंधविश्वास के बढ़ते प्रभाव को बताया है। कर्मनाशा नदी का पानी गाँव तक पहुँच जाता है। जिसकी वजह से जानवरों के साथ इंसान की भी मृत्यु हो रही थी। लगातार बाढ़ के कारण गाँववाले त्रस्त हो चुके थे। अशिक्षित होने के कारण गाँव वाले पूजा पाठ, बलि आदि बातों पर विश्वास करते है। प्रलय का कारण बाँध का न होना इसे न देकर विधवा फूलमती को देते है। क्योकि विधवा होने पर उसने एक बेटी को जन्म दिया। समाज के अनुसार यह पाप है। और इस कुकर्म के कारण गाँव वालों को प्रलय रूपी सजा भुगतनी पड़ रही है।

इस प्रकार प्रस्तुत अवतरण के माध्यम से लेखक ने खोखले सामाजिक नियमों रुढियों एवं गलत परंपराओं के प्रति अपना विद्रोह दर्शाते है।

संदर्भ सहित व्याख्या के लिए अन्य अवतरण

१. यह सब-कुछ मर-मर कर किया था इसी दिन को पांडे की आंखो में व्यास छा गयी। लड़के ने उन्हे किसी ओर का नही रखा।

२. एक बाढ़ बीती बरस बीता। पिछले घाव सूखे न थे कि भादो के दिनों में फिर पानी उमड़ा। बादलो की छांव में सोया गाँव भोर की किरण देखकर उठा तो सारा सियान वक्त की तरह लाल पानी से घिरा था।

३. 'सारे गाँव ने फैसला कर दिया एक के पाप के लिए सारे गाँव को मौत के मुँह नहीं झोक सकते। जिसने पाप किया है उनका दंड भी वही भोगे।'

३.८ समीक्षात्मक प्रश्न

१. 'कर्मनाशा की हार' कहानी की कथावस्तु लिखिए।

२. 'कर्मनाशा की हार' कहानी के पात्रों का चरित्र चित्रण कीजिए।

३. 'कर्मनाशा की हार' कहानी में लेखक ने किन समस्याओं की और हमारा ध्यान आकर्षित किया है।

३.९ लघुत्तरीय प्रश्न

१. भैरो पांडे का चरित्र चित्रण कीजिए।

२. फूलमती का चरित्र चित्रण कीजिए।

३. कहानी में अंधविश्वास को किस प्रकार बताया गया है ? स्पष्ट कीजिए।

४. कुलदीप और भैरो पांडे का संबंध।

टिप्पणियाँ लिखिए :

१. भैरो पांडे का व्यवहार कुलदीप के प्रति।

२. कुलदीप और फूलमती का संबंध।

३. कहानी में चित्रित अंधविश्वास।

४. कहानी में मुखिया जी का चित्रण।

३.१० वस्तुनिष्ठ प्रश्न

१. किसका पानी छू लेने पर व्यक्ति नहीं बच सकता?

उत्तर. कर्मनाशा नदी का पानी

२. कुलदीप के बड़े भाई का क्या नाम था?

उत्तर. भैरो पांडे

३. कुलदीप और भैरोपांडे के बीच किस प्रकार का संबंध था।
उत्तर. भाई का रिश्ता

४. फूलमती किसकी बेटी थी?
उत्तर. टीमल मल्लाह

५. कर्मनाशा की बाढ़ कैसे रुक सकती है?
उत्तर. बांधो को ठीक करने से

६. 'कर्मनाशा की हार' कहानी के रचयिता का नाम लिखिए।
उत्तर. शिवप्रसाद सिंह

७. पिता से सम्पत्ति के रूप में भैरो पांडे को क्या मिलता है।
उत्तर. पिता का कर्ज

८. बाढ़ की भेंट कौन चढ़ा?
उत्तर. एक अंधी लड़की एक अपाहिज बुढ़िया।

H H H

इकाई ३.१

३.१

काला शुक्रवार – सुधा अरोडा

इकाई की रूपरेखा

३.१.१ इकाई की रूपरेखा

३.१.२ इकाई की कथावस्तु

३.१.३ चारित्रिक विशेषताएँ

३.१.४ कहानी का उद्‌देश्य

३.१.५ संदर्भ सहित व्याख्या

३.१.६ समीक्षात्मक प्रश्न

३.१.७ टिप्पणी

३.१.८ वस्तुनिष्ठ प्रश्न

३.१.१ सुधा अरोडा और उनकी कृतियाँ

वर्तमान समय में सुधा अरोडा ने साहित्य जगत में अपने लेखनी के माध्यम से एक अलग पहचान बनाई। स्त्री विमर्श से संबंधित उनकी कई पुस्तके चर्चा में है। सुधा अरोडा का जन्म लाहोर (पाकिस्तान) में सन १९४८ में हुआ। उनकी उच्च शिक्षा कलकत्ता विश्वविद्यालय से हुई। इसी विश्वविद्यालय के दो कॉलेजो में उन्होने सन्‌ १९६९ से १९७१ तक अध्यापन कार्य किया।

सुधा अरोडा ने साहित्य की अनेक विधाओं में पुस्तके प्रकाशित की है। उनकी कई कहानियाँ भारतीय भाषा के अलावा कई विदेशी भाषाओं में अनुवादित है, उन्होने भारतीय महिलाओं, कलाकारों के आत्मकथ्यों के दो संकलन ''दहलीज' को लाँघते हुए'' तथा ''पंखो की उड़ान'' तैयार किया है। पत्र-पत्रिकाओं में भी उनकी सक्रियता बनी हुई है। ''जनसत्ता'' में महिलाओं से संबंधित मुद्‌दे पर उनका साप्ताहिक स्तंभ 'वामा' बहुचर्चित रहा है।

महिलाओं पर केन्द्रित 'औरत की दुनिया बनाम दुनिया की औरत' लेखों का संग्रह शीघ्र प्रकाशित है। इनके साहित्य की लोकप्रियता के कारण कई सम्मान प्राप्त हुए ''उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान'' ''भारत निर्माण'' ''वीमेन्स अधीवर अवॉर्ड'', ''महाराष्ट्र हिंदी साहित्य अकादमी'' इत्यादि अवॉर्ड प्राप्त हुए है।

३.१.२ कहानी की कथावस्तु

काला शुक्रवार कहानी में ६ दिसम्बर, १९९२ के दिन शुरू हुए हिन्दु मुस्लिम दंगें का मार्मिक चित्रण किया गया है।

कहानी की शुरूवात मुंबई की भागदौड़ भरी जिंदगी से होती है। लेखिका रोज के समयानुसार अपनी दिनचर्या का कार्य करती है। उस दिन लेखिका को कई ढेर सारी जगह जाना होता है। लेखिका का ड्रायवर मिराज उस दिन बहुत दिनों बाद आता है। उसे वह पहचान नहीं पाती है। क्योकि उसने पहले की तरह दाढ़ी नही रखी थी। इस कारण उसका चेहरा जल्द पहचान में नही आता। लेखिका उससे उसकी इस परिवर्तन का कारण पुछती है। वह उसे बताता है कि इस हुलिये का कारण दंगा है। क्योकि दंगाई हुलिया देखकर लोगों को मार रहे थे। इसलिए उसे अपना हुलिया बदलना पड़ता है। उसी दंगे मे बम के धमाको के कारण मीराज के बेटे की आवाज चली जाती है। कुछ हफ्ते बीतने पर इलाज करने के बाद उसका बेटा थोडा-थोडा बोलने की कोशिश करता है।

लेखिका मीराज को उन जगहों पर चलने के लिए कहती है जिसकी उसने लिस्ट बनाई थी। थोड़ी ही देर बाद मीराज उसे कहता है कि आज उसे थोड़ा जल्दी जाना है क्योकि रोजे चल रहे है।

लेखिका रास्तों में देखती है कि बडे-बडे शॉप्स पर काले अक्षरों से लिखा था-वी पुट इंटीग्रेटेड फाइबर्स टुगेदर' ''पिछले तीन महीनों में बम्बई में तीन बार भड़के हुए दंगे सबसे प्रासंगिक विषय था जिसका इस्तेमाल अमूल से लेकर रेमंड्स तक हर ब्रांड औद्योगिक प्रतिष्ठान अपने-अपने व्यवसाय के विज्ञापनों और स्लोगनों में कर रहा था''।

लेखिका यह सोचती ही है कि अचानक से धमाका होता है। वह कुछ समझे इसके पहले लोग यहाँ-वहाँ भागने लगते है। लोगों को जख्मी हालत में देखकर वह सोचती है कि उनको अस्पताल पहुँचाना चाहिए। मीराज उनको वहाँ से चलने के लिए कहता है। रास्ते भर लेखिका अपने आप को कोसती रही कि उसने जरूरत मंदो की मदत नही की और वहाँ से निकल गई। वहाँ से वे दूसरी और क्रॉफेड की और चल पड़ते है। उस तरफ के सारे रास्ते बंद कर दिये गये थे। इसलिए व वहाँ नहीं जा पाते है।

वह मीराज से पासपोर्ट ऑफिस चलने के लिए कहती है। रास्ते में काफी ट्राफिक हो गई थी। तभी एक व्यक्ति अपनी कार का शीशा नीचे कर कहता है कि सरकार निकम्मी हो गई है। ३ बार दंगे हो चुके है। नेता अपनी रोटियाँ सेंक रहे है। आम जनता इसमे पीसी जा रही है। मिराज उसके गुस्से को महसूस करता है। वे गाडी लेकर ट्राफिक से थोड़े ही आगे बढ़ते है। कि फिर एक धमाका उनकी कार के सामने होता है।

सब जगह दंगो के कारण हलचल मच गई थी। सभी डरे सहमे-से लग रहे थे। लोग अपने घर जल्द-से-जल्द से पहुँचने के लिए उतावले थे। लेखिका के आँखों के सामने ही चलते-फिरते इन्सान मांस का लोथड़ा बनकर हवा में तैर रहे थे। तीन मकानों के छज्जे टूटकर गिर चुके थे और सड़क का वह हिस्सा खँडहर में तब्दील हो चुका था। लोग सड़कों पर

बदहवास भाग रहे थे। लेखिका मिराज को वहाँ से चलने के लिए कहती है। इतना भयावह दृश्य लेखिका ने पहले कभी न देखा था। दुकानों के शटर धड़ाधड़ गिरने लगते है। फेरीवाले अपने गिरे हुए सामान को बटोर रहे है।

रास्ते भर जली हुई गाँडिया टुटे हुए शिशे को वह देखती है। तभी एक नौजवान को वहाँ देखती है कि वह थका हुआ है और बडे ही दादागिरी से थम्सअप के बोतले निकालकर पी रहा है। लेखिका को लगता है कि यह कोई दंगाई है, जो तोड़-फोड़ करने के बाद थक गया है। और एक जख्मी व्यक्ति उसे दिखाई पड़ता है। वह सोचने लगती है कि ''भीड के जुनून का शिकार वह हिन्दु था या मुस्लिम नहीं मालुम सिर्फ दाढ़ी रख लेने से कोई मुसलमान नही हो जाता। सफेद पोशाक पर बहता हुआ उसका खून सूर्ख लाल था।'' समय बीतता जा रहा था। उसे अपनी बेटी का ख्याल आता है लेकिन कहीं पर टेलिफोन की व्यवस्था न होने के कारण घरवालों की खैरियत की सूचना नही दे पाती है।

साढ़े पाँच बजे वह अपने घर पहुँचती है। मीराज नीचे ही उसको कार की चाभी देता है और जल्दी से वहाँ से निकल जाता है। घर पहुँचते ही उसकी बेटी उससे लिपट जाती है। वह अपनी बेटी की सारी बाते सुनती है और सोचती है कि ''मैं उन खुशकिस्मत लोगों में से हुँ, जो घर वापस लौट आए, लेकिन मेरे जैसे न जाने कितने लोग थे जो आज की सुबह घर से निकले फिर वापस नहीं आए।

पति को वह फोन पर घटना बताती है वह उसकी पूरी बात सुने बिना ही घर पर बात करेंगे कह कर फोन रख देता है। शहर में हुए १३ धमाकों से अखबार के सभी पन्ने भरे पड़े थे। ११ साल का लड़का, अखबार वाला, जूसवाला आदि सभी अब वहाँ नहीं बचे सभी की मृत्यु उस बम धमाके में हो गई।

मीराज दूसरे दिन हिन्दुजा अस्पताल में रक्तदान के लिए जाता है। लंबी-लंबी कतारे वहाँ सभी धर्मों और जातियों के लोग थे। मीराज की इन्सान में आस्था लौट आई थी यह देखकर लेखिका के पति घर आने के बजाए सीधे ऑफिस चले जाते है। घर आने के बाद भी वह अपनी पत्नी से कल की घटना के बारें में कुछ भी नही पुछते है। लेखिका बीच-बीच में अपनी बाते कहती भी है, तो वे उनकी बात को टाल देते थे। इससे पता चलता है कि उन्हे बंबई में हुए हादसों मे दिलचस्पी नही थी। हाथ में रिमोट लेकर मैडोना का गान सुनने लगते है।

अगले दिन मीराज ड्यूटी पर नहीं आता है। उसे पता चलता है कि मीराज का बेटा नवाज गुजर गया। यह सुनकर वह आश्चर्य में पड़ जाती है कि नवाज तो ठीक हो रहा था तब फिर कैसे यह सब हो गया। वह अहमद को मीराज के घर लेकर चलने के लिए कहती है लेकिन उसके पति उसे जाने के लिए मना करते हैं। लेखिका और उसके पति दूसरे दिन शर्मा के शोक में हो आये। लेकिन मिराज के घर वह नही जा पाती है।

तीन दिन बाद उसकी मुलाकात मीराज से होती है वै मिराज से कहती है कि मैं तुम्हारे घर आने वाली थी। मीराज कहता है जी अहमद ने उसे बताया कि आप आने वाली थी। लेकिन कोई बात नही गरीब के लिए इतना सोचा यही बड़ी बात थी। वह अपनी औरत और अम्मी को गाँव छोड़कर वापस आने वाला है। क्योकि उसे यहाँ आना ही पड़ेगा । क्योंकि कोई दूसरा रास्ता भी नहीं था।

इस प्रकार कहानी में सांप्रदायिक दंगे, संवेदनहीनता, रोजगारी के जीवन को जीने के लिए मजबूर लोगों का यथार्थ चित्रण किया गया है।

३.१.१ चारित्रिक विशेषताएँ

कहानी के लिए कथावस्तु जितनी महत्त्वपूर्ण है उतनी ही पात्र। पात्रों के माध्यम से कहानी में जिवंतता आती है। कहानी में मीराज ऐसा पात्र है, जो शुरू से लेकर अंत तक पाठक को कहानी से बांध कर रखता है।

मीराज : लेखिका का ड्रायवर है। जो पूरी मेहनत और लगन से अपना काम करता है बहुत दिनों बाद लेखिका और मिराज की मुलाकात होती है। लेखिका उसे काफी समय बाद पहचानती है। क्योंकि उसने हुलिया बदल लिया है। पहले दाढ़ी रखता था अब नहीं। वह बताता है कि किस तरह दंगाई लोगों का हुलीया देखकर उस पर हमला करते है। इसलिए उसने अपना हुलिया बदल दिया।

बम के धमाके के कारण मीराज का बेटा अपनी आवाज खो देता है। ओझाई करने के बाद कुछ दिनों पर वह बोलने की कोशीश करता है। वह लेखिका के साथ उसके बताए हुए स्थल पर जाता है जहाँ अचानक बम धमाका होता है। वहाँ से लेखिका को सही सलामत लेकर चलता है। उस वक्त वह अपनी जिम्मेदारी समझता है कि वहाँ से अपनी मालकिन को सही सलामत लेकर निकले। रास्ते में फिर एक धमाका होता है। इस धमाके ने उसके अंदर घर जल्दी पहुँचने लालसा जगाई उसके आँखों के सामने उसका परिवार नजर आने लगता है। साथ ही लेखिका के घरवाले भी परेशान होते होंगे इस बात की भी उसने चिंता व्यक्त की।

दंगो के अगले दिन पर हिंदूजा अस्पताल में रक्तदान करने के लिए जाता है। जहाँ पर लंबी लाईन देखकर उसे मानवता के प्रति उसका विश्वास जाग जाता है।

कुछ दिनो बात ही उसके बेटे की मृत्यु हो जाती है। अपनी जिम्मेदारियों को समझते हुए अपनी मालकिन के पास आता है। और कहता है कि वह गाँव जा रहा है परिवार को लेकर कुछ दिन में ही लौटेगा।

इस प्रकार लेखिका ने मीराज के माध्यम से मानवता संवेदना और कर्तव्य निष्ठता को बताया है।

देशकाल वातावरण और परिस्थिति

'काला शुक्रवार' कहानी में देशकाल और परिस्थितियों का यथार्थ चित्रण किया गया है। किस प्रकार नेता धार्मिक पुरोहित, आदि सभी सांप्रदायिक दंगे को बढ़ाते है इन दंगों के कारण आम जनता किस प्रकार प्रभावित होती है यह बताया गया है।

कहानी में १९९२ के दंगे में आम आदमी प्रभावित होता है। दंगे में मीराज के बेटे की हत्या हो जाती है। जहाँ पर बम धमाके हुए थे। वहाँ पर अधिकतर फेरीवालों की मृत्यु हो जाती है। उसमे १९ साल का लड़का, मोसंबीवाला, नींबूसरबत बेचनेवाला आदि का चित्रण किया गया है।

जगह–जगह बम धमाको के कारण किस प्रकार जनता डरी सहमी है, लोगों में अफरा तफरी मची हुई, नेता हेलीकाप्टर में बैठकर शहर का जायजा ले रहे है। और गरीब दर्द से कराह रहा है।

कई–ऐसे परिवार है जो अपनों से उस दंगे में बिछड़ गये। किसी का पति, किसी की पत्नी, बेटा, बहन आदि दंगे की भेट चढ़ गये।

लेखिका की कार के सामने इस प्रकार धमाका होता है कि वह जगह श्मशान में तब्दील हो जाता है। उसकी आँखों के सामने धमाके के कारण इंसान मांस के लोथड़े के समान उड़ रहे है। साथ ही कहानी में बाताया गया है कि शहरी जिंदगी इतनी व्यस्त होती है कि मनुष्य को मनुष्य का दर्द भी दिखाई नहीं देता है।

लेखिका के पति के पास इतना भी समय नही हैं कि वह अपनी पत्नि से उसके सामने हादसे के बारे में पूछ सके। उन लोगों के प्रति अपना शोक व्यक्त कर सके जो दंगे में मारे गये हैं।

इस प्रकार लेखिका ने १९९२ के दंगे को चित्रण के साथ सांप्रदायिकता की कट्‌टरपन की समस्या को उभारा है।

३.१.४ कहानी का उद्‌देश्य

लेखिका ने धर्म के नाम पर होनेवाले दंगो का मार्मिक चित्रण कहानी में किया है। कहानी के पात्र मीराज को जब लेखिका बिना दाढ़ी के देखती है, तो उससे वह पूछती है कि इस हूलिये का कारण क्या है? ''वह उसे बताता है कि दाढ़ी मूँछ में क्या रखा है। मेरा बस चले तो मैं अपना नाम भी बदलवा दूँ। क्या रखा है नाम और मजहब में।'' इस वाक्य से पता चलता है कि धर्म किसी को भी मारने की सलाह नहीं देता है। मनुष्य की पहचान उसके कर्मो से होती है ना कि धर्म से। धर्म के कारण सांप्रदायिकता को बढ़ावा मिल रहा है।

कहानी में लेखिका ने दंगे का चित्रण कर सांप्रदायिकता के कारण बढ़ते लडाई–झगडो की और संकेत किया। आज की व्यस्त भरी जिंदगी में मनुष्य आत्मकेंद्रित हो गया है। अपने स्वार्थ की पूर्ति के लिए दूसरों को हानी पहुँचाना नेताओ तथा धर्मगुरूओं का काम बन गया। इन दंगों में भोली–भाली जनता का ही सबसे ज्यादा नुकसान होता है। बड़े व्यक्ति अपने घरों में बैठकर केवल बाहरी तमाशा देखते हैं।

लेखिका के पति के माध्यम से संवेदनहीनता को बताया है। दंगे के दूसरे दिन वह एअरपोर्ट से अपने घर जाकर परिवार को नहीं देखता है बल्कि सीधे दफ्तर चला जाता है। ये वर्तमान समय की पीड़ा है कि मनुष्य के पास अपनों के लिए समय नहीं है।

मीराज जैसे लोग समय निकाल कर रक्तदान के लिए जाते है। बिना मजहब देखे वे अपना खून देता है ताकि लोगों की जान बच सके कोई खून की कमी के कारण न मरे। इस सोच के साथ हिंदूजा अस्पताल में कई लोग खड़े थे।

इस प्रकार काहनी में लोगों की खोती मानवता, धर्म के प्रति अंधविश्वास अमीरी–गरीबी, आम जनता की पीड़ा का मार्मिक चित्रण करना लेखिका का उद्देश्य है।

३.१.५ संदर्भ सहित व्याख्या

१) ''क्या करे मैडम! दाढ़ी मूँछ क्या, अपुन का बस चले तो अपना नाम भी बदल दें। क्या रखा है नाम और मजहब में मजहब के नाम पर दोन जून की रोटी भी नही मिलती।''

संदर्भ :

प्रस्तुत अवतरण हमारी पाठ्य पुस्तक ''प्रतिनिधी दस 'कहानियाँ' से ली गई हैं। 'काला शुक्रवार' नामक शीर्षक से उद्धृत है। इसकी लेखिका सुधा अरोडा है। इन्होने स्त्री विमर्श से संबंधित कई पुस्तके लिखी है।

प्रसंग :

प्रस्तुत अवतरण में लेखिका ने धर्म के नाम पर होने वाले सांप्रदायिक दंगो को बताया है।

व्याख्या :

उपर्युक्त अवतरण में दंगों के कारण किस प्रकार आम जनता प्रभावित होती है यह बताया गया है मीराज कहानी का महत्त्वपूर्ण पात्र है। कहानी में बम के धमाके के कारण इसके बेटे की आवाज चली जाती है। कुछ दिनो पर ओझा को दिखाने पर थोड़ा-थोड़ा बोलने की कोशिश कर रहा था। किंतु बंबई में फिर बम धमाकों के कारण वह बिमार पड़ जाता है, बिमारी में उसकी मृत्यु हो जाती है। वह बताता है कि उसका दोस्त पीटर दाढ़ी के कारण दंगे मे मारा जाता है। इसलिए उसने भी अपनी दाढ़ी निकाल दी। क्योंकि मजहब के नाम पर दंगाई लोगों का हुलिया देखकर मार रहे थे। इसलिए वह कहता है कि क्या रखा है नाम और मजहब में मजहब तो दो वक्त की रोटी भी नहीं देता। इस प्रकार कहानी के माध्यम से लेखिका ने लोगों की खोती हुई मानवीय संवेदना धर्म के नाम पर होने वाले दंगे, अंधविश्वास जैसी समस्याओं को उभारा है।

संदर्भ सहित व्याख्या के लिए अन्य अवतरण

१. ''मैने पीछे मुड़कर देखा काले धुएँ के उठते बादलों का गुबार अब भी घना था। सामने से सायरन बजाती पुलिस और फायर ब्रिगेड की गाड़ियों का आना शुरू हो गया।''

२. 'सुनते है डेढ़ सौ लोग मर गया है जान माल का बहुत नुकसान हुआ है।'' मीराज अपने को संभालकर बोल रहा था ''अब उन बेचारों का क्या कसूर था?''

३. इस शहर ने पता नही कैसे रेशमी धागों से उस जैसे लाखों कामगारों को बांध रखा है। यह बे मुरब्बत शहर रोजी-रोटी भी तो देता है, जो जिन्दा रहने की पहली शर्त है।

४. भीड़ के जुनून का शिकार वह हिन्दू था या मुसलमान नहीं मालूम । सिर्फ दाढ़ी रख लेने से कोई मुसलमान नहीं हो जाता सफेद पोशाक पर बहता हुआ उसका खून सुर्ख लाल था।

३.१.६ समीक्षात्मक प्रश्न

१. मीराज का चरित्र-चित्रण कीजिए।

२. कहानी की समस्याओं पर प्रकाश डालिये।

३. कहानी में धार्मिक अंधविश्वास को किस प्रकार बताया गया है ? स्पष्ट कीजिए।

४. कहानी का उद्देश्य लिखिए।

३.१.७ टिपण्णी

१. लेखिका ने मीराज के माध्यम से क्या संदेश देना चाहा है? अपने शब्दों में लिखिए।

२. कहानी की मूल संवेदना।

३. कहानी में कहाँ-कहाँ पर घटनाएँ घटती है ? संक्षेप में लिखिए।

४. कहानी में चित्रित मानवीय प्रवृत्ति पर प्रकाश डालिए।

३.१.८ वस्तुनिष्ठ प्रश्न

१. लेखिका मीराज को कितने सालों से जान रही थी या देख रही थी ?

उत्तर : दो साल

२. दो जून की रोटी किसके नाम पर नहीं मिलती ?

उत्तर : मजहब के नाम पर

३. निमोनिया के कारण कौन बिमार पड़ गया था ?

उत्तर : लेखिका के नानाजी

४. कितनी तारीख को दंगो की शुरुवात मानी जाती है।

उत्तर : ६ दिसेंबर, १९९२

५. किस नगर की औरतों ने अपने घर में लोगों को पनहा दी थी ?

उत्तर : भारत नगर

६. रेमंड्स के साइनबोर्ड पर क्या लिखा था ?

उत्तर : 'वी पुट इंटीग्रेटेड फाइबर्स टुगेदर'

७. किस नर्सिंग होम में दो नवजात शिशु की आँखे खुलने की साथ ही हमेशा के लिए बंद हो गयी ?

उत्तर : वर्ली नर्सिंग होम

८. कहानी की मूल समस्या क्या है ?

उत्तर : सांप्रदायिक दंगे

९. कहानी में किस शहर का चित्रण किया गया है ?

उत्तर : बंबई

१०. 'काला शुक्रवार' कहानी की लेखिका का नाम लिखिए।

उत्तर : सुधा अरोड़ा

H H H

इकाई ४

४

टेपचू – उदय प्रकाश

इकाई की रूपरेखा

४.१ इकाई की रूपरेखा

४.२ लेखक उदय प्रकाश और उनकी कृतियाँ

४.३ टेपचू कहानी की कथावस्तु

४.४ चारित्रिक विशेषताएँ

४.५ देशकाल-वातावरण और परिस्थितियाँ

४.६ कहानी का उद्देश्य

४.७ संदर्भ सहित व्याख्या हेतु अन्य अवतरण

४.८ दीर्घोत्तरीय प्रश्न

४.९ वस्तुनिष्ठ प्रश्न

४.१० टिप्पणी

३.२.२ उदय प्रकाश और उनकी कृतियाँ

उदय प्रकाश समकालीन कहानी के अत्यन्त महत्त्वपूर्ण कलाकार हैं। वे कहानी के प्रचलित मुहावरे को तोड़कर जीवन की कुछ संकटपूर्ण स्थितियों और विडंबनाओं पर तटस्थ दृष्टि डालनेवाले नए कहानीकार के रूप में उभरे हैं। इनका जन्म सन् १९५२ में मध्यप्रदेश के शहडोल जिले के सीतापुर में हुआ। इन्होंने विज्ञान में स्नातक और हिन्दी साहित्य में स्नातकोत्तर की उपाधि प्राप्त की है। उसके बाद वे नई दिल्ली के जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय में शोध और अध्यापन करते रहे। मध्य प्रदेश शासन के संस्कृत विभाग में भी उन्होंने कुछ समय के लिए अपनी सेवा समर्पित की। मीडिया के क्षेत्र में वे संपादन, पटकथा लेखन और फिल्म निर्माण में भी सक्रिय रहे। ये मुख्यतः कवि अनुवादक, संपादक होने के साथ-साथ एक सफल कहानीकार हैं।

उदय प्रकाश के तीन कहानी संग्रहों में उनका पहला कहानी संग्रह 'दरियाई घोड़ा' सन् १९८९ में प्रकाशित हुआ, दूसरा कहानी संग्रह 'तिरिछि' सन् १९८९ में ही तथा तीसरा कहानी संग्रह 'और अंत में प्रार्थना' सन् १९९४ में प्रकाशित हुआ। इन्होंने कहानी के अलावा हिन्दी की अन्य विधाओं में भी अपनी लेखनी चलाई हैं। 'ईश्वर की आँख' इनका प्रसिध्द निबन्ध संग्रह है। इन्होंने आलोचना, संस्मरण, पटकथाएँ

लिखकर अपने विविध मुखी प्रतिभा का परिचय दिया है। 'सुनो कारीगर' 'अबूतर कबूतर' 'रात में हारमोनियम' इनके द्वारा रचित काव्य संग्रह हैं।

इनकी अभूतपूर्व साहित्य सेवा के कारण अबतक इन्हें अनेक पुरस्कारों और सम्मानों से सम्मानित किया गया है। इन सम्मानों में मुख्य हैं सन् १९८० में प्राप्त भारत भूषण अग्रवाल पुरस्कार, सन् १९८२ में प्राप्त ओम प्रकाश साहित्य सम्मान और सन् १९९४ में प्राप्त गजानन माधव मुक्तिबोध पुरस्कार।

४.२. 'टेपचू' कहानी की कथावस्तु

लेखक उदय प्रकाश के अनुसार टेपचू की कथा सिर्फ कहानी नहीं है बल्कि उनके जीवन की हैरतअंगेज सच्चाई है।

बिहार में सोन नदी के किनारे बसे मड़र गाँव में दस-ग्यारह साल पहले अब्बी नाम का एक मुसलमान रहता था। गाँव के बाहर हरिजनों की बस्ती से कुछ हटकर तीन-चार मुसलमानों के घर थे। ये लोग मुर्गियाँ, बकरियाँ पालकर गोश्त का धंधा करते, थोड़ी बहुत खेती भी करते थे।

अब्बी आवारा और फक्कड़ किस्म का आदमी था। उसने दो शादियाँ की थी। उसकी एक पत्नी जो काफी सुन्दर थी वह एक दर्जी के घर जाकर बैठ गई। बाद में दर्जी ने पंचायत के कहे अनुसार अब्बी को हरजाना के रूप में अच्छी खासी रकम दी। उन्हीं रुपयों से अब्बी ने ऐश करने के साथ-साथ एक हारमोनियम खरीदा क्योंकि उसकी दिली ख्वाहिश थी कि वह कव्वाल बन जाए। बड़ी मुश्किल से एकाध कव्वाली सीखकर वह उसी से अपना गुजर-बसर करने लगा, पत्नी व बेटे की परवरिश करने लगा। तभी एक दिन ऐसी दुर्घटना घटी कि सोन नदी के कमर तक के पानी में नदी पार करते समय उसका पैर नदी में बीच-बीच में बने छोटे-छोटे कुएँ में जा फँसा और हारमोनियम गले में टाँगे हुए नदी में डूब कर मर गया। गाँव-वालों, मछुआरों ने उसे तलाशने की पूरी कोशिश की, परन्तु उसकी लाश भी नहीं मिली। तब अब्बी के बेटे टेपचू की उम्र दो साल की थी।

अब्बी की मौत के बाद उसकी पत्नी फिरोजा के सिर पर मुसीबतों के पहाड़ टूट पड़े। वह घर-घर जाकर दाल-चावल फटकती, खेतों में मजदूरी करती, ढेंकी कूटती, सोन नदी से मटके भर-भर पानी ढोती, बाग-बगीचों खेतों की तकवानी का काम करती, अपने घर का कामकाज करती, एक बकरी उसके पास थी उसकी भी देखभाल करनी पड़ती, तब कहीं जाकर उसे बड़ी मुश्किल से दो रोटी मिल पाती। यह सब काम करते समय वह एक पुरानी साड़ी में अपने बेटे टेपचू को बाँधे रहती। उसकी दशा दिन-प्रति-दिन बद से बदतर होती चली गई। गाँव के मनचले लड़कों ने उस जवान अकेली विधवा औरत को गिद्ध की तरह नोंचना चाहा परन्तु उसके पेट पर झूलता टेपचू हमेशा कवच की भाँति टंगा रहता था। रातदिन मेहनत मजूरी करते-करते साल भर के भीतर वह बुढ़ा गई। उसके बाल उलझे, रुखे गंदे रहते, शरीर से भी गंदी

बदबू आती। गाँव वाले उससे काम पूरा लेते परन्तु उसे घृणात्मक दृष्टि से देखते थे। समय बीतता गया, जब टेपचू सात-आठ साल का हुआ तो लोगों की दिलचस्पी उसमें बढ़ने लगी।

मड़र गाँव के बाहर, दूर तक फैले धान के खेतों के पार आम का एक घना बगीचा था। लोग पहले इस बगीचे को मुखिया जी का बगीचा कहते थे, क्योंकि वर्षो पहले मुखिया चौधरी बाल किशन सिंह ने यह बगीचा लगाया था। दसअसल यह जमीन उनकी भी नहीं थी, यह एक सरकारी जमीन थी परन्तु वहाँ उन्होंने दो-ढाई सौ पेड़ लगाकर उसको हड़पना चाहा था। यह हसरत लिए मुखिया जी स्वर्गवासी हो गए। उनके मरने के बाद गाँव वाले ऐसा मानते थे कि मुखिया का भूत इस बगीचे में रहता है इसीलिए वे इस बगीचे को भुतहा बगीचा कहने लगे। यह बगीचा असामाजिक तत्वों व असामाजिक अवैध संबंधों का अड्डा था जहाँ गाँव के अकेले लड़के-लड़कियों के मिलने का एकान्त अड्डा भी था, शायद इन तत्वों ने जानबूझ कर इस बगीचे को भुतहा बगीचा बना दिया था कि उस तरफ लोगों का आवागमन न हो और एकान्त चाहने वालों को एकान्त मिल सके। शाम या रात के प्रहर कोई उस बगीचे में भूत के डर से नहीं जाता।

एक दिन लेखक और उनके मित्र एक विवाह उत्सव से लौट रहे थे। रास्ता बगीचे से होकर गुजरता था। सबके मन में डर बैठा हुआ था, सभी सहमे-सहमे आगे बढ़ रहे थे कि कहीं मुखिया का जिन्न उन्हें समाप्त न कर दे तभी उन्हें अचानक सूखे पत्तों की चरमराहट सुनाई दी। उन्होंने काफी हिम्मत से लाठियाँ भाँजते ऊँची आवाज में जानना चाहा कि वहाँ कौन है? इतने में वहाँ से टेपचू निकलकर आता है और डरते हुए उन्हें बताता है कि उसकी माँ को लू लग गया है और वह अपनी माँ को कच्चे आम का पन्ना पिलाने के लिए बगीचे से कच्चे आम तोड़ने आया है। वह उनसे आग्रह करता है कि यह बात वे किसी को नहीं बताएँ। लेखक उसे डाँटकर अपने साथ गाँव लेकर आता है और उसे बगीचे में कभी नहीं जाने की हिदायत भी देता है। टेपचू के जीवन की यह पहली बड़ी घटना थी।

टेपचू के जीवन में दूसरी घटना तब घटी, जब वह सात-आठ साल का था। माँ फिरोजा ने टेपचू को जलती लकड़ी से पीटा था। इसलिए वह माँ से लड़कर घर से भाग गया। दोपहर की चिलचिलाती धूप में दिन-भर मारा-मारा फिरने के बाद उसे बहुत भूख लगी। जब भूखों नहीं रहा गया तो उसे सरई के पेड़ों के पार जंगल के बीच स्थित पुरनिहा तालाब की याद आई जिसमें दिन में गाँव के भैंसें और रात में बनैले सूअर लोटा करते थे। स्याह हरे पानी के पूरी सतह पर कमल, कुई के फूल और पुरइन फैले हुए थे। टेपचू तैरना जानता था इसलिए वह कमल गट्टे और पुरइन की कांद निकालने के लिए तालाब में लगी काई की मोटी पर्त के बीच घुस गया।

बीच तालाब से ढेर सारे कमलगट्टे बटोरकर जब वह लौटने लगा तो तैरने में परेशानी हो रही थी। इतने में उसका पैर पुरइन की धनी उलझी नालों में उलझ गया

और वह डूबने लगना। इतने में अपने भैंस को पानी पिलाने परमेसुरा तालाब के किनारे आया, उसे कुछ 'गुड़प-गुड़प' की आवाज सुनाई दी उसने समझा कि कोई बड़ी मछली तड़प रही है। वह तैर कर आवाज की तरफ गया और गोता लगाकर मछली के गलफड़ों को अपने पंजों में दबोच लेना चाहा परन्तु उसके हाथ में टेपचू की गर्दन आई। पहले तो वह डर गया, फिर उसे बाहर निकालकर लाया। लगभग मरणासन्न की अवस्था में पहुँच चुके टेपचू की टाँगे पकड़कर, उसे उलटा लटकाकर उसके पेट में ठेहुना से मारा। टेपचू ने लगभग एक बाल्टी उल्टी की और फिर होश में आते ही मुस्कुराकर परमेसुरा ते कमलगट्टे तालाब से खींच का लाने का आग्रह किया। परमेसुरा उसे चार-पाँच डंडे लगाकर गालियाँ देता हुआ चला गया। इस प्रकार टेपचू दूसरी बार मौत के मुँह से निकल कर बाहर आया।

टेपचू के जीवन का तीसरा बड़ा हादसा भी कम रोमांचक नहीं था। उसके गाँव के बाहर, कस्बे की ओर जाने वाली सड़क के किनारे सरकारी नर्सरी थी। उसी नर्सरी में काफी भीतर ताड़ के पेड़ थे। गाँव में ताड़ी पीने वालों की अच्छी खासी संख्या थी। अधिकतर मजदूर पी. डब्ल्यू. डी. में सड़क बनाने, मिट्टी बिछाने का काम करते और दिन-भर की धकान के बाद रात में ताड़ी पीकर धुत हो जाते, आनन्द-मस्ती में डूब जाते, लगता जैसे लोग प्यार के अथाह सागर में एक साथ तैर रहे हों। टेपचू ने भी यह सब देखकर एक दिन ताड़ी चखनी चाही, था तो वह छोड़ा बच्चा ही। सवाल यह था ताड़ी कैसे पी जाए। काका लोगों से माँगने पर पिटने का भय था।

ताड़ के उन पेड़ों पर अब किशनपाल सिंह का राज था क्योंकि पटवारी ने कुछ लेन-देन करके उस सरकारी नर्सरी वाली जमीन को किशनपाल सिंह के पट्टे में निकाल दिया था। ताड़ी निकलवाने का काम वही करते थे। शाम के वक्त ग्राम पंचायत भवन के बैठक में गाँधीजी के तस्वीर के नीचे मजदूरों को ताड़ी बाँटी जाती थी और अच्छी-खासी भीड़ होने के कारण किशनपाल सिंह की अच्छी-खासी कमाई होती थी। ताड़ी के पेड़ों की रखवाली के लिए लट्ठबाज मदना सिंह को नियुक्त किया गया था।

टेपचू ने एक दिन ताड़ी चखने का पूरा जुगाड़ जमाया और बिल्कुल तड़के-मुँह अंधेरे ही सबसे बचकर गिलहरी की तरह एकसार सीधे तने से लिपटकर ऊपर सरकने लगा और थोड़े से प्रयास में ऊपर चढ़ गया। पेड़ पर टंगे मटके को हिलाकर, फिर उसमें हाथ डालकर थाह लेना चाहा कि उसमें कितना ताड़ी है, बस यहीं सब गड़बड़ हो गया।

मटके में फनियल साँप घुसा था। बिल्कुल असली नाग वह भी ताड़ी पीकर धुत था। टेपचू का हाथ अंदर गया तो वह उसके हाथ में बौड़कर लिपट गया। टेपचू वजनी पत्थर की तरह जमीन पर धप्प की आवाज के साथ गिरा, साथ में वह मरते हुए आदमी की तरह अंतिम कराह ले चुका था। टेपचू के गिरने के तुरंत बाद मटका गिरा और टुकड़ों में बिखर गया। काला साँप एक और पड़ा हुआ ऐंठ रहा था। उसकी रीढ़ की हड्डीयाँ टूट गई थीं।

इतने में मदना सिंह दौड़कर आया। उसने ताड़ की फुनगी से मटके समेत टेपचू की गिरते हुए देखा था। उसने टेपचू को एक-दो बार हिलाया डुलाया और फिर इस हादसे की खबर देने के लिए गाँव की तरफ दौड़ा। थोड़ी देर में धाड़ मार-मार कर रोती, छाती कुटती फिरोजा लगभग सारे गाँव वालों के साथ वहाँ पहुँची, वह मदना सिंह के साथ सभी लोंग हक्के-बक्के रह गए क्योंकि थोड़ी देर पहले वहीं टेपचू की लाश पड़ी थी और अब वह वहाँ नहीं थी। साँप का सिर किसी ने पत्थर के टुकड़े से अच्छी तरह धुर दिया था। लेकिन आस-पास खोज करने के बाद भी टेपचू मियां का अता-पता नहीं था। उसी दिन गाँव वालों को विश्वास हो गया कि टेपचू कभी मर नहीं सकता क्योंकि वह आदमी नहीं जिन्न है।

टेपचू की माँ फिरोजा की हालत दिन पर दिन बिगड़ती चली जा रही थी। वह अपने बेटे को बहुत चाहती थी इसलिए उसने दूसरी शादी नहीं की। टेपचू की हरकतों से उसके मन में डर बैठ गया कि उसका इकलौता लड़का बहेतु और आवारा न निकल जाए। इसीलिए उसने पंडित भगवानदीन के पैर पकड़कर उनके घर पर पंद्रह रुपए महीने और खाना-खुराक पर चरवाहे के रूप में रखवा दिया। करार तो यह हुआ था कि सिर्फ भैसों की देखभाल ही टेपचू को करनी पड़ेगी, लेकिन वास्तव में भैसों के अलावा टेपचू को पंडित के घर से लेकर खेत-खलिहान तक का सारा काम सुबह चार बजे से रात बारह बजे तक करना पड़ता और बदले में खाने के नाम पर बचा-खुचा खाना या मक्के की जली-भूनी रोटियाँ मिलतीं। एक महीने में ही टेपचू की हालत देखकर फिरोजा पिघल गई उसने पंडित का काम छोड़ने के लिए टेपचू पर दबाव बनाया परन्तु उसने काम छोड़ने से इंकार कर दिया। कारण यह था कि यहाँ भी उसने जुगाड़ जमा लिया। अब वह क्या करता था कि भैसों को जंगल में ले जाकर छुट्टा छोड़ देता किसी पेड़ के नीचे रात की नींद पूरी करता। इसके बाद उठकर सोन नदी में भैसों को नहलाकर खुद भी स्वच्छ बन जाता और फिर इधर-उधर अच्छी तरह से देख-ताककर डालडा के डिब्बे में भैंस का ताजा एक किलो दूध दुहकर पी जाता। थोड़े ही दिनों में उसकी सेहद सुधरने लगी।

एक दिन की बात है पंडिताइन ने किसी बात पर टेपचू को गाली बकी, खाने में सड़ा हुआ बासी भात दे दिया। खाना इतना सड़ा-खट्टा था कि उसने सारा भात भैसों की नाद में डाल दिया। उसके बाद उसे पंडित के खेत की निराई भी करना पड़ी थी। अंत में थकान और भूख से बेचैन टेपचू भैसों को हाँककर जंगल में ले गया।

शाम को जब भैसें दुही जाने लगीं तो छटाँक भर भी दूध नहीं निकला। पंडित भगवानदीन को उस पर शक हो गया कि भैसों का दूध इसने ही पिया है। उन्होंने उस दिन टेपचू की जूतों और थप्पड़ों से पिटाई की, मुर्गा बनाया और गाली-वाली देकर उसे काम से निकाल दिया।

इसके बाद टेपचू पी.डब्ल्यू.डी. में राखड़ मुरम, बजरी बिछाने का काम सड़क पर डामर बिछाने का काम करने लगा। हालाँकि यह काम बड़े-बड़े मर्दो का काम था बच्चों का नहीं। फिरोजा मकई के आटे में मसाला-नमक मिलाकर रोटियाँ सेंक देती,

टेपचू काम के बीच में दोपहर की चिलचिलाती धूप में उन्हें खाकर दो लोटा पानी पी लेता। निरंतर कड़ी मेहनत करते-करते टेपचू का शरीर, उसकी कड़ी काठी बढ़ने-मजबूत होने लगा। पसीने, मेहनत, भूख, अपमान, दुर्घटनाओं और मुसीबतों की विकट धार को चीर कर टेपचू अब एक जवान, भरपूर आदमी बन गया। तमाम मुसीबतों के बावजूद उसके चेहरे पर टूटने या हार जाने का गम नहीं उभरा था बल्कि गुस्सा या घृणा का भाव अवश्य देखा जा सकता था।

इसी बीच लेखक गाँव छोड़कर बैलाडिला के आयरन ऑर मिल में नौकरी करना लगे। इसी बीच फिरोजा की मौत हो गई, पंडित भगवान दीन भी मर गए। किशनपाल जी ताड़ी बेचते-बेचते, सालों सरपंच बने रहने के बाद वे एम.एल.ए. बन गए। बड़ी सी पक्की हवेली बनवा ली।

काफी लंबा समय बीत गया, लेखक को टेपचू की कोई खबर नहीं मिली परन्तु यह वह भली-भाँति जानता था कि जिन हालात में टेपचू काम कर रहा था, अपना खून निचोड़ रहा था, अपनी नसों से चट्टान तोड़ रहा था। किसी बात पर किशनपाल सिंह ने अपने गुंडों से बुरी तरह पिटवाकर, मरा हुआ जानकर सोन नदी में फेंक दिया था, लेकिन वह एक बार फिर सही-सलामत बच गया उसी रात किशनपाल सिंह पुआल में आग लगाकर बैलाडिला आ गया। वहीं उसकी मुलाकात लेखक से हुई और लेखक की सिफारिश पर ही उसे मजदूरी में भर्ती कर लिया गया। थोड़े ही समय में अपने साथियों से पूरी तरह घुल-मिल गया। सब लोग उसे प्यार करते। वह बिल्कुल निडर, बेधड़क और मुँहफट आदमी था। एक दिन उसने कहा था ''काका, मैंने अकेले लड़ाईयाँ लड़ी है। हर बार मैं पिटा हूँ। हर बार हारा हूँ। अब अकेले नहीं, सबके साथ मिलकर देखूँगा कि सालों में कितना जोर है।''-(पृष्ठ-८८, कहानी-टेपचू, लेखक उदय प्रकाश)

लेखक और टेपचू के साथ अन्य मजदूर जिस कारखाने में काम करते थे वहाँ जितना कच्चा लोहा ये लोग तैयार करते थे, उसका बहुत बड़ा हिस्सा जापान भेज दिया जाता था। मजदूरों को दिन-रात खदान में काम करना पड़ता था। इन्हीं दिनों एक घटना घटी। जापान ने उस कारखाने से लोहा खरीदना बंद कर दिया, जिसकी वजह से सरकारी आदेशानुसार कच्चे लोहे का उत्पादन होने के कारण मजदूरों की बड़ी संख्या में छँटनी करने का फरमान जारी हुआ। उनकी तरफ से माँग की गई कि पहले उनकी नौकरी का कोई दूसरा इंतजाम किया जाए तभी छटनी की जाए। मजदूरों के इस माँग पर बिना कोई ध्यान दिए मैनेजमेटं ने छँटनी आरंभ कर दी मजदूर यूनियन ने विरोध में हड़ताल का नारा दिया और सारे मजदूर अपनी झुग्गियों में बैठ गए कोई काम पर नहीं गया। चारों तरफ चप्पे-२ पर पुलिस तैनात थी। तीसरी रात को पुलिस वालों ने यूनियन ऑफिस पर छापा मारा जो कि शहर के दूसरे छोर पर सुनसान इलाके में स्थित था।

मजदूरों ने पुलिस वालों को रोकने की बहुत कोशिश की लेकिन दारोगा करीम बख़्श तीन-चार कांस्टेबलो के साथ जबर्दस्ती अंदर घुसकर फाईलों रजिस्टरों, पर्चो को

इकट्ठा करना शुरू कर दिया इतने में सिपाहियों को धकियाते हुए अंदर पहुँचा और अपनी होशियारी से दारोगा करीम बख़्श की गर्दन को अपनी भुजाओं में फँसा लिया। मजदूरों का जत्था अंदर आ गया और तड़ातड़ लाठियाँ चलने लगीं। कई सिपाहियों के सिर फूटे, वे रो-गिड़गिड़ा रहे थे। टेपचू ने दारोगा को नंगा करके, आगे-आगे दारोगा, उनके पीछे पिटी हुई पूरी पुलिस पलटन, उनके पीछे मजदूरों का हुजूम ठहाके लगाते हुए यूनियन ऑफिस से कारखाने के गेट तक बड़ा-सा जुलूम निकाला। सारे मजदूर और टेपचू गर्व और मस्ती में डूबे हुए थे।

अगले दिन टेपचू अपनी झुग्गी से निकलकर टट्टी करने जा रहा था इतने में पुलिस ने उसे गिरफ्तार कर लिया। चारों तरफ अनेक लोगों की गिरफ्तारियाँ हुईं। इस गिरफ्तारी के बाद पुलिस वालों को प्रतिशोध निकालने का पूरा मौका मिल गया। उन्होंने टेपचू को नंगा किया तो दारोगा करीम बख़्श को पता चला कि वह मुस्लिम है क्योंकि उसकी माँ ने उसकी बाकायदा कतौनी कराई थी। पुलिस वालों द्वारा पूछे जाने पर टेपचू ने अपना पूरा पता-ठिकाना बताते हुए सिपाही गजाधर शर्मा जिन्होंने उसकी पैंट उतारी थी और नीचे झुके हुए थे उनके कंधे पर पेशाब कर दिया। टेपचू को जीप के पीछे रस्सी से बाँधकर डेढ़ मील तक घसीटा गया। टेपचू के पीठ की पूरी चमड़ी उतर गई थी, जगह-जगह से खून टपक रहा था। बीच मे पुलिस वाले चाय पीने हेतु रुके तो टेपचू ने भी पूरे शान से माँग कर चाय पी। जीप पुनः दस मील बाद जंगल के बीच रुकी जहाँ टेपचू की धुलाई डंडे से करने के बाद पुलिसवालों ने उसका इनकाउंटर कर दिया और उसकी लाश को जंगल के भीतर महुए के पेड़ पर टाँग दिया। मौके की तस्वीर ली गई और पुलिस ने रिपोर्ट दर्ज किया कि 'मजदूरों के दो गुटों में हथियार बंद लड़ाई हुई है। टेपचू उर्फ अल्ला बख़्श को मारकर हिन्दू मजदूरों ने पेड़ से लटका दिया है। पुलिस को लाश बरामद हुई है और मुज़रिमों की तलाश जारी है।'

इसके बाद टेपचू की लाश को सफेद चादर में ढंककर संदूक में बंद कर, जीप में लादकर पुलिस चौकी लाया गया।

इधर पुलिसवालों की सरकारी रिपोर्ट को सुनकर हिन्दू-मुसलमानों के बीच दंगा भड़क गया क्योंकि टेपचू मुस्लिम था और पुलिसवालों की रपट के अनुसार उसकी हत्या हिन्दुओं ने की थी। उनकी झुग्गियाँ जला दी गईं, चारों ओर धुआँ ही धुआँ था। रायगढ़, बस्तर, भोपाल सभी जगह से पुलिस की टुकड़ियाँ आ गई थीं। सी.आर.पी. वाले गस्त लगा रहे थे। साम्प्रदायिक दंगा विकराल रूप ले चुका था।

इधर अगले दिन सुबह टेपचू की लाश को पोस्टमार्टम के लिए जिला अस्पताल भेजा गया। बड़े ही धार्मिक किस्म के ईसाई डॉक्टर एडविन वर्गिस ऑपरेशन थियेटर में टेपचू की लाश के पास आए तो उन्होंने देखा कि उसके शरीर में जगह-जगह थ्री-नॉट-थ्री की गोलियाँ धँसी हुई थीं, पूरी लाश में एक सूत जगह नहीं थी, जहाँ-चोट न हो।

डॉक्टर ने जैसे पोस्टमॉर्टम के लिए उस्तरा उठाया वैसे ही टेपचू ने कराहते हुए आँखें खोल कर उनसे कहा-''डॉक्टर साहब, ये सारी गोलियाँ निकाल दो। मुझे बचा लो। मुझे इन्हीं कुत्तों ने मारने की कोशिश की है।'' (पृष्ठ-९२, टेपचू)

लेखक उदय प्रकाश पुनः कहते हैं कि यह कोई कहानी नहीं है बल्कि एक सच्ची घटना है विश्वास न हो तो वे कभी किसी भी वक्त टेपचू से पाठकों को मिलवा सकते हैं।

'टेपचू' की कथा यहीं समाप्त होती है।

४.४ चारित्रिक विशेषताएँ : टेपचू

कहानीकार अपने लक्ष्य और कहानी की माँग के अनुसार अपनी कहानी में पात्रों का सृजन करता है। ये पात्र अपने युग की समस्याओं की ओर संकेत करते हुए कहानी के उद्देश्य को पूरा करते हैं इसीलिए पात्र चरित्र-चित्रण का स्थान रहता है। कहानी में विशेष यह कहानी घटना प्रधान कहानी है और कहानी का मुख्य पात्र है टेपचू।

कहानीकार उदय प्रकाश बार-बार इस बात की पुष्टि करना चाहते हैं कि टेपचू महज एक कहानी नहीं है बल्कि उनके जीवन की एक हैरतअंगेज कहानी है। यदि कोई कहानी के मुख्य पात्र टेपचू से मिलना चाहे तो लेखक कभी-भी, कहीं-भी उसे टेपचू से मिलवा सकते हैं।

'टेपचू' कहानी में अनेक पात्र हैं मसलन अब्बी, अब्बी की दी पत्नियाँ, मुखिया बालकिशन सिंह, चौधरी किशन पाल सिंह, राधे, संभारू, बालदेव, परमेसुरा, लट्ठबाज मदना सिंह, दारोगा, करीम बख़्श, सिपाही तूफ़ानी सिंह, सिपाही गजाधर शर्मा, डॉक्टर एडविन वर्गिस आदि। परन्तु इन सभी में मुख्य किरदार निभा रहा है टेपचू और टेपचू के जीवन में घटित होने वाली विभिन्न घटनाओं में ये सभी गौण पात्र अपनी अहम् भूमिका निभा रहे हैं।

टेपचू उर्फ़ अल्ला बख़्श, फिरोजा और अब्दुल्ला बख़्श का इकलौता पुत्र है। जब वह महज दो वर्ष का था तभी उसके पिता अब्दुल्ला बख़्श की मौत हो जाती है। पिता की मृत्यु के बाद उसकी माँ अपने दो वर्षीय बेटे टेपचू को पुरानी गंदी साड़ी में लपेटकर अपने पेट पर बाँध कर गाँववालों की मजदूरी करती है, रात-दिन परिश्रम करती है तब कहीं जाकर एक वक्त बासी -रूखी रोटी मुयस्सर होती है। कुछ ही वर्षों में उसकी और बेटे टेपचू की जिन्दगी बद से बदतर हो जाती है। जब टेपचू सात आठ साल होता है तो उसकी जिन्दगी में अनेक ऐसी घटनाएँ घटित होती हैं जिसमें वह मौत के मुँह में से वापस लौट आता है। पहली घटना उस भूतहा बगीचे में घटित होती है जिसमें टेपचू भूत-जिन्न की बिना परवाह किए अपनी लू से ग्रसित माँ के लिए कच्चे आम तोड़ने जाता है, दूसरी घटना उसके जीवन में तब घटित होती है जब वह भूख से बेहाल होकर कमलगट्टे लाने के लिए खतरनाक तालाब में लगभग डूब गया होता है पर पुन: परमेसुरा की वजह से बाल-बाल बच जाता है। तीसरी बड़ी घटना ताड़ी के पेड़ से गिरने वाली है जब उसकी हाथों को नाग ने जकड़ लिया था घायल अवस्था में उठकर साहसी टेपचू ने साँप को मारकर अपनी जान बचा कर भाग खड़ा हुआ था तभी गाँव वालों को यकीन हो जाता है कि टेपचू आदमी नहीं बल्कि जिन्न है वह मर

नहीं सकता । उसके जीवन की चौथी बड़ी घटना तब की है जब एम.एल.ए. चौधरी किशनपाल सिंह के गुंडे उसे मार कर मरा हुआ समझकर सोन नदी में फेंक देते है और वह पुन: एक बार बच जाता है और चौधरी की पुआल में आग लगाकर बैलडिला में आकर मजदूरी करने लगता है और कुछ ही दिनों में सबका चहेता बन जाता है। व्यवस्था के खिलाफ अपनी आवाज बुलन्द करके गरीबों, मजदूरों के हक की लड़ाई लड़ता है। टेपचू ने अपने जीवन में इतना दुर्व्यवहार, दुराचार, अन्याय सहा है कि परिस्थितियों ने उसे निडर, निधड़क और मुँहफट बना दिया है।

अब वह भली-भाँति समझ चुका है समाज का ऊपरी तबका मात्र गरीबों मजदूरों किसानो का शोषण करने अन्याय अत्याचार करने के लिए बना है और यही लोग समाज के निम्न तबके पर राज कर रहे हैं, शासन कर रहे हैं। ऐसे लोगों से उसे सख्त घृणा है नफरत है। उसके जीवन की तमाम विषम परिस्थितियों ने उसे इतना बैखौफ बना दिया है कि वह दारोगा को नंगाकर, मार-पीट कर उन्हें लहुलुहान करके उनका जुलूस निकालता है। सिपाही गजाधर शर्मा के ऊपर पेशाब कर देता है। उसका प्रतिशोध पुलिस उसे भी नंगा करके मीलों सड़क पर घसीटते हुए निकालती है और अंत में उसका इनकाउन्टर करके पेड़ से उसकी लाश टांग देती है और पूरे शहर में हिन्दू मुसलमानों के बीच दंगा फैला देती है।

टेपचू के जीवन में पाँचवाँ आश्चर्य तब होता है जब पोस्टमार्टम करने वाले डॉक्टर एडविन से टेपचू स्वयं को बचा लेने की गुहार करता है।

इस प्रकार 'टेपचू' कहानी के माध्यम से स्पष्टत: देखा जा सकता है कि टेपचू एक बहुत साहसी, निडर, मुँहफट, परिस्थितियों से कभी हार नहीं मानने वाला, कड़ी मेहनत और संघर्ष करने वाला आम आदमी है जो कहानी में मजदूर वर्ग, निम्न वर्ग का प्रतिनिधित्व करता है। वह व्यवस्था से हार मानना नहीं जानता अपितु उससे मरते दम तक संघर्ष करने की हिम्मत रखता है। वह अपने अधिकारों के प्रति पूरी तरह से सजग है और परिस्थितियों से लड़कर उन्हें लेने का माद्दा रखता है।

४.५ देशकाल-वातावरण और परिस्थितियाँ

'टेपचू' कहानी में देशकाल-वातावरण और परिस्थितियों का बड़ा ही यथार्थ चित्रण किया गया है।

बिहार में स्थित मड़र गाँव, तहसील सोहागपुर, थाना जैतहरी सोन नदी के किनारे स्थित है। यह गाँव सोन नदी से मात्र एक-दो फर्लांग की दूरी पर स्थित है। गाँव की औरतें सुबह खेतों में जाने से पहले और शाम को वहाँ से लौटने के बाद सोन नदी से ही घरेलू काम-काज के लिए पानी भरती हैं। ये औरतें कभी थकती नहीं, लगातार काम करती रहती हैं।

गर्मियों के दिनों में सोन नदी में पानी इतना कम रहता है कि आदमी का धड़ भी नहीं भीगता, इसलिए डुबकियाँ लगाने के लिए पानी गहरा करने के लिए नदी के

भीतर बालू को अंजुलियों से, पैरों से सरका-सरकाकर कुइयाँ बनानी पड़ती है। इसी कुइयाँ में बरसात के दिनों में डूब कर टेपचू के पिता अब्बी की मौत हो जाती है।

गाँव में मुसलमानों की बस्ती चमारों की बस्ती से कुछ हटकर स्थित है जिसमें तीन-चार घर मुसलमान रहते हैं। ये लोग मुर्गियों, बकरियाँ पालकर गोश्त का धंधा करते हैं, खेतों में मजदूरी करते हैं, छोटे-छोटे कस्बों में सड़क बनाने, सड़क पर डामर बिछाने, कोयले के खदानों से लेकर कल कारखानों में मजदूरी का काम करते हैं।

गाँव का मुखिया का बगीचा, बाद में भुतहा बगीचा गाँव के जवान लड़के लड़कियों के मिलने का अड्डा है जहाँ अकसर हर साल लावारिश नवजात बच्चा बरामद होता है। यह बगीचा एक तरह से ऐयाशी का अड्डा बन चुका है।

गाँव में एक गंदा तालाब भी है जिसमें ढेरों जंगली पौधे, कमलगट्टे जलकुम्भी आदि उगे हुए हैं मछलियाँ भी हैं।

कहानी 'टेपचू' में चित्रित गाँव का यह छोटा-सा चित्र भारत के किसी भी गाँव को चित्रित कर सकता है जहाँ हमें अब्बी-फिरोजा और टेपचू जैसे चरित्र अवश्य मिल जाएँगे।

कहानी में दर्शाया गया है कि भिन्न-भिन्न जाति-धर्म-सम्प्रदायों के होने के बावजूद हमारा समाज मुख्यत: दो हिस्सों में विभाजित है शोषक वर्ग और शोषित वर्ग। शोषक वर्ग दिन-रात यही षडयंत्र रचता है कि गरीबों का कैसे उत्पीड़न किया जाए। सन् १९७८ में भारत के कल कारखानों की स्थिति अत्यन्त नाजुक थी। विदेशी कंपनियों से माँग कम हो जाने के कारण यहाँ के उत्पादन को जबरदस्त झटका लगा। तमाम सरकारी और प्राइवेट कंपनियों ने मजदूरों की छँटनी आरंभ कर दी। मजदूर यूनियन के इस माँग पर कि पहले उनके लिए किसी दूसरे काम का इंतजाम किया जाये, तब छँटनी की जाए, किसी ने तनिक भी ध्यान नहीं दिया। लेखक से मिलने पर टेपचू उनसे कहता है-''दस हजार मजदूरों को भुक्खड़ बना कर ढोरों की माफिक हाँक देना कोई हँसी-ठठ्ठा नहीं है। छँटनी ऊपर की तरफ से होनी चाहिए। जो पचास मजदूरों के बराबर पगार लेता हो, निकालो सबसे पहले उसे, छाँटो अजमानी को पहले।'' इस तरह यह घटना टेपचू और दस हजार मजदूरों की जिन्दगी में ही नहीं घटित हुई थी बल्कि टेपचू और मजदूरों जैसे लाखों-करोड़ों की जिन्दगी नरक से भी बदतर बन चुकी थी। तमाम कंपनियों पर ताला जड़ा जा चुका था, हजारों हजार मजदूर अपनी झुग्गियों में बैठकर दाने दाने को मोहताज हो गए थे।

पुलिसवाले उन्हें न्याय दिलाने के बजाय उन्हें समाज का दुश्मन समझ बैठे थे। जिसके पास पैसा था उसी के पास पुलिस बल भी था। आम नागरिकों के सुख-दुख से, उनके अधिकारों की लड़ाई से किसी का कोई वास्ता नहीं था। पुलिसवालों को जैसे समझ में आया कि टेपचू एक मुसलमान है उन्होंने तुरन्त उसका इनकाउन्टर करके सारा दोष हिन्दू मजदूरों के ऊपर लगा दिया। जिसके कारण चारों तरफ दंगा भड़क गया। स्थिति यहाँ तक पहुँच गई कि दूसरे राज्यों से पुलिस मँगानी पड़ी। लेकिन प्रश्न

यह उठता है कि वास्तव में मुजरिम कौन था टेपचू या पुलिसवाले, जिसने दंगा फैलाया। बाँटो और राज करो की अंग्रेजों की इस नीति को पुलिसवालों ने भी अख्तियार किया। मजदूरों को जाति-धर्म-सम्प्रदाय में बाँट कर उन्हें आपस में लड़वाकर मजदूरों के यूनियन को बुरी तरह से तोड़ दिया। अंततः जीत कंपनी के मालिकों की हुई, जिनसे पुलिसवालों की 'अच्छी-खासी कमाई' हुई होगी। मजदूर यूनियन खंड-खंड होकर बिखर गया। मजदूरों-श्रमिकों के जीवन में व्याप्त इन तमाम मुद्दों को कहानी में अत्यन्त सूक्ष्मता से उकेरा गया है।

'टेपचू' कहानी में सवर्ण पंडित भगवानदीन टेपचू के साथ जो दुर्व्यवहार करता है वह अन्याय, अत्याचार आज भी हमारे समाज में व्याप्त है। कम-से कम तनख्वाह में अधिक से अधिक काम लेने की प्रवृत्ति कई बार इंसान को हैवान बनाकर रख देती है और इस तरह की परिस्थितियाँ टेपचू जैसे पात्रों को संघर्षशील, उद्यमशील और हिम्मती बना देती है इसमें भी कोई शक नहीं है।

कहानी में दर्शाया गया है हर तरह का दो नंबर का धंधा करने वाला चौधरी किशन पाल सिंह जो कि चरित्र से भ्रष्ट, धोखेबाज और एक नंबर का धूर्त है वह मुखिया है परन्तु गाँव वालों से पैसे ले लेकर उन्हें ताड़ी का नशेड़ी बनाकर रख देता है। गाँव या गाँव वालों के विकास से उसका कोई वास्ता नहीं, उसे तो सिर्फ अपना स्वार्थ दिखता है। गाँव में आलीशान मकान फिर धीरे-धीरे उसका एम.एल.ए.बन जाना उसके पैसे और ताकत दोनों को दर्शाता है।

कहानी में एक बात और गौरतलब है कि ईश्वर जिसे बचाना चाहता है वह तमाम विपरीत परिस्थितियों में भी बच जाता है। एक कहावत भी इससे जुड़ी कि 'जाको राखे साईयां मार सकै ना कोई' जिसका कहानी में प्रत्यक्ष प्रमाण टेपचू है और जिसकी मौत आ गई उसे भी कोई नहीं बचा सकता इसका प्रमाण टेपचू का पिता अब्बी है जो कमरभर पानी में ही डूब कर मर जाता है और उसकी लाश भी किसी को नहीं मिल पाती है।

इस प्रकार, 'टेपचू कहानी देशकाल-वातावरण और परिस्थितियों की दृष्टि से देखने पर अत्यन्त प्रामाणिक रचना सिद्ध होती है। गाँव के परिवेश का चित्रण बिल्कुल विषयानुकूल है। टेपचू की कथा उसके जीवन की हैरत अंगेज सच्चाई अवश्य है परन्तु वह कहीं से भी अतिश्योक्तिपूर्ण नहीं प्रतीत होती। सन् १९७९ में गाँव की, कल कारखानों में मेहनत मजदूरी करने वाले मजदूरों, किसानों की जो स्थिति थी आज २०१७ में भी उनकी दशा में कोई विशेष परिवर्तन नहीं आया है।

४.६ 'टेपचू' कहानी का उद्देश्य

'टेपचू', कहानी के लेखक उदय प्रकाश की उन रचनाओं में से एक है जिससे वे अत्यन्त गहराई से जुड़े हुए हैं।

इस कहानी के माध्यम से लेखक ने ग्रामीण समाज में व्याप्त अनेकानेक विकटतम परिस्थितियों का अत्यन्त सूक्ष्म-अवलोकन करते हुए यह स्पष्ट किया है कि चाहे वह शहर हो या गाँव-देहात हो, सर्वत्र पैसे-रूपए से संपन्न धनाढ्य लोगों का बोलबाला है। चाहे वह गाँव का मुखिया चौधरी किशन पाल सिंह हो, पंडित भगवान दीन हो या फिर शहरों में बड़ी-बड़ी मिल कारखानों के मालिक हों या फिर पुलिसवाले हो या राजनेता हों, सबकी जाति-बिरादरी एक है, उनका काम एक है गरीबों-मजदूरों-किसानों का शोषण करना, उन्हें कुत्तों से भी या फिर कहें कीड़े-मकोड़ों से भी बदत्तर जिन्दगी जीने पर मजबूर करना, अपने प्रति हुए दुर्व्यवहार के प्रति विरोध जताने या विद्रोह करने पर उन्हें मौत की घाट उतार देना।

यह कहानी इस उद्देश्य की ओर इंगित करती है कि अपनी स्वार्थ पूर्ति हेतु ये सभी भ्रष्ट शोषक वर्ग चोर-चोर मौसेरे भाई बने रहे हैं अपनी एकता बनाए रखते हुए मजदूरों-श्रमिकों-किसानों को जाति-पाँति-धर्म-सम्प्रदाय में बांट कर, उन्हें आपस में लड़वा-भिड़वा मरवा कर अपना उल्लू सीधा करते रहते हैं और सीधा-सादा श्रमिक वर्ग उनकी इस चालाकी और धूर्तता को समझ ही नहीं पाता है।

टेपचू कहानी में ग्रामीण समाज के निम्न तबके के जीवन में व्याप्त अनेक समस्याओं को दर्शाना भी कहानी का मुख्य उद्देश्य है।

टेपचू के पिता अब्बी की मृत्यु के बाद उसकी माँ फिरोजा के जीवन में तूफान आ जाता है। सबसे पहले तो यह कि घर कैसे चलेगा। अपने और अपने बेटे का पेट भरने के लिए वह गाँव के बड़े घर के लोगों का अनाज फटकती है, उनके खेतों-बगीचों की रखवाली करती है, झाडू-बुहारू करती है, ढेंकी कूटती है, सोन नदी से पानी के मटके भर-भर के ढोती है, खेतों में मजदूरी करती है अपनी एक बकरी की देखभाल के साथ-साथ अपने घर का भी कामकाज करती है। यह सारा काम वह अपने दो वर्ष के बेटे टेपचू को एक साड़ी के माध्यम से पेट पर बाँध कर करती है। ऊपर से उसे जवान अकेली विधवा समझकर गाँव के मनचले उस पर गिद्ध दृष्टि डाले रहते हैं, उनसे स्वयं को बचाती है। अपने इकलौते बेटे को आवारा बनने से बचाने के लिए पंडित भगवान दीन से गिड़गिड़ा कर उनके यहाँ उसे काम पर रखवाती है परन्तु वहाँ उसका शोषण देखकर अपने बेटे टेपचू से काम छोड़ देने की जिद्द भी करती है।

इन तमाम समस्याओं के माध्यम से लेखक निम्न वर्गीय जीवन में व्याप्त अनेक समस्याओं की ओर हमारा ध्यान खींचना चाहते हैं, मजदूर-वर्ग, निम्न वर्ग के लोगों का शोषण करने वाले धूर्त चालाक लोगों को आगाह करना चाहते हैं, जागरूक बनाना चाहते हैं उन्हें अपने अधिकारों के प्रति सजग बनाने के साथ-साथ निडरता से उनका सामना करने की हिम्मत प्रदान करना चाहते हैं यही इस कहानी का मुख्य उद्देश्य है।

४.७ संदर्भ सहित व्याख्या का एक उदाहरण :

''आप स्वीकार क्यों नहीं कर लेते कि जीवन की वास्तविकता किसी भी काल्पनिक साहित्यिक कहानी से ज्यादा हैरत अंगेज होती है।''

संसदर्भ :

प्रस्तुत अवतरण हमारी पाठ्य पुस्तक 'प्रतिनिधि दस कहानियाँ' के 'टेपचू' नामक कहानी से उद्धृत है। इसके लेखक उदय प्रकाशजी हैं। उदय प्रकाश एक सफल कहानीकार हैं।

प्रसंग :

इनके इस कहानी में ग्रामीण जीवन में व्याप्त तमाम विसंगतियों-विकृतियों और विडंबनाओं को दर्शाया गया है।

व्याख्या :

प्रस्तुत अवतरण में कहानीकार उदय प्रकाश कहते हैं कि टेपचू की कहानी सिर्फ एक कहानी नहीं है। कभी-कभी सच्चाई कहानी से भी ज्यादा हैरतअंगेज होती है। दरअसल टेपचू कहानी में टेपचू का जो व्यक्तित्व है वह गाँव-समाज में रहने वाले उद्यमशील संघर्षशील श्रमिक वर्ग का प्रतिनिधित्व करता है। टेपचू बचपन से ही मुसीबतों का सामना करता है। कभी वह माँ को बचाने के लिए भूतहा बगीचे में जाने से नहीं हिचकिचाता है तो कभी स्वयं की भूख और नींद जैसी जरूरतों को पूरा करने के लिए पंडित भगवान दीन के यहाँ दिन-रात खटते हुए बड़ी समझदारी से अपने आपको बचाता है पर एक दिन उसका आक्रोश उस पर भारी पड़ जाता है। दिन-रात खटने वालों का जीवन बद से बदतर बना रहता है जबकि लूट-भ्रष्टाचार-कालाबाजारी करने वाला चौधरी किशन पाल सिंह तरक्की पर तरक्की करता है। टेपचू मुसीबतों का सामना करते-करते बार-बार मौत के मुँह से निकल आता है पर विषम से विषम परिस्थितियों में भी उसका हौसला पस्त नहीं होता, वह हार नहीं मानता।

कहानी में टेपचू के पिता अब्बी का चरित्र भी हमें अपने गाँव समाज में आस-पास दिख ही जाता है जो कि रसिक मिजाजी, फैशनबल होने के साथ-साथ गवैया भी बनना चाहता है और एकाध कव्वाली सीखकर लोगों को सुनाकर उसी से अपने परिवार का भरण-पोषण करता है। उसकी सुन्दर पत्नी एक दर्जी के साथ भाग जाती है तो वह इसका फायदा भी बखूबी उठाना जानता है। हमारे समाज में अब्बी की दूसरी पत्नी फिरोजा जैसे चरित्र गाँव-गाँव में, गली-गली में भरी पड़ी हैं जिनकी जिन्दगी में कठिन श्रम और विकट संघर्ष के अलावा और कुछ नहीं है।

समाज उच्च वर्ग-निम्नवर्ग, शोषक-शोषित विभिन्न जाति-धर्म में इस कदर बँधा है कि कुछ लोग अपने फायदे के लिए समाज में कुछ भी कर सकते हैं, दंगे-फसाद करवा सकते हैं, जरूरतमंदों को दबा-कुचल सकते हैं तो इसी समाज में टेपचू

जैसे लोग भी रहते हैं जो किसी भी कीमत पर अपने हक की लड़ाई लड़ना जानते हैं व्यवस्था के खिलाफ विद्रोह करना जानते हैं और विषम परिस्थितियों का सामना मरते दम तक करते हैं।

इन तमाम बातों को लेखक उदय प्रकाश ने इस कहानी में बड़ी सूक्ष्मता से रखा है। इसलिए वे कहते हैं कि कई बार इंसान के जीवन की वास्तविकता किसी भी काल्पनिक साहित्यिक कहानी से ज्यादा हैरतअंगेज होती है।

विशेष : प्रस्तुत कहानी में लेखक की मार्क्सवादी विचारधारा को स्पष्टत: देखा जा सकता है जब वह टेपचू के माध्यम से कहता है दस हजार मजदूरों को भुक्खड़ बना कर जानवरों की तरह हाँक देना कोई हँसी-मजाक नहीं है। छाँटनी ऊपर से होनी चाहिए। जो पचास मजदूरों के बराबर पगार लेता हो पहले उसे छाँटना चाहिए। कहानी में लेखक तमाम हक की लड़ाई के मुद्दे को हमारे समक्ष रखता है।

संदर्भ सहित व्याख्या हेतु अन्य अवतरण :

१. ''डॉक्टर साहब, ये सारी गोलियाँ निकाल दो। मुझे बचा लो। मुझे इन्हीं कुत्तों ने मारने की कोशिश की है।''

२. ''दस हजार मजदूरों को भुक्खड़ बनाकर ढोरों की माफिक हाँक देना कोई हँसी-ठठ्ठा नहीं है।''

३. ''छाँटनी ऊपर से होनी चाहिए। जो पचास मजदूरों के बराबर पगार लेता हो, निकालो सबसे पहले उसे।''

४. ''कागज पत्तर पर हाथ मत लगाना दारोगाजी, हमारी ड्यूटी आज यूनियन की तकवानी में है। हम कहे दे रहे हैं। आगा-पीछा हम नहीं सोचते, पर तुम सोच लो, ठीक तरह से।''

५. ''काका, मैंने अकेले लड़ाइयाँ लड़ी हैं। हर बार मैं पिटा हूँ। हर बार हारा हूँ। अब अकेले नहीं, सबके साथ मिलकर देखूँगा कि सालों में कितना जोर है।''

६. ''शाम को जब भैसं दुही जाने लगीं को छटाँक भर भी दूध नहीं निकला।''

७. ''पसीने, मेहनत, भूख, अपमान, दुर्घटनाओं और मुसीबतों की विकट धार को चीर कर वह निकल आया था। कभी उसके चेहरे पर पस्त होने, टूटने या हार जाने का गम नहीं उभरा।''

४.८ दीर्घोत्तरीय प्रश्न

१. उदय प्रकाश 'टेपचू' कहानी के माध्यम से क्या कहना चाहते हैं ? स्पष्ट कीजिए।

२. 'टेपचू' कहानी में चित्रित समस्याओं पर प्रकाश डालिए।

३. लेखक ने इस कहानी का शीर्षक 'टेपचू' क्यों रखा? सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।

४. 'टेपचू' कहानी का उद्देश्य लिखिए।

५. 'टेपचू' का चरित्र चित्रण कीजिए।

६. कहानी के तत्वों के आधार पर 'टेपचू' कहानी की समीक्षा कीजिए।

७. 'टेपचू' कहानी में निहित परिस्थितियों पर प्रकाश डालिए।

८. ''जीवन की वास्तविकता किसी भी काल्पनिक साहित्यिक कहानी से ज्यादा हैरतअंगेज होती है।'' लेखक उदय प्रकाश ऐसा क्यों कहते हैं? सोदाहरण लिखिए।

४.९ वस्तुनिष्ठ प्रश्न :-

१. अब्बी का पूरा नाम लिखिए। - अब्दुला बख़्श

२. टेपचू का पूरा नाम लिखिए। - अल्ला बख़्श

३. 'टेपचू' कहानी के लेखक का नाम लिखिए। - उदय प्रकाश

४. 'टेपचू' की माँ का क्या नाम था ? - फिरोजा

५. 'टेपचू' कहानी में किस गाँव का चित्रण है। - मड़र

६. गाँव के मजदूर मजदूरी करने के लिए कहाँ रहते हैं। - बैलाडिला

७. 'टेपचू' कहानी में बगीचे का पुराना नाम और नया नाम लिखिए।

पुराना नाम - मुखिया का बगीचा

नया नाम - भुतहा बगीचा

८. 'टेपचू' को किसने गोलियों से छलनी कर दिया ?- पुलिस ने

९. 'टेपचू' के शरीर में कौन सी गोलियाँ थीं? - थ्री नॉट थ्री की गोलियाँ

१०. 'टेपचू' को गाँववाले जिन्न क्यों कहते हैं?- कारण यह था कि 'टेपचू' बार-बार मरने की स्थिति में पहुँच कर भी जीवित हो उठता था इसीलिए सभी उसे जिन्न कहते हैं।

(नोट : इस प्रकार अन्य अनेक प्रश्न हो सकते हैं।)

४.१० टिप्पणी

१. अब्बी का चरित्र-चित्रण

२. फिरोजा का चरित्र-चित्रण

३. 'टेपचू' का व्यक्तित्व

४. 'टेपचू' कहानी का उद्‌देश्य

५. 'टेपचू' कहानी में चित्रित गाँव का वर्णन

६. 'टेपचू' की ताड़ी पीने की इच्छा वाली घटना का वर्णन

७. 'टेपचू' और कमलगट्‌टे की कहानी

८. पंडित भगवानदीन का चरित्र-चित्रण

९. पंडित भगवानदीन और टेपचू का संबंध

१०. 'टेपचू' कहानी की मुख्य समस्या

११. 'टेपचू' कहानी में चित्रित देशकाल और वातावरण

H H H

इकाई ४.१

४.१

प्रतिशोध – पुरुषोत्तम सत्यप्रेमी

इकाई की रुपरेखा

४.१ इकाई की रूपरेखा

४.१.१ 'प्रतिशोध' कहानी की कथावस्तु

४.१.२ चारित्रिक विशेषताएँ

४.१.३ देशकाल-वातावरण और परिस्थितियाँ

४.१.४ कहानी का उद्‌देश्य

४.१.५ संदर्भ सहित व्याख्या का एक उदाहरण

४.१.६ संदर्भ सहित व्याख्या हेतु अन्य अवतरण

४.१.७ दीर्घोत्तरीय प्रश्न

४.१.८ वस्तुनिष्ठ प्रश्न

४.१.९ टिप्पणी

४.१.१ 'प्रतिशोध' कहानी की कथावस्तु

पुरुषोत्तम 'सत्यप्रेमी' द्‌वारा रचित कहानी 'प्रतिशोध' एक अत्यन्त मार्मिक और संवेदनशील कहानी है। यह कहानी जाति प्रथा, वर्ण व्यवस्था में व्याप्त विसंगतियों का पर्दाफाश करती है।

ओंकारेश्वर के सुदूर एकान्त पहाड़ी प्रदेश में बसे लोगों का जीवन चारों तरफ से समस्याओं से घिरा है। जिसमें आवागमन के साथ-साथ वर्ण-भेद की समस्या अपने विकराल रूप में है, फिर भी यहाँ के लोग जंगल में मंगल करते हैं, मेहनत मजदूरी करके हर हालात में खुश रहने की कोशिश करते हैं। इनके सीढ़ीनुमा खेतों पर लहराती सोयाबिन और धान की फसल सबके मन को मुग्ध कर लेती है।

शासन ने गाँव के चहुँमुखी विकास पर जोर दिया है। हरिजनों को बराबरी का हक दिलाने और छुआछूत मिटाने के लिए संसद और विधानसभा ने कानून तो पारित कर दिया है परन्तु इस कानून से लोगों की मानसिकता नहीं बदली जा सकती है। पहले से थोड़ा बहुत परिवर्तन अवश्य हुआ है परन्तु कई बार हमारे राजनेता ही ऐसा नहीं चाहते हैं। वे राजनीतिक स्वार्थ के कारण बार-बार हरिजनों, दलितों और आदिवासियों को मोहरा बनाते हैं और समाज में अशान्ति, फैलाते हैं।

'प्रतिशोध' कहानी का केन्द्रस्थल कासेल गाँव है। इस गाँव में हरिजनों के लिए अलग कुएँ हैं और सवर्णो के लिए अलग गहरे-गहरे कुएँ बने हैं। गर्मियों में हरिजनों के कुएँ सूख जाते हैं तो उन्हें गाँव के गंदे तालाब का गंदा पानी पीने के लिए मजबूर होना पड़ता है। जिस पानी को सवर्णों के जानवर तक नहीं पीते वह पानी हरिजनों को पीना पड़ता है।

गाँव के हरिजन आदिवासियों के सहारे ही गाँव में खेती होती है। ये लोग सवर्णों की खेतों में मजदूरी करने के अलावा और कर भी क्या सकते थे? सभी लोग इस उधेड़ बुन में थे कि इन शवों का क्या किया जाए।

इतना सबकुछ हो गया परन्तु गाँव के सवर्णो के कानों पर जूँ तक नहीं रेंगी। कोई भी सवर्ण उन्हें सांत्वना या दिलासा देने नहीं आया। मानों वे दूर से रावण-दहन का आनन्द उठा रहे थे। हालाँकि कासेल गाँव की आदिवासी हरिजन बस्ती के आग में जलकर राख होने की खबर आस-पास की सारी आबादी में फैल गई थी।

आदिवासी हरिजन बस्ती आबादी से कटा हुआ था जिसमें पच्चीस-तीस परिवार रहते थे। उनके लिए अलग कुआँ था। पाठशाला के नाम पर एक आदिवासी शिक्षक पच्चीस किलोमीटर दूर से आकर नीम की छाया में इनके बच्चों को स्वर-व्यंजन-गिनती- वगैरह पढ़ा जाता था । बस्ती का ही तीसरी कक्षा पास था भावर्या, जिसको पंच चुन लिया गया था, जो रात-दिन पंचायत के लोगों की सेवा में ही लगा रहता था। अनेक बार इस बस्ती में उसके दर्शन-दुर्लभ हो जाते थे तो कभी-कभी वह नेताजी के साथ ही आता था।

आदिवासी हरिजन ईश्वर के प्रति आस्थावान तो थे ही साथ ही अंध-विश्वासी भी थे। उन्हीं में से एक था भगीरथ। भगीरथ की पत्नी और पाँच दिन पहले जन्मा बच्चा दोनों जलकर राख बन चुके थे उस वक्त वह अपनी ही बस्ती के पंच थावर्या के साथ जनपद पंचायत ऑफिस में गया। इस अनहोनी घटना से वह अपना होश-हवास खो बैठा था। देवा और थावर्या अपना सब कुछ स्वाहा हो जाने के बावजूद भगीरथ को हिम्मत बँधाने की कोशिश कर रहे थे।

बस्ती का पंच थावर्या सरकारी सहायता के लिए सरपंच के पास गया, वहाँ कुछ सवर्ण लोग पहले से ही मौजूद थे। इस आग में एक कुम्हार का घर भी जल गया था। सवर्णो ने उसके सारे नुकसान का कारण आदिवासी-हरिजनों को ठहराया था। सवर्ण लोग कह रहे थे कि सरकार से सहायता पाने के लालच में आदिवासी-हरिजनों ने अपने घास-पात के कच्चे घरों में खुद ही आग लगा है और आग का शिकार वह कुम्हार परिवार भी हो गया था। उनकी बातें सुनकर थावर्या अचंभित हो गया। उसके शरीर का करंट एक झटके में शान्त हो गया। उसका हृदय पत्थर बन गया था। पत्थर या तो तिड़कता नहीं, पर जब तिड़कता है तो यह दरारों तक ही नहीं रह जाता उसके टुकड़े-टुकड़े हो जाते हैं। वह किसी तरह स्वयं को समेट कर उलटे पाँव बस्ती की तरफ लौटता है। उसके आँखों के सामने उसके अपने लोग जली हुई बस्ती में अलाव तापते नजर आ रहे हैं। बाहर की आग ठंडी हो चुकी है परन्तु

अंदर की आग अब धधक उठी है। अपने हृदय की धधकती ज्वाला को शान्त करने के लिए थावर्या का प्रतिशोध अपनी सारी सीमाएँ लाँघने को बेचैन था।

सरपंच, दो पुलिसवालों और गाँव के सवर्णों के साथ राख का ढेर बन चुकी आदिवासी हरिजन बस्ती का मुआयना कर रहे थे। किशोरी लाल सुनार की आँखें उन अधमरे आदिवासी हरिजनों के बीच देवा और छीतर्या को तलाश रही थी। क्योंकि उनके अनुसार इन दोनों की बढ़ती राजनीतिक समझ ही इस अग्निकांड का कारण थी। उन्होंने इन दोनों को बुला भेजा और उन दोनों से यह कहा कि सरकार से पक्का मकान और जमीन पाने के लिए ही झोपड़ियों और टपरियों में उन दोनों ने आग लगाई थी। दोनों ने इस बात से इंकार किया। देवा ने अपने नहीं होने की बात कही तो छीतर्या ने बड़ी ईमानदारी से सारी घटना का आँखों देखा हाल सुनाते हुए कहा--''माई-बाप इसमें जरा भी झूठ नहीं है। पिछले साल तो चद्दर बच भी गए थे।'' किंतु इस साल इस ढेर को देखो, आग देवता ने एक कील भी बाकी नहीं छोड़ी है। घर का सारा सामान पोटलियों में बँधा था, वे भी राख का ढेर हो गई। धान, मक्का और ज्वार का एक दाना भी नहीं बचा।''

गाँव की आबादी के साथ-साथ थावर्या, देवा और छीतर्या भी सरपंच के षडयन्त्र को अच्छी तरह से समझने लगे थे। उन्होंने कई बार देखा था कि सरकारी सहायता के नए चद्दर और बाँस-बल्लियों से सरपंच के पालतू जानवर बाँधने का बाड़ा कच्चे मकान के रूप में खड़ा हो गया था और क्विंटलों गेहूँ-शक्कर से सत्यनारायण भगवान की कथा का प्रसाद आस-पास के गाँव वालों का निवाला बना था लेकिन इन बड़े-बड़े दिग्गज लोगों का विरोध करने की हिम्मत किसी में नहीं थी। थावर्या भी सबकुछ समझता था लेकिन वह भी हाँ में हाँ मिलाने के सिवाय और कुछ नहीं कर सकता था। इन्हीं सरपंच के चुनाव के समय उसे अपनी ही बस्ती में सात-आठ दिन के लिए नजरबंद कर दिया गया था ताकि सरपंच अपनी मनमानी मुराद पूरी कर सके।

सरपंच ने पुलिस वाले की ओर इशारा करते हुए कहा—'' देवा और छीतर्या तुम दोनों इस गुनाह को कबूल कर लो, अन्यथा पुलिस तुम्हारी चमड़ी उधेड़ लेगी। तुम्हीं लोगों ने इस कुम्हार से बदला लेने के लिए इसके घर में आग लगाई। वही आग तुम्हारे झोपड़ों और टपरियों को भी राख बना गई।'' (पृष्ठ-९८, प्रतिशोध) सरपंच की बातें सुनकर देवा ने काँपते लड़खड़ाते आवाज में उनसे कहा कि ''हुजूर, यह झूठ है। पिछले साल हमारे कुएँ का पानी सूख गया था, मेरी बच्ची बीमार थी, उसको दवा पिलाने के लिए मैं पानी लेने सवर्णों के कुएँ पर गया था, इस कुम्हरवा ने मुझे देख लिया था। मैंने इस कुम्हरवा से माफी माँग ली थी और बदले में इसने मेरा दो बीघा खेत भी ले लिया था। इस आग का उस घटना से कोई संबंध नहीं है।'' (पृष्ठ-९८, प्रतिशोध) छीतर्या ने उसका अनुमोदन किया। परन्तु सरपंच उसकी एक नहीं सुनता वह उनसे कहता है कि सरकार सरपंच से पूछती है कि कासेल गाँव की बस्ती में हर साल आग क्यों लगती है? हम सहायता नहीं देगें। कारण जानना सरपंच का काम हैं सरकार का नहीं।

तुम दोनों इस बार इस अपराध को स्वीकार कर लो कि तुम्हीं दोनों ने इस आग को लगाया है, इस बर्बादी में तुम दोनों का हाथ है। यदि वे दोनों यह गुनाह कबूल कर लेंगे तो ''तुम्हारे सारे अपने लोगों को हम ग्राम पंचायत की ओर से मकान बनवा देंगे और प्रत्येक परिवार को पाँच-पाँच एकड़ जमीन दिलवा देंगे। तुम्हारा अलग से गहरा कुआँ खुदवा देंगे, किन्तु तुम लोग इस आग का कारण बन जाओ। बच्चों की चिन्ता मत करो, उन्हें ढोर चराने के लिए मैं अपने यहाँ ही रख लूँगा।''--(पृष्ठ ९९, प्रतिशोध)

सरपंच के बहकावे में बस्ती के आदिवासी हरिजन आ गए क्योंकि उन्हें अपने मकान और खेतों के मालिकाना हक की चाहत थी। इसके लिए उन्होंने अपने ही दो भाइयों को बलि का बकरा बना दिया और देवा और छीतर्या की तरफ से बस्ती वालों ने स्वयं ही उन दोनों के गुनाह को मंजूर कर लिया जो कि देवा और छीतर्या ने किया ही नहीं था । सरपंच ने गाँव के सवर्णों का दिल जीत लिया और राजनीतिक चेतना की मशाल को फिर अँधकार में फेंक दिए जाने के सफलता पर गर्व किया था। देवा और छीतर्या इन सबको अँगूठा दिखाकर भाग जाना चाहते थे परन्तु उनके डरपोक मन में उन्हें आज्ञा नहीं दी। परन्तु थावर्या भाग रहा था। उसे लग रहा था कि मौत का काला साया उसे दबोचने के लिए आ पहुँचा था इतना तेज वह कभी नहीं भागा था।

आधी रात बीतते-बीतते सरपंच के मकान और कुछ ठाकुरों के मकानों में आग की लपटें आसमान छूने लगी थीं। चारों तरफ हाहाकार मच गया। बैलगाड़ियाँ कुओं से पानी ला रही थीं और आग बुझाने की पूरजोर कोशिश की जा रही थी। परन्तु भगीरथ आग की लपटों को देखकर आनंदित होकर तालियाँ बजा रहा था। सवर्णों के घरों की आग, उसके हृदय में धधकती प्रतिशोध की ज्वाला को सुकून प्रदान कर रही थी।

कहानी यहीं समाप्त हो जाती है।

४.१.२ चारित्रिक विशेषताएँ

थावर्या का चरित्र चित्रण

ओंकारेश्वर के सुदूर एकान्त पहाड़ी पर स्थित कासेल गाँव की आबादी से कटा हुआ हिस्सा आदिवासी हरिजन बस्ती था, जिसमें लगभग पच्चीस-तीस परिवार ही रहते थे। उनके लिए अलग कुआँ था। पाठशाला के नाम पर एक आदिवासी शिक्षक पच्चीस किलोमीटर दूर स्थित गाँव से आकर नीम के पेड़ की छाया में पाँच दस आदिवासी लड़कियों को स्वर-व्यंजन गिनती वगैरह पढ़ा जाता था।

थावर्या इसी आदिवासी हरिजन बस्ती का पंच था। वह तीसरी पास था। राजनीतिक समझ रखता था, इसीलिए पंचायत के लोगों की सेवा करने से उसे फुर्सत नहीं मिलती थी कि वह गाँववालों के बीच रह सके। कभी-कभी तो वह नेताजी

के साथ ही बस्ती में आता था, जिससे बस्ती के लोग दूर से ही उसे प्रणाम करने लगते थे और सबके जयजयकार से आसमान गुँजायमान हो जाता था।

कासेल गाँव की आदिवासी हरिजन बस्ती में जब भीषण आग लगी और बस्ती में रहने वाले लोगों का सबकुछ जलकर स्वाहा हो गया तो थावर्या का हृदय काँप उठा। उसकी आँखों में बस्ती के राख होने का दृश्य लगातार घूम रहा था। उसका शरीर मानों बिजली के करंट सा गतिमान था। बस्तीवालों को तुरंत सरकारी सहायता प्रदान करने के उद्देश्य से वह सरपंच के पास गया। वहाँ कुछ सवर्ण लोग पहले से ही मौजूद थे। एक कुम्हार का घर भी जल कर राख हो गया था जिसका पूरा दोष उन लोगों ने आदिवासी हरिजनों पर मढ़ दिया।

उनका कहना था कि सरकार से सहायता पाने के लालच में आदिवासी हरिजन ने अपने घासपात के कच्चे घरों को स्वयं ही आग लगा दिया और उसी आग में कुम्हार का घर भी जल गया।

यह सब सुनकर थावर्या के शरीर का करंट एक ही झटके में शान्त हो गया। वह अपने शरीर को छू कर देखता है कि उसमें स्पंदन शेष बचा भी है या नहीं। वह उनकी बातें सुन कर एकदम अवाक रह गया कि कोई अपनों को भला खोकर कैसे सरकारी मदद की चाहत रख सकता है। उसका हृदय पत्थर हो गया था। अपने को किसी प्रकार समेट कर डगमगाते कदमों से बस्ती की तरफ लौट आता है। बस्ती आग व राख की ढेर थी, उसके अपने लोग अलाव तापते नजर आ रहे थे। बाहर की आग ठंडी हो रही थी परन्तु थावर्या के अंदर की आग प्रतिशोध लेने के लिए धधक रही थी।

थावर्या ने जब यह देखा-सुना कि पुलिस-सरपंच और गाँव के सवर्णों ने मिलकर इस पूरे अग्निकांड का दोषी देवा और छीर्या का बना दिया है और उन दोनों को जबरन यह गुनाह कबूलने के लिए मजबूर कर रहे हैं। उस सरपंच, सवर्ण और पुलिसिया ताकत ने मिलकर आदिवासी हरिजनों को पक्के मकान और पाँच-पाँच एकड़ जमीन का प्रलोभन देकर एक बार पुनः अपनी जीत सुनिश्चित कर ली, गाँव के सभी सवर्ण संतुष्ट हो गए और वे आदिवासी हरिजनों के साथ एक बार पुनः धूर्तता करने में सफल हो गए हैं। थावर्या यह सबकुछ देखसुन कर काफी तेजी से कहीं भागता है और आधी रात होते-होते गाँव के सवर्ण सरपंच और कुछ ठाकुरों के मकानों से आग की लपटें आसमान छूने लगती हैं। चारो ओर हाहाकार मचा है परन्तु थावर्या के प्रतिशोध की अग्नि शांत हो जाती है।

४.१.३ देशकाल-वातावरण और परिस्थितियाँ

'प्रतिशोध' कहानी पुरुषोत्तम 'सत्यप्रेमी' द्वारा रचित आदिवासी विमर्श की कहानी है जिसमें सवर्ण लोगों द्वारा आदिवासी हरिजनों के प्रति हुए अन्याय को अत्यन्त मार्मिकता के साथ दर्शाया गया है।

'प्रतिशोध' कहानी का केन्द्रस्थल कासेल गाँव है जो कि ओंकारेश्वर के सुदूर एकान्त पहाड़ी प्रदेश में बसा हुआ है। यहाँ के लोगों का जीवन आवागमन के साथ-साथ अन्य तमाम समस्याओं से घिरा हुआ है, फिर भी लोग जंगल में मंगल करने की कहावत को चरितार्थ करते हैं। यहाँ सीढ़ीनुमा खेतों में सोयाबीन और धान की लहलहाती हरियाली का सौन्दर्य मन मुग्ध कर लेता है।

प्रशासन ने गाँव के चहुँमुखी विकास की ओर पर्याप्त ध्यान दिया है परन्तु लोगों की मानसिकता को बदलना बड़ा मुश्किल कार्य है। गाँव में सवर्णों का अपना गहरा कुआँ है और गाँव के हरिजनों के लिए अलग कुआँ, आदिवासी हरिजनों का अपना कुआँ है। गर्मी के दिनों में हरिजनों और आदिवासी हरिजनों के कुओं की गहराई कम होने के कारण यह सूख जाता है। तब उनके सामने पानी का संकट गहरा जाता है। ऐसी परिस्थिति में वे गाँव के गंदे तालाब का पानी पीने के लिए विवश हो जाते हैं जिस पानी को सवर्णों के पालतू जीव-जानवर भी नहीं पीते हैं। गाँव में हरिजन आदिवासियों के सहारे ही खेती होती है जिसमें अनेक बार वे बैलों का काम खेत जोतने के लिए करते हैं। पेट की आग जब खेती मजदूरी से नहीं बुझ पाती तो उन्हें सड़क बनाने, रेलवे पटरी बिछाने, तालाब पक्की करने के लिए ठेकेदारों की हाथों समय-समय पर बिकना पड़ता है। फसल पकने के समय जब वे गाँव लौटते हैं तो पता चलता है कि सवर्णों के जानवरों ने उनकी फसलों को चर कर बरर्बाद कर दिया है। वे पछता कर रह जाते हैं।

पिछले वर्षों की अपेक्षा सवर्णों का आदिवासी हरिजनों पर अत्याचार-अन्याय बढ़ता ही जाता है। पिछले साल उनके कुएँ का पानी सुख गया था। देश की बच्ची बीमार थी, उसको दवा पिलाने के लिए देवा पानी लेने के लिए सवर्णों के कुएँ पर गया था। गाँव के कुम्हार ने उसे देख लिया था। उसने कुम्हार से माफी माँग ली थी और इस बात को छुपाए रखने के लिए कुम्हार ने देवा से दो बीघा खेत ले लिया था।

गाँव में आदिवासी हरिजनों की बस्ती में जब आग लगी और उस कुम्हार का घर भी जलकर राख हो गया तो गाँव के सवर्ण, पुलिस और सरपंच सभी मिलकर देवा और छीतर्या पर यह दबाव डालते हैं कि 'तुम्हीं लोगों ने कुम्हार से बदला लेने के लिए इसके घर पर आग लगाई वही आग तुम्हारे झोपड़ों और टपरियों को भी राख बना गई।' यदि दोनों यह जुर्म अपने ऊपर ले लेते हैं तो उनके बस्ती वालों को पक्का मकान और पाँच-पाँच एकड़ जमीन दिया जाएगा। सरपंच का यह लालच सुनकर देवा बस्ती वाले उसका साथ छोड़ देते हैं और उसकी तरफ से कहते हैं कि सरपंच तो उनके भले की ही बात कह रहा है फिर देवा और छीतर्या को यह गुनाह अपने ऊपर लेने में कोई हर्ज नहीं होगा। यह सब देख-सुन समझकर और सरपंच पुलिस और सवर्णों की पूरी चाल समझकर बस्ती का पंच थावर्या उसी रात सरपंच और कुछ ठाकुरों के घर को आग की लपटों में झोंक देता है।

दरअसल हर साल सरपंच इस बस्ती में आग लगाकर उनकी बर्बादी करवा कर सरकारी सहायता प्राप्त करता है और बदले में उन्हें जिल्लत भरी जिन्दगी के अलावा कुछ भी नहीं देता। गाँव के सरपंच के चुनाव के समय आदिवासी हरिजनों के पंच थावर्या को उसकी बस्ती में ही सात-आठ दिनों के लिए नजरबंद कर दिया गया था। ताकि थावर्या के समक्ष सरपंच की पोल न खुल सके।

वह सरपंच की सारी चाल, सारे षडयंत्र समझता था। लेकिन वह कुछ कर पाने में असमर्थ था। लेकिन जब सरपंच अपनी सारी सीमाएँ लाँघ जाता है तो थावर्या पंच को उसी मुसीबत में झोंक देता है जिसे आदिवासी हरिजनों की बस्ती वाले झेलते हैं। इस प्रकार वह अपने भाइयों के प्रति हुए अन्याय का प्रतिशोध लेता है। 'प्रतिशोध' कहानी वर्ण व्यवस्था, जाति व्यवस्था और सवर्णों की सारी कलई खोल कर रख देती है।

इस कहानी में आदिवासी हरिजन बस्ती का जो चित्र खींचा गया है, जिस परिवेश को दिखाया गया है जिन परिस्थितियों का चित्रण हुआ है वे सब की सब आज के युग में पूरी तरह से प्रासंगिक हैं। इस प्रकार यह कहानी देशकाल वातावरण और परिस्थितियों की कसौटी पर पूर्णतः खरी उतरती है।

४.१.४ 'प्रतिशोध' कहानी का उद्देश्य

पुरुषोत्तम 'सत्यप्रेमी' द्वारा रचित कहानी 'प्रतिशोध' एक अत्यन्त संवेदनशील, मार्मिक आदिवासी विमर्श की कहानी है। आदिवासी विमर्श में इस कहानी को बाँधना भी कई बार उचित नहीं लगता क्योंकि जीवन की त्रासदी को कभी शाब्दिक बँधनों में नहीं बाँधा जा सकता है। इसकी कहानी सवर्णों द्वारा आदिवासी हरिजनों पर हुए अन्याय, अत्याचार, शोषण-दमन की कहानी है। जिसे सिर्फ विमर्श की दृष्टि से देखना अन्यायपूर्ण होगा।

'प्रतिशोध' कहानी का उद्देश्य है समाज में रहनेवाले दो वर्णों के बीच को दर्शाना, जहाँ दोनों ही मनुष्य योनि में जन्में हैं परन्तु एक आजीवन दूसरों पर अन्याय-अत्याचार करता है और दूसरा वर्ण चुपचाप उसे अपनी नियति मान कर सहता है। ईश्वर ने सबको एक समान पैदा किया, पेड़-पौधे, वायु, जल, जमीन, जंगल पर सबको एक समान अधिकार दिया। ईश्वर ने कभी नहीं कहा कि सवर्ण लोग शुद्ध ऑक्सिजन लेगे, झरनों का शुद्ध जल पिएँगे और निम्नवर्ण के लोग कार्बन डाई आक्साइड लेंगे और तालाब का गंदा पानी पिएँगे फिर मनुष्य ने इस कुप्रथा को जन्म क्यों दिया, जिसमें हरेक वर्ण, हरेक जाति-संप्रदाय के पास अपना-अपना कुआँ हो, सवर्ण कहीं भी जा सकता है कुछ भी कर सकता है परन्तु निम्नवर्ण के लिए अनगिनत सीमाएँ तय कर दी गईं। उनके जीवन में लक्ष्मण रेखा खींच दी गई कि इसको पार करने का अर्थ होगा हुक्का पानी बंद।

कासेल गाँव के आदिवासी हरिजन बस्ती में रहनेवाले चाहे पंच थावर्या हो, देवा, छीतर्या हो या फिर भगीरथ सबकी पीड़ा, सबकी वेदना एक है सभी अपना सबकुछ अपने लोग, अपना सामान यहाँ तक कि अपना स्वाभिमान, आत्मसम्मान भी जलाकर राख कर चुके हैं, सभी प्रतिशोध की अग्नि में धधक रहे हैं लेकिन गाँव के सवर्णों, पुलिस और सरपंच के आगे कुछ कहने-करने की हिम्मत नहीं जुटा पाते क्योंकि उनके अपने लोगों में भी एकता नहीं है। इधर सरपंच और सवर्ण लोगों का आदिवासी हरिजनों के प्रति अन्याय-अत्याचार शोषण का क्रम निरंतर बढ़ता ही जाता है। ये लोग गाँव के सीधे-सादे अनपढ़ आदिवासी हरिजनों को बहला फुसला कर, उन्हें लालच देकर अपनी बात मनवा लेते हैं, उनके खिलाफ निरंतर षडयंत्र रचते हैं कि कैसे उनके जीवन में तबाही मचाकर सरकारी सहायता के रूप में सरकारी खजाने को लूट लिया जाए। सरकार की तरफ से मिलनेवाली कोई सहायता आदिवासी हरिजनों तक नहीं पहुँचती, उस पैसे पर सवर्ण ऐश करता है। आदिवासी हरिजनों की बस्ती में आग लगती है तो उनके पास पीने तक को पानी नहीं है वे आग कैसे बुझाएँगे जब कि सवर्णों का कुआँ पानी से लबालब भरा रहता है और वे लोग इनकी कोई मदद नहीं करते हैं बल्कि दूर से तमाशबीन बने बैठे मानो रावण दहन का कोई दृश्य देख रहे हैं। उनकी आत्मा भी उन्हें नहीं धिक्कारती, दरअसल उनकी मनुष्यता ही मर चुकी है लेकिन वहीं जब इनके अपने घरों में आग लगती है तो बैलगाड़ियों से पानी ढो-ढो कर आग बुझाने की कोशिश की जाती है।

इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि प्रतिशोध कहानी वास्तव में निम्न-जाति-वर्ण से संबंधित तबको के प्रतिशोध की कहानी है जिसमें लेखक ने इनके जीवन में ज्यादा अनेक समस्याओं, चुनौतियों, दशाओं और दिशाओं की तरफ पाठकों का ध्यान आकृष्ट करना चाहा है। यही इस कहानी का परम उद्देश्य है।

४.१.५ संदर्भसहित व्याख्या का एक उदाहरण

''हाँ अपने से वह प्रलाप अवश्य कर सकता है रोने से मनुष्य को शांति मिलती है परन्तु प्रलाप से व्यक्ति में प्रतिशोध जागता है।''

संदर्भः

प्रस्तुत अवतरण हमारे पाठ्य पुस्तक 'प्रतिनिधि दस कहानियाँ' के 'प्रतिशोध' कहानी से अवतरित है । इसके लेखक पुरुषोत्तम 'सत्यप्रेमी' जी हैं।

इस कहानी में लेखक ने सवर्ण लोगों द्वारा आदिवासी हरिजनों पर हुए भीषण अत्याचार-अन्याय को दर्शाया है कि वर्ण-व्यवस्थावाले इस समाज में गुनाहगार कोई और है एवं सजा किसी और को मिलती है।

व्याख्या :

प्रस्तुत अवतरण का आशय यह है कि जब प्रतिशोध कहानी का नायक, कासेल गाँव के आदिवासी हरिजन बस्ती का पंच थावर्या अपनी बस्ती के पूरी तरह जला

कर राख बन जाने के कारण सरकारी सहायता की उम्मीद लेकर गाँव के सरपंच के पास जाता है तो देखता है कि वहाँ गाँव का कुम्हार और कुछ अन्य श्रेष्ठ सवर्ण पहले से ही विराजमान हैं। इस भीषण अग्निकांड में उस कुम्हार का घर भी जलकर राख हो चुका था और उसके सारे नुकसान का कारण आदिवासी-हरिजनों को ठहराया जा रहा था। उन लोगों द्वारा कहा यह जा रहा था कि सरकारी सहायता पाने के लालच में आदिवासी हरिजन ने अपने घास-पात के कच्चे घरों में स्वयं ही आग लगा दी और आग का शिकार वह कुम्हार परिवार भी हो गया। यह सब दोषारोपण सुनकर थावर्या अवाक रह गया क्योंकि यह बिल्कुल सच नहीं था। इस आग में भगीरथ की बीबी और पाँच दिन का बच्चा दोनों जलकर राख हो गए थे।

देवा, छीतर्या के साथ बस्ती के तमाम लोगों ने अपना घर-अनाज-जरूरत के सामानों के साथ-साथ अपने परिजनों को भी खो दिया था। कोई अधजली स्थिति में था तो कुछ राख बन चुके थे। अपनों के गम में लोग दहाड़ मार-मार कर रो रहे थे। आखिरकार अब वे कर भी क्या सकते थे। इस पूरी घटना को सवर्णों ने तमाशबीन बन कर देखा था और अपनी इंसानियत मार कर देखा था।

थावर्या सरपंच और सवर्णों की बात सुनकर उल्टे पाँव बस्ती में लौट आता है जहाँ उसके अपने लोग रो बिलख रहे थे कुछ लोग अपने ही घर की आग में अलाव ताप रहे थे। बाहर की आग ठंडी हो रही थी परन्तु थावर्या के मन में प्रतिशोध की अग्नि धधके रही थी। इन तमाम भयावह दृश्यों को देखकर वह अपनों के लिए रो सकता था, वह मित्रों के समक्ष रोकर मन को हल्का कर लेता, उसके मन को शांति मिल जाती। परन्तु वह वैसा अब कदापि नहीं करना चाहता है क्योंकि सवर्णों का अत्याचार अब सारी सीमाएँ लाँघ चुका था। अब वह सिर्फ एकान्त में प्रलाप करके अपने मन में प्रतिशोध की अग्नि धधकाए रखना चाहता है और कहानी के अंत में वह सवर्णों से अपना प्रतिशोध निकालने में भी सफल हो जाता है।

विशेष :

'प्रतिशोध' कहानी आदिवासी विमर्श की कहानी है। जिसमें लेखक पुरुषोत्तम 'सत्यप्रेमी' जी यह दर्शाना चाहते हैं कि गाँव के चहुँमुखी विकास हेतु सबके समान अधिकार के लिए कितने भी नियम-कानून क्यों न बना दिए जाए परन्तु कानून से लोगों की मानसिकता नहीं बदली जा सकती है, यह सिर्फ जागरूकता से ही संभव है।

संदर्भसहित व्याख्या हेतु अन्य अवतरण

१. ''छुआछूत मिटाने और हरिजनों को बराबरी के हक दिलाने के लिए संसद और विधान सभाओं ने कानून पारित किए हैं, लेकिन कानून से मानसिकता नहीं बदली जा सकती।''

२. ''कोई सान्त्वना के दो बोल बोलने नहीं आया, दूर से ही रावण के पुतले को जलता हुआ देखने के अभ्यासी मनोरंजन का लुत्फ ले रहे थे, उनका अपना क्या था।''

३. ''पत्थर या तो तिड़कता नहीं, पर जब तिड़कता है तो यह दरारों तक ही नहीं रह जाता। उसके टुकड़े-टुकड़े हो जाते हैं।''

४. ''मनुष्य जिन नियमों का निर्माण करता है, अपने आसपास जो वृत्त बना लेता है, उसी का उल्लंघनकर्ता भी वही होता है।''

५. यह कितना सच है किसी भी प्रकार के दर्द, कष्ट के लिए ही रोना जरूरी होता है, धुँध आना नहीं-परन्तु मनुष्य किसी के सामने होने पर ही रोता है।

६. ''लेकिन बड़े आदमी की तरफदारी ऊपर से नीचे तक लोग करते हैं और उनका ही सिक्का चलता है।''

७. ''कोई भी किसी व्यक्ति को तो पराजित कर सकता है, लेकिन माध्यम को नहीं।''

४.१.६ दीर्घोत्तरी प्रश्न

१. 'प्रतिशोध' कहानी का उद्देश्य लिखिए।

२. 'प्रतिशोध' कहानी के शीर्षक की सार्थकता प्रमाणित कीजिए।

३. 'प्रतिशोध' कहानी में निहित समस्याओं पर प्रकाश डालिए।

४. 'प्रतिशोध' कहानी की समीक्षा कीजिए।

५. 'प्रतिशोध' कहानी में चित्रित पात्रों का चित्रण कीजिए।

६. 'प्रतिशोध' कहानी के माध्यम से लेखक क्या कहना चाहता है? स्पष्ट कीजिए।

७. 'प्रतिशोध' कहानी में व्यक्त विचारों पर सोदाहरण प्रकाश डालिए।

४.१.७ वस्तुनिष्ठ प्रश्न

१. थावर्या कौन था?
उत्तर. आदिवासी हरिजनों का पंच

२. आदिवासी हरिजन बस्ती कहाँ स्थित था?
उत्तर. कासेल गाँव में।

३. देवा सवर्णों के कुएँ पर पानी लेने क्यों गया?
उत्तर. अपनी बीमार बच्ची को दवा खिलाने के लिए पानी लेने गया था।

४. देवा को सवर्णों के कुएँ से पानी लेते हुए किसने देखा था?
उत्तर. गाँव के सवर्णों के कुम्हार ने देखा था।

५. आदिवासी हरिजन बस्ती के राख होने पर थावर्या सरपंच के पास क्यों गया था ?

उत्तर. सरकारी सहायता के लिए गया था।

६. आग लगने के बाद वहाँ का अवलोकन / मुआयना करने कौन आया था?

उत्तर. सरपंच, दो पुलिसवाले और कुछ सवर्ण लोग आए थे।

७. सरपंच अग्निकांड के लिए किसे दोषी ठहराता है?

उत्तर. देवा और छीतर्या को ठहराता है।

८. 'प्रतिशोध' कहानी के लेखक कौन हैं?

उत्तर. पुरुषोत्तम 'सत्यप्रेमी'

९. 'प्रतिशोध' कहानी किस विषय पर आधारित है।

उत्तर. छुआ-छूत, आदिवासी हरिजन लोगों के साथ हो रहे अन्याय-अत्याचार पर आधारित है।

१०. सरपंच आदिवासी हरिजनों को क्या लालच देता है?

उत्तर : सबके लिए एक-एक पक्का मकान और पाँच एकड़ जमीन का लालच देता है।

४.१.८ टिप्पणी

१. कासेल गाँव का वर्णन

२. 'प्रतिशोध' कहानी का उद्देश्य

३. थावर्या का चरित्र-चित्रण

४. भगीरथ, देवा छीतर्या का चरित्र

५. भगीरथ, देवा छीतर्या के साथ घटित घटनाएँ

६. कासेल गाँव के सरपंच का अन्याय

७. आदिवासी हरिजन बस्ती में लगे आग का वर्णन।

८. सवर्णों व सरपंच का आदिवासी हरिजनों के प्रति व्यवहार।

९. 'प्रतिशोध' कहानी की मुख्य समस्या।

H H H

इकाई ५

५

नजर नसाई गई मालिक (रेखाचित्र) – डॉ. विनय मोहन शर्मा

इकाई की रूपरेखा

५.१. लेखक परिचय

५.१. सारांश

५.१. संदर्भ सहित व्याख्या

५.१. दीर्घोत्तरीय प्रश्न

५.१. टिप्पणी

५.१. वस्तुनिष्ठ प्रश्न

५.१. अन्य संभावित दीर्घोत्तरीय प्रश्न

५.२ लेखक परिचय

डॉ. विनय मोहन शर्मा साहित्य के जाने माने कवि, लेखक, समालोचक और अनुवादक हैं। पेशे से अध्यापक रहे डॉ. विनय मोहन शर्मा का जन्म मध्य प्रदेश के करकबेल नामक स्थान पर १६ अक्टूबर सन् १९०५ में हुआ था । इनका वास्तविक नाम 'पंडित शुकदेव प्रसाद तिवारी' है वैसे 'वीरात्मा' उपनाम से भी कुछ कविताएँ लिखी हैं। इन्होंने पहले बी.एच.यू. फिर नागपुर तथा आगरा से बी.ए., एम.ए., पी.एचडी. तथा एल.एल.बी. तक की शिक्षा ग्रहण की ये नागपुर विश्वविद्यालय में हिन्दी के विभागाध्यक्ष रहे, रायगढ़ के गर्वमेंट डिग्री कॉलेज के प्रिसिंपल तथा कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय में भी हिन्दी के विभागाध्यक्ष रहे हैं। डॉ. विनय मोहन शर्मा की अबतक प्रकाशित पुस्तकें हैं– भूले गीत (१९४४), कविप्रसाद आँसू तथा अन्य कृतियाँ (१९४५), हिन्दी गीत गोविन्द (१९५५), दृष्टिकोण (१९५०), साहित्यावलोकन (१९५२), हिन्दी को मराठी संतों की देन (१९५७), साहित्य–शोध–समीक्षा (१९५८), साहित्य कला (१९८०), रेखा और रंग (१९५५) हिन्दी के व्यावहारिकरूप (१९६८), साहित्यान्वेषण (१९६९), साहित्य नया और पुराना (१९७२), भाषा, साहित्य समीक्षा (१९७२). इनकी कोशिश हमेशा यही रही कि कभी किसी 'वाद' दृष्टि में न बँधकर तटस्थ एवं वैज्ञानिक समीक्षाएँ लिखें।

५.३ सारांश

'नजर नसाय गई मालिक' डॉ. विनय मोहन शर्मा द्वारा रचित एक लघु मर्मस्पर्शी रेखाचित्र है। इस रेखाचित्र के प्रारम्भ में लेखक शर्मा जी वर्षा ऋतु की चर्चा करते हुए कहते हैं कि पाँच दिन लगातार पानी बरसने के बाद आसमान में तेज छिटकती धूप

कितनी मिठास लिए हुए आई है। लेखक मन ही मन सोचता है कि महाकवि कालिदास ने बरसाती दिनों की दुर्दिन की संज्ञा ठीक ही दी है। अपनी अनुभूति को महाकवि की अनुभूति से मिलते देखकर लेखक का हृदय गर्व से भर उठता ही। लेखक यह सब सोच ही रहा था तभी एक ग्रामीण अत्यन्त जरूरतमंद व्यक्ति शंकर उनके समक्ष आकर घर का कोई भी काम करने के लिए नौकरी देने हेतु गिड़गिड़ाने लगता है। यहाँ तक कि वह उनका जूता साफ करने और बच्चों का मलमूत्र भी साफ करने की नौकरी के लिए गिड़गिड़ाता है। लेखक को उस वक्त नौकर की सख्त जरूरत थी। उन्होंने उससे बिना अधिक पूछताछ किए उसे नौकरी पर रख लिया। वह दोनों वक्त खाना बनाता, झाड़ू लगाता, सब काम करता था। बच्चों को खिलाने और उनके साथ खेलने में उसे बहुत मजा आता था। लेखक की छोटी बेटी प्रमोदिनी को वह बहुत प्यार करता था। उसके प्रति उसकी ममता पक्षपात की सीमा तक पहुँच जाती थी। उसका वश चलता तो वह प्रमोदिनी के लिए आसमान के तारे भी तोड़ कर ला देता। इसके पीछे एक अह्म कारण था कि उसकी बेटी रमैया भी प्रमोदिनी की उम्र की ही थी, जिसे देखे हुए उसे चार वर्ष हो गये थे।

एक दिन लेखक के पूछने पर उसने अपने घर-परिवार के विषय में बताया था कि उसके गाँव में आम के दो बिरवा हैं थोड़ा बहुत जमीन है, भाई-भौजाई हैं परन्तु भौजाई से उनकी बनती नहीं है। उसकी पत्नी बच्चों के साथ अपने मायके रहती है। वह कमाकर उसी को मनीआर्डर करता है। वह लेखक से यह भी कहता है कि अब वह उनकी नौकरी कभी नहीं छोड़ेगा।

एक दिन की बात है। घनघोर बारिश हो रही थी। शंकर अपने सामान की पोटली बाँधे हुए लेखक के पास आकर रोते हुए कहता है कि अब वह उनकी नौकरी नहीं कर सकता है, वह अपने गाँव जा रहा है क्योंकि अब उसकी नजर नसाय गई है। उसने अपने हाथ में से एक रुपए का नोट निकालकर लेखक के सामने रख दिया और उन्हें बताया कि उसने उनके घर में चोरी की है इसलिए वह वहाँ रहने लायक नहीं है क्योंकि उसकी नजर नसाय गई है। लेखक उसे समझा-बुझाकर उसे माफ कर देता है साथ ही यह भी कहता है कि पश्चाताप कर लेने से मनुष्य के पाप धुल जाते हैं वह यह बात किसी से नहीं बताएगा, वह न जाए। परन्तु शंकर नहीं मानता है और घनघोर बरसात में यह कहते हुए चला जाता है कि अब वह उनको कैसे मुँह दिखाएगा, उसकी नजर ही नसाय गई है अर्थात् उसकी नियत ही बिगड़ गई है।

जब भी बरसात होती है लेखक को शंकर की यह बात याद आ जाती है।

रेखाचित्र यहीं समाप्त हो जाती है।

५.४ संदर्भ सहित व्याख्या

''काहे नहीं, बाबू। हम सब काम करि सकित हैं।

मौका परै पै जूती साफ करि सकित है, बच्चन का मैला तक। मालिक माँ-बाप दाखिल है।''

संदर्भ :

प्रस्तुत रेखाचित्र हमारे पाठ्य पुस्तक गद्यविविधा के 'नजर नसाय गई मालिक' पाठ से अवतरित है, जिसके लेखक डॉ. विनय मोहन शर्मा जी हैं।

प्रसंग :

लेखक ने इस रेखाचित्र में अपने अतीत के संस्मरणों को संजोया है तथा अपने सेवक शंकर की भावनात्मक प्रतिबध्दता, भावनात्मक लगाव को बड़े ही सजीव ढंग से प्रस्तुत किया है।

व्याख्या :

प्रस्तुत पंक्तियाँ लेखक डॉ. विनय मोहन शर्मा के सेवक शंकर की है जब वह एक दिन उनके पास नौकरी की तलाश में आता है और उनसे कहता है कि वह सब काम कर सकता है, खाना बना सकता है, जरूरत पड़ने पर जूते साफ कर सकता है, यहाँ तक कि बच्चों का मल-मूत्र भी साफ कर सकता है, क्योंकि वह अपने मालिक को अपना माई-बाप समझता है। उसकी सादगी और अपनी जरूरत के कारण लेखक उसे तत्काल नौकरी पर रख लेते हैं। शंकर लेखक के घर की सेवा करने के साथ-साथ उनके बच्चों से भी बहुत घुल मिल जाता है लेकिन जिस दिन उसे अहसास होता है कि उसकी नियत में खोट आ चुका है उसी दिन वह अपने इस मालिक के लाख मना करने के बाबजूद नौकरी छोड़कर चला जाता है।

विशेष :

इस रेखाचित्र में शंकर के माध्यम से लेखक मनुष्य की सच्चाई, ईमानदारी, आत्मग्लानि, पश्चाताप और उसकी सादगी को दर्शाना चाहते हैं, जो कि मनुष्यता की पहली पहचान है।

संभावित संदर्भ सहित व्याख्या हेतु अन्य अवतरण :

१. ''मैं सामने कमरे में बैठा सोच रहा था, कालिदास ने बरसाती दिनों को दुर्दिन की संजा ठीक ही दी है।''

२. अपनी अनुभूति को महाकवि की अनुभूति से मिलते देखकर हृदय गर्व से भर गया।

३. ''पश्चाताप कर लेने पर मनुष्य के पाप धुल जाते हैं।''

४. ''वह फुरसत के वक्त हमारे बीच बैठ जाता और अपनी रामकहानी कहता रहता''।

५. ''उसके प्रति उसकी ममता पक्षपात की सीमा तक पहुँची हुई मालूम होती थी। उसकी एक बात भी वह खाली न जाने देता।''

६. ''अगर उसका वश चलता तो वह आकाश की तरैया भी उसके लिए तोड़कर ला दे सकता था।

५.५ दीर्घोत्तरीय प्रश्न

प्रश्न. 'नजर नसाय गई मालिक' रेखाचित्र का उद्देश्य लिखिए।

उत्तर. 'नजर नसाय गई मालिक' रेखाचित्र के माध्यम से लेखक डॉक्टर विनय मोहन शर्मा यह कहना चाहते हैं कि आज के युग में भी सच्चाई और ईमानदारी बची हुई है। लेखक के पास आकर एक सीधा-साधा ग्रामीण व्यक्ति घर का कोई भी काम करने की नौकरी देने का आग्रह करता है। उस वक्त लेखक को भी नौकर की सख्त आवश्यकता रहती है। वह उसे बिना अधिक पूछताछ के नौकरी पर रख लेता है। लेखक और नौकर शंकर दोनों एक दूसरे से संतुष्ट रहते हैं। शंकर लेखक की छोटी बेटी के साथ बहुत घुल-मिल जाता है और उसके लिए कुछ भी करने के तत्पर रहता है। लेकिन एक दिन वह लेखक के पास आकर कहता है कि उसने उसके घर से एक रुपया चुराया है, अब उसकी नियत बिगड़ गयी है, नजर नसाय गई है इसलिए अब वह उनकी नौकरी नहीं कर सकता है। लेखक के बार-बार समझाने, माफ कर देने, यह बात किसी को नहीं बताने की बात कहने पर भी वह घनघोर बारिश में नौकरी छोड़कर चला जाता है।

यह रेखाचित्र एक ग्रामीण व्यक्ति की सच्चाई, ईमानदारी के साथ-साथ उसके मिलनसार स्वभाव, मेहनत, लगन से काम करने की प्रतिबद्धता किसी भी काम को छोटा या बड़ा न समझकर उसे करने की प्रबल इच्छा के साथ-साथ पराए लोगों में अपनापन ढूँढने के भाव को दर्शाता है। मनुष्य की गरीबी, उसकी मूलभूत आवश्यकताएँ कई बार उसे विचलित कर देती हैं, क्योंकि अपने परिवार को दो वक्त की रोटी खिलाने के लिए गाँव के लोग हजारों मील दूर का सफर तय कर शहर आते हैं, नौकरी के लिए दर-दर की ठोकरें खाते हैं, मेहनत मजदूरी करने लिए सालों अपने परिवार-बाल-बच्चों से दूर रहते हैं फिर भी उनकी स्थिति में कोई विशेष अंतर नहीं आता। यह रेखाचित्र हमें कहानी काबुलीवाला की हल्की सी याद दिलाता है जब शंकर लेखक की छोटी बेटी प्रमोदिनी से पितृवत स्नेह करता है, उसके लिए आसमान के तारे तक तोड़कर ला सकता है क्योंकि उसने प्रमोदिनी की उम्र की अपनी बेटी को पिछले चार वर्षों से नहीं देखा है। प्रमोदिनी में वह अपनी बेटी को ढूँढता है।

शंकर लेखक के यहाँ आजीवन नौकरी करना चाहता है, परन्तु उन्हें किसी भी तरह से धोखा देना नहीं चाहता है यही कारण है कि अपनी नजर नसाने के बाद वह

काम छोड़कर अपने गाँव चला जाता है, अपना चेहरा उन्हें नहीं दिखाना चाहता क्योंकि वह अपने किए पर बहुत शर्मीन्दा है।

आत्मग्लानि और पश्चाताप के बाद भले ही उसके पाप धूल गए हैं परन्तु वह स्वयं को माफ नहीं करता है। इस प्रकार, यह रेखाचित्र एक सीधे-सादे ग्रामीण शंकर की सच्चरित्रता और उदात्त स्वभाव को दर्शाता है लेखक को पुराना नौकर शंकर आज भी याद है तो वह इसलिए नहीं कि वह काम सफाई से करता था, बल्कि वह इसलिए याद है क्योंकि उस व्यक्ति का चरित्र बहुत उत्तम है। यही इस रेखाचित्र का परम उद्देश्य है।

५.६ टिप्पणी :

१. 'नजर नसाय गई मालिक' का उद्देश्य

२. 'नजर नसाय गई मालिक' में शंकर का चरित्र

३. 'नजर नसाय गई मालिक' के शीर्षक की सार्थकता

४. 'नजर नसाय गई मालिक' का सारांश

५.७ वस्तुनिष्ठ प्रश्न

१. 'नजर नसाय गई मालिक' किस विधा की रचना है? - रेखाचित्र.

२. 'नजर नसाय गई मालिक' के रचनाकार कौन है? - डॉ. विनय मोहन शर्मा

३. घनघोर बरसात में लेखक किस महाकवि की बातों को याद करता है - महाकवि कालिदास को याद करता है।

४. लेखक के पास कौन नौकरी माँगने आता है ? ग्रामीण व्यक्ति शंकर।

५. शंकर लेखक के परिवार में सबसे अधिक स्नेह किससे करता है? - लेखक की छोटी बेटी प्रमोदिनी से।

६. शंकर प्रमोदिनी को सबसे अधिक स्नेह क्यों करता है?

उत्तर. शंकर की बेटी प्रमोदिनी की उम्र की है जिसे उसने पिछले चार वर्षों से नहीं देखा है इसीलिए वह उससे पितृवत स्नेह करता है।

७. शंकर मनीऑडर किसे और कहाँ भेजता है?

उत्तर. शंकर मनीऑडर अपनी पत्नी को उसके मैके में भेजता है क्योंकि वह वहीं रहती है।

८. शंकर नौकरी छोड़कर क्यों चला जाता है?

उत्तर. शंकर ने लेखक के यहाँ से एक रुपए की चोरी की है, उसे अपनी इस गलती पर अफसोस है इसीलिए वह काम छोड़कर चला जाता है, स्वयं को सजा देता है ताकि भविष्य में लेखक के साथ कोई धोखा न हो।

९. लेखक के कानों में शंकर के कौन से वाक्य गूँजते हैं?

उत्तर. 'नजर तो नसाय गई मालिक'

१०. 'नजर नसाय गई मालिक' का क्या अर्थ है?

उत्तर मालिक के प्रति उसकी नियत बिगड़ गई और परिणामस्वरूप उसने चोरी की है यही इसका अर्थ है।

५.८ अन्य संभावित दीर्घोत्तरीय प्रश्न

१. 'नजर नसाय गई मालिक' की समीक्षा कीजिए।

२. 'नजर नसाय गई मालिक' में शंकर का चरित्र-चित्रण कीजिए।

३. लेखक के कानों में शंकर के वाक्य 'नजर तो नसाय गई मालिक' क्यों गूँजते हैं ? इस तथ्य पर प्रकाश डालिए।

४. 'नजर नसाय गई मालिक' रेखाचित्र के शीर्षक की सार्थकता पर प्रकाश डालिए।

५. 'नजर नसाय गई मालिक' रेखाचित्र का कथावस्तु लिखिए।

H H H

इकाई ५.१

५.१

जैसे उनके दिन फिरे (व्यंग्य) – हरिशंकर परसाई

इकाई की रूपरेखा

५.१.१ लेखक परिचय

५.१.२ सारांश

५.१.३ संदर्भ सहित व्याख्या

५.१.४ दीर्घोतरीय प्रश्न

५.१.५ टिप्पणी

५.१.६ वस्तुनिष्ठ प्रश्न

५.१.७ अन्य संभावित दीर्घोत्तरीय प्रश्न

५.१.१ लेखक परिचय

हरिशंकर परसाई हिन्दी के प्रसिध्द लेखक और व्यंग्यकार थे। इनका जन्म २२ अगस्त, १९२४ में जमानी, होशंगाबाद, मध्यप्रदेश में हुआ था। वे हिन्दी के पहले रचनाकार हैं जिन्होंने व्यंग्य को विधा का दर्जा दिलाया और उसे हल्के-फुल्के मनोरंजन की परंपरागत परिधि से उबारकर समाज के व्यापक प्रश्नों से जोड़ा। इनकी व्यंग्य रचनाएँ हमारे मन में गुदगुदी पैदा नहीं करती, बल्कि हमें उन सामाजिक वास्तविकताओं के सामने खड़ा करती हैं। लगातार खोखली होती जा रही हमारी सामाजिक और राजनीतिक व्यवस्था में पिसते मध्यमवर्गीय मन की सच्चाइयों को इन्होंने अत्यन्त निकटता से पकड़ा है। इनके द्वारा रचित कहानी संग्रह हैं – हँसते हैं रोते हैं, जैसे उनके दिन फिरे, भोला राम का जीव। इनके द्वारा रचित उपन्यास-रानी नागफनी की कहानी, तट की खोज, ज्वाला और जल है । 'तिरद्दी रेखाएँ' संस्मरण है तथा इनके द्वारा रचित लेख संग्रहों में मुख्य हैं-तब की बात और थी, भूत के पाँव पीछे, बेईमानी की परत, माटी कहे कुम्हार से, तुलसी चंदन घिसै, वैष्णव की फिसलन, सदाचार का ताबीज, पगडंडियों का जमाना, शिकायत मुझे भी है, विकलांग श्रध्दा का दौर आदि १० अगस्त, १९९५ में परसाई जी के निधन के पश्चात साहित्यसंसार में सूनापन छा गया था।

५.१.२ सारांश

'जैसे उनके दिन फिरे' हिन्दी साहित्य के सफल व्यंग्यकार हरिशंकर परसाईजी की रचना है। इस व्यंग्य को इन्होंने एक बहुत रोचक कहानी के माध्यम से व्यक्त करते हुए राजा अर्थात् प्रशासनिक व्यवस्था देखने वाले नेताओं अधिकारियों के गुणों को व्यंग्यात्मक शैली में प्रस्तुत किया है। इस व्यंग्य में निहित कथा कुछ इस प्रकार है।

एक राजा की अनेक पत्नियाँ और चार पुत्र थे। बड़ी रानी ने बाकी की रानियों के पुत्रों को जहर देकर मार डाला था क्योंकि वह अपने पुत्रों को राजगद्दी पर बैठाना चाहती थी। राजा उससे खुश थे क्योंकि वे चाणक्य की नीतियों का अनुसरण करने वाले थे। चाणक्य के अनुसार राजा को अपने पुत्रों को भेड़िया समझना चाहिए। और सच भी यही था कि उनके चारों पुत्र राजगद्दी पर बैठना चाहते थे।

एक दिन राजा चारों पुत्रों को बुलाकर अपने बूढ़े होने के कारण किसी एक को राजगद्दी पर बैठाने हेतु उनकी परीक्षा लिए जाने की बात कहता है। परीक्षा यह थी कि उनके चारों पुत्रों को अपने राज्य की सीमा से कहीं दूर जाकर अपनी योग्यता सिद्ध करनी होगी, अधिक से अधिक धन कमाना होगा, उसी के आधार पर राजा सुनिश्चित किया गया। चारों पुत्र बिना श्रध्दा के राजा को प्रणाम करके चले जाते हैं और ठीक एक साल बाद फाल्गुन की पूर्णिमा को राजदरबार में हाजिर होते हैं। राजा के आदेशानुसार चारों पुत्र अपनी-अपनी योग्यता सिध्द करते हैं।

राजा के पहले पुत्र के अनुसार राजा के लिए ईमानदारी और परिश्रम बहुत आवश्यक गुण है अतः उसने पूरे एक साल तक व्यापारी के यहाँ परिश्रम और ईमानदारी से बोरे ढोने का काम किया है और उसके पास सौ स्वर्णमुद्राएँ हैं। इसलिए वह राजा बनने योग्य है।

राजा के आदेश पर उनके दूसरे पुत्र ने कहा कि उसके अनुसार राजा को साहसी, लुटेरा और अपने बाहुबल पर भरोसा होना चाहिए, तभी वह राज्य का विस्तार कर सकता है इसीलिए उसने पड़ोसी राज्य में जाकर डाकुओं का एक गिरोह संगठित किया और खूब लुटमार करने लगा, उसे राज्य के कर्मचारियों का सहयोग मिला। उसके बड़े भाई के सेठ के यहाँ भी उसनें दो बार डाका डाला था। इस एक वर्ष में उसने पाँच लाख स्वर्ण मुद्राएँ कमाई हैं अतः वही राजगद्दी का अधिकारी है।

राजा के संकेत पर उनके तीसरे पुत्र ने कहा कि राजधानी में उसकी बहुत बड़ी दुकान है जिसमें वह घी में मूँगफली का तेल और शक्कर मे रेत मिलाकर बेचता था। उसने राजा से लेकर मजदूर तक को सालभर मिलावटी घी-शक्कर खिलाया। राजकर्मचारी उसे पकड़ते नहीं थे क्योंकि सबको वह अपने मुनाफे से हिस्सा देता था। बड़े भाई के सेठजी और मँझले भाई को भी उसने मिलावटी सामान खिलाया है। तीसरे पुत्र के अनुसार राजा को बेईमान और धूर्त होना चाहिए तभी वह टिक सकता है। सीधे राजा को कोई एक दिन नहीं रहने देगा। उसमें ये सारे गुण हैं उसने पिछले एक साल में दस लाख रुपए कमाए हैं अतः राजगद्दी का वह अधिकारी है।

राजा का सबसे छोटा पुत्र वेश-भूषा, भाव-भंगिमा में तीनों से भिन्न था सादे-मोटे कपड़े पहने हुए था, न सिर पर पगड़ी थी न पैरों में खड़ाऊँ या चप्पल। परन्तु उसके मुख पर बड़ी प्रसन्नता और आँखों में बड़ी करूणा थी। राजा का संकेत पाकर उसने राजा को बताया कि जब वह दूसरे राज्य में गया तो उसे समझ नहीं आया कि वह क्या करे। वह कई दिनों तक भूखा-प्यासा भटकता रहा। चलते-चलते वह एक

अट्टालिका में पहुँचा, उस पर 'सेवा आश्रम' लिखा था। अंदर तीन-चार आदमी बैठकर ढेर सारी स्वर्ण मुद्राएँ गिन रहे थे। छोटे पुत्र द्वारा बार-बार उनके काम धंधे के बारे में पूछे जाने पर उनमें से एक दयावान व्यक्ति ने बताया कि वे त्याग और सेवा का धंधा करते हैं। राजा के छोटे पुत्र ने उन सभी लोगों से इस त्याग और सेवा के धंधे को सिखाने की प्रार्थना की। उनमें से एक दयालु व्यक्ति ने कहा कि वे लोग उसे अपने विद्यालय में प्रवेश करवा कर मात्र एक सप्ताह में उसे त्याग और सेवा के धंधे में पारंगत कर देंगे, जब उसका अपना धंधा चल पड़ेगा तब वह श्रध्दानुसार गुरूदक्षिणा दे देगा। छोटा पुत्र उस सेवा आश्रम में शिक्षा प्राप्त करने लगा। सेवा आश्रम का जीवन राजसी ठाट-बाट वाला था सुंदर वस्त्र, स्वादिष्ट भोजन नौकर-चाकर सब कुछ। आश्रम के प्रधान ने उसे अंतिम दिन बुलाकर मोटे सस्ते वस्त्र देते हुए कहा कि इन वस्त्रों को बाहर पहनना क्योंकि कर्ण के कवच कुंडल की तरह ये मोटे सादे वस्त्र बदनामी से उसकी रक्षा करेंगे। वह अब सब कलाएँ सीख गया है ईश्वर का नाम लेकर उसे अपना कार्य आरंभ कर देना चाहिए। जब तक उसकी अट्टालिका नहीं बन जाती तब तक वह वहीं रह सकता है।

उसके बाद छोटे पुत्र ने 'मानव-सेवा-संघ' खोलकर इस बात को प्रचारित किया कि मानव मात्र की सेवा, गरीबों, भूखों, नंगों, अपाहिजों, जरूरतमंदों की सेवा करना ही हमारा परम धर्म है। इसलिए इस पुण्यकार्य में उसका हाथ बँटाने के लिए, मानव सेवा, समाज और राष्ट्र की उन्नति के लिए खुलकर दान करें। जनता बड़ी भोली है उसने खूब दान किया। बड़े भईया के सेठ ने भी दिया और बड़े भैया ने भी पेट काटकर दो स्वर्ण मुद्राएँ दान में दी।

एक बार लुटेरे भाई के अन्य चेले डाकूओं को राजा के सैनिक पकड़ने आए। उस समय उन डाकूओं को छोटे भाई के चेलों ने 'मानव सेवा संघ' आश्रम में छुपा लिया था।

इसके बाद लुटेरे भाई ने भी उसके चेलों को एक सहस्त्र मुद्राएँ दी थी। इस एक वर्ष में चंदे से उनके पास बीस लाख स्वर्ण मुद्राएँ हैं। वह पुनः राजा से कहता है कि उसके अनुसार राज्य का आधार धन है। राजा को प्रजा से प्रसन्नतापूर्वक धन खींचने, वसूल करने की विद्या आनी चाहिए, यह राजा का आवश्यक गुण है इसलिए वह इस राजगद्दी को योग्य है।

अपने चारों पुत्रों के विषय में राजा ने अपने मंत्री से सलाह माँगी तो मंत्री ने कहा कि राजा के सभी पुत्रों में छोटे राजकुमार ही सर्वश्रेष्ठ हैं, सबसे योग्य हैं क्योंकि उनमें अपने गुणों के सिवाय शेष तीनों राजकुमार के गुण विद्यमान हैं। वह बड़े भाई की तरह परिश्रमी है, दूसरे के समान साहसी और लुटेरा है और तीसरे के समान बेईमान और धूर्त भी है। उसने एक साल में सबसे अधिक धन बीस लाख स्वर्ण मुद्राएँ भी इकट्ठी की है अतः राजा बनने की योग्यता मात्र उसी में है। मंत्री की बात सुनकर सभी प्रसन्नता से ताली बजाने लगे। दूसरे दिन छोटे राजकुमार को राजा बनाया गया, तीसरे दिन पड़ोसी राज्य की गुणवंती कन्या से उसका विवाह हुआ चौथे दिन उसे मुनि की कृपा से पुत्र रत्न प्राप्त हुआ और वह सुख से राज-काज चलाने लगा।

कहानी यहीं समाप्त होती है। जैसे राजा के छोटे पुत्र का दिन फिरा वैसे ही सबके दिन फिरे।

५.१.३ संदर्भ सहित व्याख्या

''मैंने विचार किया कि राजा के लिए ईमानदारी और परिश्रम आवश्यक गुण है।''

संदर्भ :

प्रस्तुत अवतरण हमारे पाठ्य पुस्तक गद्य विविधा में निहित व्यंग्य 'जैसे उनके दिन फिरे' नाम अध्याय से लिया गया है। इस व्यंग्य के लेखक सुप्रसिध्द व्यंग्यकार हरिशंकर परसाई जी हैं।

प्रसंग :

परसाई जी ने इस व्यंग्य को कथा-कहानी कहने की शैली में व्यक्त किया है, जिसमें वे राजा के गुणों पर व्यंग्यात्मक शैली में प्रकाश डालते हैं।

व्याख्या :

प्रस्तुत व्यंग्य में परसाई जी राजा के चार पुत्रों के माध्यम से आधुनिक शासकों में निहित विशेषताओं पर प्रकाश डालते हैं। अवतरित पंक्तियाँ राजा के बड़े पुत्र की उक्तियाँ हैं जब वह राजा की आज्ञा पाकर दूसरे राज्य में अपनी योग्यता सिध्द करने जाता है, तब वह एक सेठ व्यापारी के यहाँ मेहनत से बोरियाँ ढोने का काम करने लगता है, क्योंकि उसका मानना है कि राजा के लिए ईमानदारी और परिश्रम आवश्यक गुण है। इसलिए वह खूब मेहनत और ईमानदारी से पूरे एक साल में अपने खर्च को निकाल कर सौ स्वर्णमुद्राएँ ही कमाता है। उसे लगता है कि उसमें सारे गुण है इसलिए वह इस गद्दी का अधिकारी है।

संदर्भ सहित व्याख्या हेतु अन्य अवतरण :

१. ''जब तक तेरी अपनी अट्टालिका नहीं बन जाती, तू इसी भवन में रह सकता है, जा, भगवान तुझे सफलता दे।''

२. ''मानवमात्र की सेवा करने का बीड़ा हमने उठाया है। हमें समाज की उन्नति करनी है, देश को आगे बढ़ाना है।''

३. ''मेरा विश्वास है कि राजा को साहसी और लुटेरा होना चाहिए, तभी वह राज्य का विस्तार कर सकता है।''

४. ''मगर मैं दशरथ सरीखी गलती नहीं करूँगा कि तुम में से किसी के साथ पक्षपात करूँ।''

५. ''भद्रों! त्याग और सेवा तो धर्म है। ये धंधे कैसे हुए?''

६. ''मेरा विश्वास है कि राजा को बेईमान और धूर्त होना चाहिए तभी उसका राज टिक सकता है।''

७. ''शुल्क कुछ नहीं लिया जाएगा, पर जब तेरा धंधा चल पड़े तब श्रद्धानुसार गुरूदक्षिणा दे देना।''

५.१.४ दीर्घोत्तरीय प्रश्न

प्रश्न. 'जैसे उनके दिन फिरे' व्यंग्य कथात्मक शैली में लिखी हुई व्यंग्यकार हरिशंकर परसाई जी की उत्कृष्ट रचना है। कैसे ? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर. हरिशंकर परसाई जी अपने इस व्यंग्य में दादी नानी की कहानी की तरह एक

ऐसी कहानी का सृजन करते हैं जो वर्तमान प्रशासनिक व्यवस्था पर अप्रत्यक्ष रुप से कटाक्ष करती है। भारत की आजादी के बाद इसके भविष्य को संवारने-सुधारने और रामराज्य की स्थापना करने का सुनहरा स्वप्न भारतीय जनमानस ने देखा था अवश्य, लेकिन उनके स्वप्न, स्वप्न बन कर ही रह गए। भारतीय राजनीति और प्रशासनिक व्यवस्था के शब्दकोश से सच्चाई, ईमानदारी, मेहनत, लगन, जैसे शब्द धीरे-धीरे विलुप्त होने लगे, इनका स्थान लूटपाट, झूठ-खसोट, मिलावटखोरी, बेईमानी, धूर्तता, वाह्याडंबर, ढोंग-ढकोसले तथा जनमानस के प्रति उत्पीड़न के भाव ने ले लिया। राजा के सबसे छोटे पुत्र की तरह प्रायः सबने खादी की आड़ में अनैतिक, असामाजिक, बिना किसी आदर्श और सिध्दान्त के व्यभिचार का मार्ग अपना लिया। भारतीय जन-मानस का सर्वांगीण विकास, उत्थान करने के बजाय सभी अपने निजी स्वार्थ और सुख के लिए किसी भी सीमा तक गिरने को तत्पर रहने लगे। कुछ लोगों ने मिलावट खोरी को धंधा बनाकर, कुछ लोगों ने लुटपाट गुंडागर्दी मचाकर, तो कुछ लोगों ने आदर्श मर्यादित वेश-भूषा की आड़ में आम जनता को बेवकूफ बनाकर अपना स्वार्थ सिध्द किया। भारतीय राजनीति में होने वाले तमाम घोटाले इस तथ्य को प्रमाणित बनाते हैं।

राजा बनने के आवश्यक गुणों में नैतिक, चारित्रिक और आदर्श आचरण की कोई महत्ता नहीं रही। इसके लिए सबसे आवश्यक गुण बना कि कौन एक वर्ष में कितना अधिक धन एकत्रित करके ला सकता है। वर्तमान राजनीति की भी यही स्थिति है। चुनाव लड़ने और जीतने में इस धन की सबसे अधिक भूमिका हो गई है, बाकी सबकुछ गौण हो गया है। व्यंग्य में यह भी गौरतलब है कि राजा का बड़ा पुत्र मेहनत और ईमानदारी से किसी सेठ व्यापारी के यहाँ बोरे ढोने का काम करता है। उसके परिश्रम और ईमानदारी के बावजूद वह मात्र सौ स्वर्ण मुद्राएँ ही बचा पाता है, कमा पाता है, परन्तु उसके बाकी के तीनों पुत्र अपने जीवन से ईमानदारी और आदर्श निकाल फेंकते हैं और मिलावट खोरी, लुटपाट-गुंडागर्दी तथा मोटे सस्ते वस्त्र की आड़ में अधिक से अधिक लोगों को बेवकूफ बनाकर धन कमाने का मार्ग अपनाते हैं। इसके बदले में वे पाँच, दस, बीस लाख स्वर्ण मुद्राओं से खेलते हैं। इस उदाहरण के माध्यम से व्यंग्यकार ईमानदारी और परिश्रम के बल पर जीने वाले लोगों को हताश

नहीं करना चाहते हैं बल्कि समाज की इस कड़वी सच्चाई को बेपर्दा करना चाहते हैं, उन मिलावट खोरों, गुंडागर्दी लुटमार के बल पर राजनीति करने वालों तथा पाखंडी चोले की आड़ में, मानव सेवा संघ की आड़ में आम लोगों को बेवकूफ बना कर चंदा इकट्ठा करनेवाले की कलई खोलना चाहते हैं, उनकी पोल खोलना चाहते हैं। भारत में 'मानव सेवा संघ' जैसे जितने आश्रम खुलते हैं कि उनका उद्देश्य गरीबों, भूखों, नंगों अपाहिजों, जरुरतमंदों की सहायता कर समाज को विकसित बनाना है, देश को आगे बढ़ाना है और इसके लिए वे अथाह चंदा इकट्ठा करते हैं लेकिन फिर भी इस देश से गरीबी, भुखमरी, अशिक्षा कुपोषण जैसी विकराल समस्याएँ जैसी की तैसी बनी हुई हैं और इन चंदा इकट्ठा करने वालों का जीवन राजसी ठाट-बाट, ऐशो-आराम से भरता जा रहा है।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि व्यंग्यकार हरिशंकर परसाई जी अपने इस व्यंग्य के माध्यम से भारतीय राजनीति और समाज में व्याप्त अनेक विसंगतियों विकृतियों और पाखंडों की पोल खोलना चाहते हैं, उनके प्रति जनमानस को जागरूक बनाना चाह रहे हैं। यही इस व्यंग्य का मुख्य उद्देश्य है।

५.१.५ टिप्पणी

१. 'जैसे उनके दिन फिरे' व्यंग्य का सारांश

२. 'जैसे उनके दिन फिरे' व्यंग्य का उद्देश्य

३. 'जैसे उनके दिन फिरे' व्यंग्य में राजा का चरित्र

४. 'जैसे उनके दिन फिरे' व्यंग्य में राजा के छोटे पुत्र का व्यक्तित्व

५. 'जैसे उनके दिन फिरे' व्यंग्य के राजा के चारों बेटों का चित्रण

६. 'जैसे उनके दिन फिरे' व्यंग्य की मूल संवेदना

७. 'जैसे उनके दिन फिरे' व्यंग्य में निहित व्यंग्य

५.१.६ वस्तुनिष्ठ प्रश्न

१. 'जैसे उनके दिन फिरे' किस विधा की रचना है?

उत्तर. व्यंग्य विधा

२. 'जैसे उनके दिन फिरे' के रचनाकार कौन हैं?

उत्तर. हरिशंकर परसाई

३. राजा, अपनी राजगद्दी क्यों छोड़ना चाहता था?

उत्तर. जीवन की चौथी अवस्था में पहुँचने के बाद राजा अपनी राजगद्दी छोड़कर संन्यास लेकर तपस्या करना चाहता है ताकि वह अपने उस लोक को संवार सके।

४. चाणक्य के अनुसार राजा को अपने पुत्रों क्या समझना चाहिए?

उत्तर. भेड़िया

५. राजा के बड़े पुत्र ने राजा बनने के लिए किन गुणों को आवश्यक समझा?

उत्तर. ईमानदारी और परिश्रम को माना।

६. राजा के दूसरे पुत्र को राजगद्दी पाने के लिए कौन-सा गुण आवश्यक लगा?

उत्तर. साहसी और लुटेरा होना चाहिए।

७. राजा का तीसरा कुमार राजा बनने के लिए किस गुण को आवश्यक मानता है?

उत्तर. बेईमानी और धूर्तता को।

८. राजा के तीसरे बेटे ने कौन सा आश्रम खोला था?

उत्तर. 'मानव-सेवा संघ' आश्रम खोला था।

९. राजा और मंत्री ने किसे राजा बनाया था?

उत्तर. छोटे बेटे को राजा बनाया क्योंकि उसमें बाकी के तीनों बेटों के गुण विद्यमान थे।

१०. आश्रम के प्रधान ने मोटे सस्ते वस्त्र बाहर पहनने को क्यों कहा?

उत्तर. मोटे सस्ते वस्त्र बाहर पहनने पर कर्ण के कवच-कुंडल की तरह ये बदनामी से उसकी रक्षा करेंगे।

५.१.७ अन्य संभावित दीर्घोत्तरीय प्रश्न

१. 'जैसे उनके दिन फिरे' व्यंग्य में निहित व्यंग्य स्पष्ट कीजिए।

२. 'जैसे उनके दिन फिरे' व्यंग्य में चारों बेटों का चरित्र चित्रण कीजिए।

३. 'जैसे उनके दिन फिरे' व्यंग्य के शीर्षक की सार्थकता पर प्रकाश डालिए।

४. 'जैसे उनके दिन फिरे' व्यंग्य में राजा का चरित्र चित्रण कीजिए।

५. 'जैसे उनके दिन फिरे' व्यंग्य के माध्यम से लेखक क्या कहना चाहता है? स्पष्ट कीजिए।

H H H

इकाई ६

६

'महाभारत की एक साँझ' एकांकी – भारत भूषण अग्रवाल

BH$mB éna I m

६.१ लेखक परिचय

६.२ सारांश

६.३ संदर्भ सहित व्याख्या

६.४ दीर्घोत्तरीय प्रश्न

६.५ टिप्पणी

६.६ वस्तुनिष्ठ प्रश्न

६.१ लेखक परिचय

भारत भूषण अग्रवाल छायावादोत्तर हिन्दी साहित्य के एक सशक्त हस्ताक्षर हैं। कवि, लेखक, और समालोचक भारत भूषण का जन्म ३ अगस्त सन् १९१९ को तुलसी जयंती के दिन मथुरा के सतघड़ा मोहल्ले में हुआ तथा निधन २३ जून १९७५ में सूर जयंती के दिन हुआ था। आगरा तथा दिल्ली से उच्च शिक्षा प्राप्त करने के उपरान्त इन्होंने आकाशवाणी, अनेक साहित्यिक संस्थाओं में अपनी सेवा प्रदान की। सन् १९४३ में तारसप्तक के कवियों में इन्हें सम्मिलित किया गया। इनकी प्रमुख कृतियों में छवि के बंधन, जागते रहो, ओ अप्रस्तुत मन, अनुपस्थित लोग, मुक्तिमार्ग, एक उठा हुआ हाथ, उतना वह सूरज है, अहिंसा, चलते-चलते परिणति, प्रश्नचिह्न, फूटा प्रभात, मिलन, विदा, समाधि लेख और विदेह प्रमुख हैं।

सन् १९६० में ये साहित्य अकादमी के ये उपसचिव बने और अकादमी के प्रकाशनों तथा कार्यक्रमों को राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिष्ठित करने में अपनी अह्म भूमिका निभाई ।

६.२ सारांश

प्रस्तुत एकांकी 'महाभारत की एक सांझ' एकांकी में एकांकीकार भारत भूषण अग्रवाल महाभारत की लड़ाई के अंतिम चरण की एक साँझ का दृश्य प्रस्तुत करते हैं जब दुर्योधन की पराजय हो चुकी है और वह मृत्यु शैया पर अपनी अंतिम साँसें गिन रहा है तभी अचानक युधिष्ठिर उससे मिलने आता है। दुर्योधन युधिष्ठर के आने पर उससे कहता है कि वह यहाँ क्या उसकी विवशता देखने आया है? वह चैन से मरना चाहता है और उसकी वहाँ कोई आवश्यकता नहीं है। युधिष्ठिर उससे कहता

है कि उसने सर्वदा अधर्म का साथ दिया। पांडवों के पिता राजा पांडू को राज का अधिकार कार्यवाहक के रूप में मिला था, परन्तु राजा तो वही थे। दुर्योधन भले ही युधिष्ठिर को राजा नहीं बनाता, परन्तु परस्पर बैठकर राज्य का विभाजन करके दोनों शान्तिपूर्ण जीवन जी सकते थे। परन्तु दुर्योधन ने युद्ध ही चुना और अपनी विशाल सेना के साथ पाँच भाइयों को छल-बल से हराने का प्रयास किया परन्तु फिर भी परास्त हो गया। दुर्योधन हँसते हुए कहता है कि उसके साथ सृष्टि के पालनहार श्री कृष्ण थे वरना पांडव कौरवों को कभी नहीं हरा सकते थे। ऊपर से भीष्म पितामह, द्रोणाचार्य यहाँ तक कि श्रीकृष्ण की सेना भी युद्ध कौरवों की ओर से कर रहे थे परन्तु ह्रदय से जीत पांडवों की चाहते थे।

दुर्योधन, युधिष्ठिर से बार-बार आग्रह करता है कि कम से कम मृत्यु की शैया पर तो युधिष्ठिर दुर्योधन को उसके असली नाम से पुकारे जो कि सुयोधन है। दुर्योधन के इस आग्रह को धर्मराज युधिष्ठिर स्वीकार करते हुए उसे सुयोधन कह कर संबोधित करते हैं, साथ ही यह भी कहते हैं कि कौरवों ने हर संभव प्रयास किया कि पाँडवों का विनाश हो जाए। उनकी इस बात को दुर्योधन नकारते हुए कहता है उन लोगों ने पांडवों के साथ कोई छल नहीं किया, यदि अर्जुन बड़ा धनुर्धर होता तो गुरु द्रोणाचार्य ने एकलव्य का अँगूठा नहीं काटा होता, भीम इतना शक्तिशाली होता तो दुर्योधन को हराने में छल से श्री कृष्ण के सहारे की जरूरत नहीं पड़ती। असली योद्धा कर्ण जो कि पांडवों का सगा भाई था उसे शुद्र पुत्र ठहराया, वह सच्चा मित्र और असली योद्धा था उसे भी पांडवों ने धोखे से मारा, दुर्योधन के सभी भाइयों का वध करने के बाद अंधे माता-पिता के एक मात्र लाठी दुर्योधन को भी छल से मारा। अपनी पत्नी द्रौपदी को भी जुए के दाव पर लगा दिया। कुंती माता ने कर्ण के सत्य को पांडवों से नहीं बताया जब कि यह सच कर्ण भी जानता था कि वह पांडवों का सगा भाई है वह धर्मवीर, दानवीर और असली योद्धा था।

तब युधिष्ठिर दुर्योधन से कहता है कि क्या उसे अपने द्वारा किया कुकर्म दिखाई नहीं दे रहा है? क्या उसने जो कुछ भी किया उसपर उसे कोई आत्मग्लानि या पश्चाताप नहीं है? उसे अपनी झूठी प्रशंसा करने की आदत है । फिर भी वह दुर्योधन से उसके अंतिम समय में कहता है कि यदि उसने उसे कोई ठेस पहुँचाई हो तो वह क्षमा चाहता है। इस पर सुयोधन (दुर्योधन) कहता है कि युधिष्ठिर को उसके सामने कोई दिखावा करने की जरूरत नहीं है, उसने जो कुछ भी किया वह अपने और अपने भाइयों के हित के लिए, अधिकार के लिए किया। सारी दुनिया उसे उसके असली नाम 'सुयोधन' के नाम से नहीं बल्कि दुर्योधन के नाम से ही पुकारेगी, युधिष्ठिर और पांडव वीर कहलाएँगे। ये सृष्टि और युग वही जानेगी जो उन्हें इतिहास बताएगा और इतिहास युधिष्ठिर अपनी निगरानी में ही लिखवाएगा। उसे कोई आत्मग्लानि या पश्चाताप नहीं है। वह अब बहुत शान्ति की निद्रा में लीन होने, सोने जा रहा है क्योंकि वह बचपन से अबतक नहीं सो पाया है। अपने जीवन में वह बरगद के पेड़ के नीचे पलनेवाला पौधा बनकर रह गया है परन्तु अब उसके जीवन से अंधकार मिट चुका है। अब उसके समक्ष न पांडव हैं, न कोई राज्य-प्रजा-अधिकार

धर्म-अधर्म, जिज्ञासा, लालसा, झूठ-सच कुछ भी नहीं है। अंतिम वाक्य के रूप में वह यही कहता है कि उसे सदैव इसी बात का दुख रहेगा कि उसके पिता अंधे थे। एकांकी यहीं समाप्त हो जाती है।

६.३ संदर्भ सहित व्याख्या

''जीवन भर मुझसे द्वेष रखा, मृत्यु पर तो मुझे चैन प्रदान होने देते, क्या देखने आए हो मेरी विवशता, या अब भी तुम्हारी छलपूर्ण विजय में कोई त्रुटि रह गई ?''

संदर्भ :

प्रस्तुत अवतरण हमारे पाठ्य पुस्तक गद्य विविधा में निहित एकांकी 'महाभारत की एक साँझ' से अवतरित है। इसके एकांकीकार भारत भूषण अग्रवाल जी हैं।

इस एकांकी में इन्होंने महाभारत की एक साँझ का चित्रण कर एक विवादित पहलू को उजागर किया है और यह सोचने पर विवश किया है कि दुर्योधन का कर्म कोई अधर्म नहीं था।

व्याख्या :

प्रस्तुत अवतरण में उद्धृत वाक्य दुर्योधन का है जब वह मृत्यु शैया पर अपनी अंतिम साँसें गिन रहा है और उससे मिलने के लिए पांडव श्रेष्ठ युधिष्ठिर आता है तो उसे देखकर दुर्योधन कह उठता है कि उसने व पांडवों ने आजीवन उससे द्वेष भाव रखा, छल पूर्वक उन्हें युद्ध में हराया, अब वह वहाँ क्यों आया है? क्या देखने आया है? क्या उसकी विवशता व लाचारी देखने आया है? युधिष्ठिर दुर्योधन से कहता है कि छल व द्वेष उन्होंने नहीं किया बल्कि कौरव हमेशा अधर्म का साथ देते रहे। वे यदि चाहते तो आपसी समझ से राज्य का बँटवारा कर शान्तिपूर्वक रह सकते थे लेकिन दुर्योधन ने शान्ति के स्थान पर युद्ध चुना तो अंत तो इसी प्रकार होना था। इस पर दुर्योधन जिस प्रकार युधिष्ठिर को प्रत्युत्तर देता है वह पांडव के धर्म की जीत पर भी प्रश्न चिह्न लगाता है। लेखक ने अत्यन्त संजीदगी के साथ दुर्योधन और युधिष्टिर की वार्ता को अपनी एकांकी के माध्यम से व्यक्त किया है।

विशेष :

एकांकी 'महाभारत की एक साँझ' में एकांकीकार दुर्योधन को सुयोधन बताकर उसके चरित्र उभारने-निखारने का सार्थक प्रयास किया है जो पाठकों के मन में दुर्योधन के प्रति सहानुभुति पैदा करता है।

संदर्भ सहित व्याख्या हेतु अन्य अवतरण

१. ''मुझे सदैव एक बात का दुख रहेगा कि मेरे पिता अंधे थे।''

२. ''मैंने जो किया, वो मेरे और मेरे भाइयों के अधिकार के लिए था--- मुझे पता है कि सारे युग 'इतिहास' द्वारा छले जाएँगे।''

३. “मैं अब सो रहा हूँ और बहुत शान्ति की निंद्रा में लीन हो रहा हूँ, बचपन से नहीं सो पाया हूँ, बरगद के पेड़ के नीचे पलनेवाला पौधा बन कर रह गया हूँ।”

४. कोई राज्य नहीं है, कोई प्रजा नहीं है, कोई अधिकार नहीं है, कोई धर्म-अधर्म नहीं है, जिज्ञासा नहीं है, लालसा नहीं है, झूठ नहीं है और सच भी नहीं है।

५. “मृत्यु के वक्त तो मुझे मेरे असली नाम से बुला लो अगर मुझसे इतनी ही सांत्वना है तो ?”

६. “सब युद्ध मेरी तरफ से लड़ रहे थे परंतु विजय तुम्हारी चाहते थे।”

७. “ये सृष्टि और ये युग वही जानेगी जो उन्हें इतिहास बताएगा, और मुझे ज्ञात है कि तुम इतिहास अपनी देखरेख में ही लिखवाओगे।”

८. “ऐसे क्या कर्म किए हैं? मैंने क्या अनुचित किया? तुम तो पाँच भाई थे, मेरे तो सौ भाई थे। क्या उत्तर देता सबको?”

९. “मुझे कदापि ज्ञात नहीं था कि ऐसा उसके साथ होगा, उस चक्रव्यूह का औचित्य अर्जुन के लिए था— मुझे पता होता, तो मैं उसका वध नहीं होने देता।”

६.४ दीर्घोत्तरीय प्रश्न

प्रश्न १ ‘महाभारत की एक साँझ’ एकांकी का उद्देश्य लिखिए।

उत्तर : भारत भूषण अग्रवाल द्वारा रचित एकांकी ‘महाभारत की एक साँझ’ का मुख्य उद्देश्य महाभारत में दुर्योधन के चरित्र को उभारना और निखारना है। यह एकांकी अपने पाठकों के मन में धर्मराज युधिष्ठिर और पांडवों के प्रति अनेक सवाल उत्पन्न करती है तो वहीं कौरवश्रेष्ठ दुर्योधन के प्रति सद्भाव व सहानुभूति जगाती है। एकांकी में कौरवों का अग्रज दुर्योधन जो कि मृत्यु शैया पर पड़ा है वह कौरवों का पक्ष रखता है, वह मृत्यु शैया पर पड़े होने और महाभारत के युद्ध में पराजित हो जाने के बावजूद पूरे गर्व और आत्मप्रशंसा के अंदाज में युधिष्ठिर से बातें करता है तथा मरते वक्त उसे उसके असली नाम से पुकारने का आग्रह करता है। तो वहीं युधिष्ठिर जिन्हें धर्मराज कहा जाता है वह दुर्योधन के समक्ष पांडवों और सत्य धर्म का पक्ष रखता है । युधिष्ठिर दुर्योधन को उसके असली नाम ‘सुयोधन’ कह कर संबोधित भी करता है और किसी बात के लिए ठेस पहुँचने के लिए माफी भी माँगता है। दुर्योधन की सभी बातों, सभी प्रश्नों का उत्तर युधिष्ठिर देता है। परन्तु दुर्योधन, धर्मराज युधिष्ठिर को जो आइना दिखाता है, जिस तरह से बातें उनके समक्ष रखता है, जितनी तार्किकता से उनके समक्ष अनेक प्रश्न रखता है, उसके समक्ष युधिष्ठिर

बौना नजर आता है और धर्मराज युधिष्ठिर तथा पांडवों की जीत पर, अधर्म पर धर्म की जीत पर अनेक सवाल उठाता है जो कि अपने आप में विवादित मुद्दा हो सकता है।

इस प्रकार कहा जा सकता है कि 'महाभारत की एक साँझ' एकांकी का उद्देश्य दुर्योधन के चरित्र को ग्लोरिफाई करना, उभारना-निखारना है क्योंकि दुर्योधन की बातें सुनकर युधिष्ठिर भी थोड़ी देर के लिए शान्त हो जाता है उसके पास दुर्योधन के इन प्रश्नों का, मसलन युधिष्ठिर ने अपनी पत्नी को जुए के दांव पर क्यों लगाया? अपने सगे भाई कर्ण का वध धोखे से क्यों किया? यदि अर्जुन बड़ा धनुर्धर था तो एकलव्य का अँगूठा क्यों काटा गया, भीम ने दुर्योधन को हराने के लिए छल से कृष्ण का सहारा क्यों लिया? कृष्ण ने दुर्योधन की माता को क्यों छला? कुंती ने कर्ण का सच पांडवों से क्यों नहीं बताया? युधिष्ठिर के अपने पाँच भाइयों को उत्तर देना था लेकिन दुर्योधन अपने सौ भाइयों को क्या जवाब देता? इन तमाम प्रश्नों का उत्तर युधिष्ठिर के पास नहीं था।

इन तमाम प्रश्नों-प्रसंगों के माध्यम से एकांकीकार भारत भूषण अग्रवाल महाभारत में वर्णित-चित्रित दुर्योधन के चरित्र को पुनरावलोकन करने हेतु प्रेरित करते हैं, उसे एक नई दृष्टि से व्याख्यायित करने का भाव पाठकों के मन में जागृत करते हैं। यही इस एकांकी का उद्देश्य है।

६.५ टिप्पणी

१. 'महाभारत की एक साँझ' की कथावस्तु

२. 'महाभारत की एक साँझ' में चित्रित दुर्योधन का चरित्र

३. 'महाभारत की एक साँझ' में चित्रित युधिष्ठिर का चरित्र

४. 'महाभारत की एक साँझ' में दुर्योधन और युधिष्ठिर की बातचीत

५. 'महाभारत की एक साँझ' एकांकी में घटित-घटना.

६.६ वस्तुनिष्ठ प्रश्न :

१. 'महाभारत की एक साँझ' किस विधा की रचना है?-एकांकी

२. 'महाभारत की एक साँझ' एकांकी के रचनाकार कौन है?- भारत भूषण अग्रवाल

३. 'महाभारत की एक साँझ' एकांकी के मुख्य पात्र कौन-कौन है?--दुर्योधन और युधिष्ठिर

४. 'महाभारत की एक साँझ' में कब कौन किससे मिलने आता है? 'महाभारत की एक साँझ' एकांकी में महाभारत के युद्ध के अंतिम चरण में एक शाम युधिष्ठिर मृत्यु शैया पर पड़े अपनी अंतिम साँसें गिन रहे दुर्योधन से मिलने आता है।

५. अपनी मृत्यु के वक्त दुर्योधन युधिष्ठिर से उसे किस नाम से पुकारने के लिए कहता है?- उसके असली नाम-सुयोधन के नाम से।

६. दुर्योधन के अनुसार युधिष्ठिर इतिहास कैसे लिखवाएगा?- अपनी देख-रेख और निगरानी में लिखवाएगा।

७. मरते समय दुर्योधन को किस बात का दुख था-कि उसके पिता अंधे थे।

८. दुर्योधन के अनुसार सच्चा योद्धा, दानवीर और धर्मी कौन था?--कर्ण

९. गुरूद्रोणाचार्य ने किसका अँगूठा और क्यों काटा था?--उन्होंने एकलव्य का अँगूठा काटा था ताकि अर्जुन सबसे बड़ा धनुर्धर बन सके।

१०. कर्ण वास्तव में किसका पुत्र था और सभी लोग उसे क्या समझते थे? कर्ण, कुंती का पुत्र था परन्तु सभी उसे शुद्र पुत्र समझते थे क्योंकि एक शुद्र परिवार ने उनका पालन पोषण किया था।

६.७ अन्य संभावित दीर्घोत्तरीय प्रश्न

१. 'महाभारत की एक साँझ' एकांकी में घटित घटना का वर्णन कीजिए।

२. 'महाभारत की एक साँझ' एकांकी के माध्यम से लेखक क्या कहना चाहता है? स्पष्ट कीजिए।

३. 'महाभारत की एक साँझ' एकांकी में दुर्योधन और युधिष्ठिर की बातचीत पर प्रकाश डालिए।

४. 'महाभारत की एक साँझ' एकांकी के अनुसार युधिष्ठिर का चरित्र-चित्रण कीजिए।

५. 'महाभारत की एक साँझ' एकांकी के अनुसार दुर्योधन के चरित्र पर प्रकाश डालिए।

६. 'महाभारत की एक साँझ' एकांकी में लेखक की व्यक्त भावना स्पष्ट कीजिए।

७. 'महाभारत की एक साँझ' एकांकी के उद्देश्य पर प्रकाश डालिए।

H H H

इकाई ६.१

६.१

'सरहद के उसपार' (रिपोर्ताज) – फणीश्वरनाथ रेणु

इकाई की रुपरेखा

६.१.१ इकाई की रुपरेखा

६.१.२ लेखक परिचय

६.१.३ संदर्भ सहित व्याख्या

६.१.४ दीर्घोत्तरीय प्रश्न

६.१.५ टिप्पणी

६.१.६ वस्तुनिष्ठ प्रश्न

६.१.७ अन्य संभावित दीर्घोत्तरीय प्रश्न

६.१.१ लेखक परिचय

फणीश्वरनाथ रेणु का जन्म ४ मार्च सन् १९२१ को बिहार के अररिया जिले में स्थित हिंगना गाँव में हुआ था। इनकी शिक्षा-दीक्षा भारत और नेपाल के विराटनगर से संपन्न हुई। ये एक सफल उन्यासकार, कहानीकार, रिपोर्ताज लेखक हैं। 'मैला आँचल' इनके द्वारा रचित अत्यन्त प्रसिद्ध उपन्यास है जिसमें इनकी तुलना प्रेमचंद से की गई। इनकी अन्य साहित्यिक कृतियाँ हैं-

उपन्यास- मैला आँचल, परती कथा, जुलूस, दीर्घतपा, कितने चौराहे, पलटू राम रोड

कहानी संग्रह- एक आदिम रात्रि की महक, ठुमरी, अग्निखोर, अच्छे आदमी

रिपोर्ताज- ऋण जल, धन जल, नेपाली क्रांतिकथा, वनतुलसी की गंध, श्रुत-अश्रुत पूर्वे

प्रसिद्ध कहानियाँ- मारे गए गुलफ़ाम (तीसरी कसम), एक आदिम रात्रि की महक, लाल पान की बेगम, पंचलाइट, तबे एकला चलो रे, ठेस, संवदिया। इन्हें 'मैला आँचल' उपन्यास के लिए 'पद्मश्री' सम्मान मिला था ।

६.२.१ सारांश

फणीश्वर नाथ रेणु रिपोर्ताज लेखन के प्रमुख हस्ताक्षर हैं। इन्होंने अपने इस 'सरहद के उस पार' रिपोर्ताज में भारत के पड़ोसी मित्र देश नेपाल की राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक और प्रशासनिक दशा का वर्णन किया है।

रिपोर्ताज रचनाकार रेणु जी ने इस रिपोर्ट में बताया है कि बिहार स्थित कटिहार जिले से दस गज की दूरी पर नेपाल राज्य का विराट नगर स्थित है। विराटनगर कल-कारखानों, 'मिलों का नगर है।' हिमालय की गोद में बसा नेपाल हिमालय की सुनहरी चोटियों से घिरा हुआ, मनमोहक सुन्दर है, जहाँ जाने के लिए किसी का भी दिल मचल उठता है। कटिहार से अपनी तलाशी देकर यदि आपके पास से कोई आपत्तिजनक चीज नहीं निकलती तो आराम से जाया जा सकता है वरना म्युनिसिपलटी के कुड़ा ढोने वाले ट्रक में भी जगह नहीं मिलेगी। यदि गलती से भी कोई स्वयं को सोशलिस्ट कह दे या विराटनगर में मजदूर यूनियन बनाने की बात कह दे या मजदूरों की, दलित का अध्ययन करनेवाला बता दे तो उसकी सारी किताबें, सारी चीजें जब्त कर ली जाएँगी, उसके सामने अनेक मुश्किलें खड़ी कर दी जाएँगी।

नेपाल की प्रकृति की गोद में जूट मिल्स, कॉटन मिल्स के मालिकों-साहबों के लिए एक से बढ़कर एक स्वर्ग-सा आनन्द देने वाले सुन्दर-सुन्दर बंगलो बने हुए हैं जहाँ बड़े बड़े मालिक-साहब-अधिकारी-नेता बड़े आराम से आनन्दमय जीवन जीते हैं और नेपाल सरकार उन तमाम पूँजीपतियों रूपी जहरीले साँपों को हर तरह की सहायता-सहूलियतें प्रदान करती है । नेपाल सरकार के सहयोग से ही ये जहरीले साँप (पूँजीपति वर्ग) अपनी आबादी बढ़ा रहे हैं मसलन मैंच फैक्टरी, हाइड्रो-इलैक्ट्रिक, सूगर मिल्स, पेपर मिल्स और सीमेन्ट मिल्स धड़ाधड़ खुल रही हैं। इसके साथ ही अबोध नेपाली जनता की गाढ़ी कमाई की रकम विदेशी बैकों के खाते में भरी जा रही है। नेपाली जनता की जिन्दगी दिन-प्रतिदिन बदतर होती जा रही है क्योंकि नेपाल राज्य इन पूँजीपतियों के घर का बंधक न बन जाए, इसी बात की आशंका है। हालाँकि अब नेपाल के चैतन्य समाज की आँखें खुल चुकी हैं, लोग धीरे-धीरे जागरूक हो रहे हैं। अब जनता भी समझने लगी है कि नेपाल के निरंकुश शासकों और इन पूँजीपतियों में गहरी सांठ-गाँठ है। इस गठबंधन के खिलाफ अब यहाँ जबर्दस्त सफल क्रान्ति होगी।

लेखक ने नेपाल की परिस्थितियों का गहरा अध्ययन किया है। उसने नेपाल के जंगलों में राजनीति और साहित्य की शिक्षा प्राप्त की है, नेपाल की काठ की कोठरी में समाजवाद को समझा, पहाड़ की कंदराओं में बैठकर रूस की राज्यक्रान्ति का नेपाली भाषा में अनुवाद करते हुए उस नेपाली पागल नौजवान की चमकती हुई आँखों को अपनी जिन्दगी में मशाल के रूप में ग्रहण किया है।

सन् १९४२ में नेपाल के बापू ने वहाँ प्रजातंत्र कायम करने का सपना देखा था परन्तु उन्हें नेपाल सरकार ने मार डाला ।

उनके जाने के बाद शिक्षित जागरूक युवकों ने उनके इस मशाल को जलाए रखा। ये सभी समाजवाद के हिमायती थे। हिन्दुस्तान में नेपाली काँग्रेस का जन्म और प्रसिद्ध समाजवादी श्री विश्वेश्वर प्रसाद कोइराला की रहनुभाई में लेखक के इस कथन की सत्यता को जाँचा परखा जा सकता है। अंग्रेजों के जाने के बाद नेपाल

के गुरखों ने कभी गलती से भी एक राउंड गोली हिन्दुस्तानी नागरिकों पर चला दी तो नेपाल की एक तिहाई आबादी आत्म-ग्लानि से सिर झुका लेगी। भारत की अगली क्रान्ति में नेपाल जबर्दस्त हिस्सा लेगा। पर हमारे देश के नेताओं की निगाह में दुनिया भर के लिए दर्द है परन्तु नेपाल की शोषित जनता के लिए उनके मुँह से एक शब्द नहीं निकलता।

अब नेपाल में प्रगतिशील साहित्यकारों, कलाकारों की संख्या बढ़ रही है। नेपाली साहित्य 'सिपाही', 'कैकयी', 'परालो को आग' आदि रचनाओं को लेकर नेपाल की साहित्यिक मंडली दुनिया की किसी भी साहित्यिक प्रतियोगिता में सम्मान प्राप्त कर सकती है। प्रकृति-सुषमा से संबंधित साथ ही यथार्थवादी रचनाओं की भी यहाँ कमी नहीं है। नेपाल खूबसूरत देश है परन्तु समय के साथ यह पिछड़ता जा रहा है। बरसात में सड़कों पर घुटने-घुटने भर कीचड़, गर्मियों में धूल, गरीबी, भ्रष्टाचार अशिक्षा जैसी तमाम समस्याएँ ऐसी हैं, जिसका समाधान कर नेपाल को और सुन्दर बनाया जा सकता है परन्तु शासक वर्ग और ठेकेदारों की मिली भगत से गड़बड़-घोटालों को समझना आसान नहीं है क्योंकि इस कौम को यहाँ की सरकार ने सदियों से मूर्ख-अनपढ़ बनाकर अंग्रेजी सरकार की सेवा के लिए रिजर्व रखा है। परन्तु अब इनमें समझ आने लगी है जागरूकता बढ़ने लगी है, शासक वर्ग की चाल समझ में आने लगी है।

६.१.३ संदर्भ सहित व्याख्या

''कम से कम प्रत्येक पाँच साल के बाद भी, गरीब जनता के पैसों का पंचमांश ही इन सड़कों पर खर्च किए जाते तो, चाँदी की चमचमाती हुई सड़क के किनारे सोने के माइलस्टोन गड़े होते।''

संदर्भ :

प्रस्तुत गद्यांश हमारे पाठ्य पुस्तक गद्य विविधा में निहित रिपोर्ताज 'सरहद के उस पार' से अवतरित है। इस रिपोर्ताज के लेखक फणीश्वर नाथ रेणु जी हैं। इन्होंने इस रिपोर्ताज में नेपाल की राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, साहित्यिक स्थितियों का रेखाचित्र खींचा है।

व्याख्या :

प्रस्तुत अवतरण में फणीश्वर नाथ रेणुजी ने नेपाल की सड़कों पर प्रकाश डालते हुए लिखा है कि नेपाल देश की बाकी सड़कों की स्थिति कितनी जर्जर और खतरनाक है यह तो दूर की बात है। यहाँ का राजपथ जो कि वी.आई.पी. सड़क है उसकी स्थिति ऐसी है कि वहाँ धूल ही धूल है। बरसात में इन सड़कों पर घुटनों तक कीचड़ भरा होता है। सरकार, आम गरीब जनता से जितना टैक्स वसूल करती है कम से कम प्रत्येक पाँच वर्ष के बाद भी उस धन का पाँचवा हिस्सा भी यदि सड़कों को सुधारने, इन्फास्ट्रक्चर पर खर्च करती तो सड़कें चाँदी-सी चमचमाने लगतीं, सड़कों के किनारे

सुनहरे माइलस्टोन गड़े रहते, पर्याप्त रोशनी रहती और नेपाल के राजपथ की सड़कों की शान कुछ और ही रहती।

विशेष :

इस रिपोर्ताज में नेपाल देश की वर्तमान दशा का बहुत यथार्थपरक वर्णन हुआ है। साथ ही प्रशासन की तटस्थता, उदासीनता का भी सजीव चित्रण हुआ है।

अन्य संदर्भ सहित व्याख्या

१. ''मैं सोशलिस्ट हूँ और विराटनगर में मजदूर यूनियन कायम करने आया हूँ अथवा मजदूरों की हालत का अध्ययन करने आया हूँ।''

२. ''बस, आप निराश हो गए? मैं कहता हूँ, सुनिये- बहुत शीघ्र ही यहाँ जबर्दस्त क्रान्ति होगी और सफल क्रान्ति होगी''

३. ''इस कौम को यहाँ की सरकार ने सदियों से मूर्ख और अनपढ़ बनाकर अंग्रेजी सरकार की सेवा के लिए रिजर्व रखा है।''

४. ''यह राजपथ है। इसकी धूल से आप परेशान हैं। बरसात में तो इन सड़कों पर घुटनों तक कीचड़ होते हैं।''

५. ''किन्तु यहाँ के ठेकेदारों और शासक वर्ग के गड़बड़ घोटालों को आप नहीं समझ सकेंगे।''

६. ''मौसी जी, यह मस्के की खिचड़ी किस चीज के साथ खाऊँ ? घर में नमक भी नहीं है—जैसी हृदय को विगलित कर देनेवाली 'रियलिस्टिक' रचनाओं की भी वहाँ कमी नहीं। काश! प्रजा की अपनी पत्र-पत्रिकाएँ होतीं! ....''

६.१.४ दीर्घोत्तरीय प्रश्न

प्रश्न १ 'सरहद के उस पार' रिपोर्ताज का उद्देश्य लिखिए।

उत्तर : 'सरहद के उस पार' फणीश्वरनाथ रेणु द्वारा लिखित एक यथार्थपरक रिपोर्ताज है। इस रिपोर्ताज का उद्देश्य है नेपाल की राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक दशा का सजीव रेखाचित्र खींचना, वहाँ की स्थिति से जनमानस को रूबरू करवाना। इस रिपोर्ताज में दर्शाया गया है कि नेपाल की राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक दशा जर्जर है। यहाँ का विराट नगर 'मिलों का नगर' कहलाता है। यहाँ पूँजीपतियों का वर्चस्व दिनोंदिन बढ़ता जा रहा है क्योंकि नेपाल सरकार उन तमाम पूँजीपतियों को तमाम तरह की सहायता-सहूलियतें प्रदान करती है परन्तु यहाँ की आम जनता मूलभूत जरूरतों के लिए तरस रही है। समाज में अशिक्षा, बेरोजगारी, गरीबी, बिजली,

पानी, सड़क जैसी समस्याएँ मुँह बाए खड़ी हैं परन्तु सरकार की इनमें कोई दिलचस्पी नहीं, ना ही कुछ करने चाहत है। नेपाली आम जनता की जिन्दगी बद से बदतर होती जा रही है परन्तु सरकार के कानों पर जूँ नहीं रेंग रही है।

समय के साथ-साथ अब जनता सचेत, जागरूक होने लगी है। अब वह नेपाल के निरंकुश शासकों के साथ पूँजीपतियों की गहरी साँठ-गाँठ के पीछे के षडयंत्र को भली भाँति समझने लगी है। अब वह यहाँ समाजवाद का नारा बुलन्द करने हेतु क्रान्ति करने से भी पीछे नहीं हटेगी।

इस रिपोर्ताज का उद्देश्य यह बताना भी है कि नेपाल की अपनी संस्कृति है । ये भारतवासियों के ख़िलाफ़ कभी हथियार नहीं उठाते फिर भी हमारे नेतागण इनके विकास के से प्रति उदासीन है, उनके विषय में अपना मुँह नहीं खोलते हैं। यहाँ के साहित्यकारों की लेखनी से निकलने वाली रचनाओं में 'कैकेयी', 'सिपाही', 'परालो की आग' जैसी रचनाएँ सम्मिलित हैं जिनके पात्र भारतीय ही हैं। दरअसल सरहद के इस पार और सरहद के उस पास की सभ्यता, संस्कृति, सोच-विचार किसी भी परिप्रेक्ष्य में देखने पर स्पष्ट होगा कि दोनों देशों में काफी हद तक समानता है। यही इस रिपोर्ताज का उद्देश्य है।

६.१.५ टिप्पणी

१. नेपाल की आर्थिक, सामाजिक दशा

२. 'सरहद के उस पार' रिपोर्ताज का सारांश

३. नेपाल का प्राकृतिक सौन्दर्य

४. नेपाल और पूँजीपति वर्ग

५. नेपाल में पूँजीपतियों और शासक वर्ग का गठबंधन

६. नेपाल की दशा और दिशा

७. 'सरहद के उस पार' रिपोर्ताज में चित्रित नेपाल

६.१.६ वस्तुनिष्ठ प्रश्न

१. 'सरहद के उस पार' किस विधा की रचना है?- रिपोर्ताज

२. 'सरहद के उस पार' के लेखक कौन हैं?-फणीश्वरनाथ रेणु

३. 'सरहद के उस पार' रिपोर्ताज में किस देश का वर्णन है?- नेपाल का।

४. कटिहार जिले से नेपाल की दूरी कितनी है?- दस गज

५. विराटनगर को अन्य किस नाम से जाना जाता है?--मिलों का नगर

६. नेपाल में किसका प्रभाव बढ़ता जा रहा है?- पूँजीपतियों का

७. लेखक को राजनीति और साहित्य की शिक्षा कहाँ मिली?- नेपाल के जंगलों में।

८. लेखक ने समाजवाद की प्रारंभिक पुस्तकों को कहाँ पढ़ा?-एक नेपाली की काठ की कोठरी में।

९. नेपाली भाषा में किस क्रांति का अनुवाद किया गया?- रूस की राज्य क्रान्ति का

१०. किन्हीं दो नेपाली रचनाओं के नाम लिखिए।
(१) कैकेयी (२) सिपाही (३) परालो की आग

६.१.७ अन्य संभावित दीर्घोत्तरीय प्रश्न

१. 'सरहद के उस पार' रिपोर्ताज का उद्देश्य लिखिए।

२. 'सरहद के उस पार' रिपोर्ताज में निहित नेपाल की स्थिति पर प्रकाश डालिए।

३. 'सरहद के उस पार' और 'सरहद के इस पार' में क्या अंतर और क्या समानताएँ है ? स्पष्ट कीजिए।

४. 'सरहद के उस पार' रिपोर्ताज में चित्रित राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक दशा का चित्रण कीजिए।

५. नेपाल के विषय में लेखक फणीश्वरनाथ रेणु के अध्ययन पर प्रकाश डालिए।

H H H

इकाई ७ **७**

‘आज के अतीत’ (आत्मकथा) – भीष्म साहनी

इकाई की रूपरेखा

७.१ इकाई की रूपरेखा

७.२ लेखक परिचय

७.३ सारांश

७.४ संदर्भसहित व्याख्या

७.५ आत्मकथा का उद्‌देश्य

७.६ संभावित दीर्घोत्तरीय प्रश्न

७.७ टिप्पणी

७.८ लघुत्तरीय प्रश्न

७.२ लेखक परिचय

सुप्रसिध्द समकालीन कहानीकार, उपन्यासकार व नाटककार भीष्म साहनी अपने समय और समाज को प्रगतिशील दृष्टि से प्रस्तुत करने वाले रचनाकार हैं। इनका जन्म ८ अगस्त १९१५ को रावलपिंडी में हुआ। इन्होंने अंग्रेजी साहित्य में एम.ए. व पी-एच.डी.की। १९४७ में देश-विभाजन के दौरान ये दिल्ली आ गए। इस घटना का उनके दिल व दिमाग पर काफी गहरा असर पड़ा। इसीलिए विभाजन की त्रासदी उनके कथा-साहित्य का एक मार्मिक पड़ाव है। वे कुछ समय बम्बई में रहे और फिर क्रमशः अंबाला और दिल्ली में अंग्रेजी के प्राध्यापक रहे। लगभग सात वर्षो तक वे ‘विदेशी भाषा प्रकाशन गृह’ मास्को से जुड़े रहे अपने इस प्रवासकाल के दौरान उन्होंने सिर्फ रूसी भाषा का अध्ययन ही नहीं किया बल्कि अनेक रूसी पुस्तकों का अनुवाद भी किया।

इनके कहानियों के विषय सामाजिक व राजनीतिक विसंगतियों से संबंधित होते हैं। इनकी दृष्टि यथार्थवादी है इन्होंने आधुनिक जीवन की विसंगतियों पर करारा व्यंग्य किया है। इनकी कहानियों के कथानक मानवीय संवेदनाओं को लेकर चलते हैं। अपनी स्पष्टवादिता के कारण वे साहित्य जगत में काफी चर्चित रहे हैं। इनकी प्रमुख कहानी संग्रहों में— ‘भाग्य रेखा’, ‘पटरियाँ’, ‘वाङ्‌चू’, ‘पहला पाठ’, ‘भटकती राख’, ‘शोभायात्रा’, ‘प्रतिनिधि कहानियाँ’ तथा ‘चर्चित कहानियाँ’, आदि हैं। उनके प्रसिध्द उपन्यासों में-- ‘झरोखे’, ‘कड़ियाँ’, ‘तमस’, ‘बसंती’ तथा ‘नीलू नीलिमा नीलोफर’, आदि हैं। नाटकों के अंतर्गत-- ‘कबिरा खड़ा बाजार में’, ‘हानूश’ तथा ‘आलमगीर’ आदि प्रमुख हैं।

भीष्म साहनी ने कहानियों के माध्यम से अपने युग के यथार्थ को अभिव्यक्ति दी है। इन्होंने स्वतंत्रता के पश्चात देश में व्यापक स्तर पर फैल रहे भ्रष्टाचार, शोषण, भाई-भतीजावाद व अवसरवाद आदि को कहानियों के माध्यम से बेनकाब करने का प्रयास किया है, जिन्होंने हमारे सामाजिक मूल्यों की नींव हिला दी हैं। इस प्रकार हम देखते हैं कि साहनी जी की कहानियों में वर्तमान स्थिति के प्रति असंतोष के साथ-साथ परिवर्तनशील समाज की अपेक्षाएँ भी परिलक्षित होती हैं।

'आज के अतीत' से आत्मकथ्य का सारांश :

'आज के अतीत' से भीष्म साहनी का अत्यंत ही मार्मिक आत्मकथ्य है। इसमें आधुनिक समय की बिडम्बनाओं को बड़ी गहराई से रेखांकित किया गया है। लेखक को याद आता है कि जिस समय उसने 'तमस' उपन्यास लिखने की शुरूआत की थी। उस दौरान जब वे अपने मित्र बलराज जी के घर मुम्बई पहुँचे तो उन्हें पता चला दो दिन पहले ही मुम्बई से सटे भिवंडी में दंगा हुआ था। उनके मित्र बलराज जी अपने कुछ साथियों ख्वाजा अहमद अब्बास और आई.एस. जौहरी के साथ वहाँ जा रहे थे। मोटर कार में एक आदमी की जगह खाली थी इसीलिए मैं भी साथ हो लिया।

भिवंडी बुनकरों का नगर था। जिसे लूटेरों की नजर लग गई। जब हम वहाँ पहुँचे तो दंगे के बाद के मंजर को देखकर हैरान रह गए। जगह-जगह पुलिस के संतरियों के तंबू लगे थे। सड़क पर सिर्फ आवारा कुत्ते दिखाई दे रहे हैं। जगह-जगह भांडा-टिंडर बिखरे हुए थे। अपने घरों के बरामदे व छतों से झाँकते लोग मूर्तिवत दिखाई दे रहे थे। चारों ओर सन्नाटा छाया हुआ था। पेड़ों पर बैठे गिद्द और चील अपना भोजन तलाश रहे थे। गलियाँ लाँघते हुए अपने कदमों की आवाज, अपने को ही सुनाई दे रही थी। गृहणियाँ अपने घरों की दहलीज पर खड़ी अपनों के आने का इंतजार कर रही थीं।

इस नगर की एक विशेषता यह भी थी कि यहाँ पर साझे-कारोबार, साझे लेन-देन व साझे आदान-प्रदान के उदाहरण मिल जाते हैं। जिनमें हिन्दू और मुसलमान का मिलकर दुकान चलाना व बुनकरों के काम में हिन्दू-मुसलमानों की शिरकत शामिल थी।

लेखक अब दिल्ली वापस आ गए थे। अचानक उन्हें रावलपिंडी के दंगों का स्मरण हो आता है। वहाँ के काँग्रेस के उनके साथी योगी रामनाथ, बख्शी जी, बाली जी, हकीमजी, अब्दुल अजीद, मेहरचंद आहूजा, अजीज, जरनैल.... मास्टर अर्जुनदास... आदि आखों के सामने घूमने लगते हैं। योगी जी इन दंगों को लेकर काफी चिंतित दिखाई दे रहे थे। वे कमीश्नर से कह रहे थे कि फसाद को जितना जल्दी हो सके रोकना अनिवार्य है। नहीं तो शहर पर चीलें उड़ेंगी। कमीश्नर इस बात को लेकर चिंतित हैं कि फौज पर उसका हुक्म नहीं चलता अन्यथा वह फौज को तैनात कर देता। उन्हें गाँधी के वे वाक्य याद आते हैं- ''पाकिस्तान मेरी लाश पर।'' स्वयं का पंडित नेहरू के साथ कौमी झण्डे में नीचे नाचना आदि। तब लेखक को ऐहसास होता

है कि ''किसी उपन्यास की रचना लेखक की कलम नहीं करती, उसका मस्तिष्क नहीं करता, उसका भावविहवल ह्रदय करता है।''

तभी लेखक के सामने थोहा खालसा की यात्रा के दृश्य घूमने लगते हैं। उसे उस कुएं की याद आती है जहाँ पर दसियों सिख स्त्रियाँ आपनी असमत बचाने के लिए कुएं में कूद मरी थीं। बाद में लाशें फूलकर ऊपर तक आ गई थी। उन पर सफेद पाउडर छिड़का जा रहा था। ताकि लाशें एक-दूसरे से न उलझें। कुएं के आस-पास खड़े सरदार अपनी घरवाली, बच्चों व सगे संबंधियों को देखकर फफक उठते थे। लेखक कहता है कि इस उपन्यास का कथानक भले ही वास्तविक जीवन से उठाया गया हो, इसके पात्र वास्तविक जीवन से उठाए गए पात्र हों फिर भी काल्पनिक पात्र उसके सहगामी होने लगते हैं। वह बताते हैं कि इस उपन्यास में सूअर मारने वाला नत्थू और उसकी पत्नी दोनों ही काल्पनिक हैं। लेखक का मानना है कि उपन्यास के पात्र यदि विश्वसनीय हो तो उनके काल्पनिक व वास्तविक होने से कोई फर्क नहीं पड़ता।

काल्पनिक व वास्तविक जीवन से उठाई गई घटना के संबंध में बात करते हुए लेखक कहता है कि कल्पना की उड़ान से मतलब मनगढ़ंत चित्रण नहीं है बल्कि कथानक के विकास के अनुरूप ही काल्पनिक पात्रों का व्यवहार व नई-नई स्थितियों का आविष्कार भी होना चाहिए। तभी वास्तविक जीवन के अंदर पाई जाने वाली सच्चाई का उद्घाटन कल्पना द्वारा होगा। वरना आप पढ़ते रहिए, जितना तथ्य आँकड़ों की मदद से लिखेंगे उतनी ही रचना कमजोर होती जाएगी।

लेखक को मिशन अस्पताल के बारामदे का दृश्य याद आ जाता है। जो जख्मी शरणार्थियों से भरा है। जख्मी त्रिलोक सिंह कहता है कि ''रब्ब झूठ न बुलवाए, मुझे हमीदे ने नहीं मारा। मेरे सिर पर गंड़ासा पिछली ढोल से आए किसी अनजान आदमी ने मारा था।'' इस प्रकार स्मृतियों के आधार पर निर्मित उपन्यास का कोई बँधा-बधाया कथानक नहीं होता इसलिए यादों के दबाव में लिखे उपन्यास, गठन की दृष्टि से शिथिल होते हैं।

आगे इसी उपन्यास पर गोविन्द निहलानी ने इस पर फिल्म तैयार की। फिल्मों के संबंध में लेखक बताता है कि फिल्मकार जिस रचना को लेकर फिल्म बनाता है। उसमें आए पात्रों से संबंधित परिवेश को अभिव्यक्ति देता है। जैसे घरों का पूरा का पूरा मुहल्ला तैयार करना, फिल्म स्टूडियों के अंदर पूरा का पूरा गुरुद्वारा तैयार किया गया। लेकिन इस फिल्म में लेखक शरणार्थियों वाले दृश्य पर जोर देता है। लेखक की पत्नी शीला कुछ रिफ्यूजी औरतों से बात कर रही थी जो फिल्म में एक्स्ट्रा काम कर रही थी। तब शीला ने बताया तुम लोग रिफ्यूजियों का सीन दिखा रहे हो वह जिनसे में बातें कर रहीं थी वे सच की रिफ्यूजी हैं। जब पाकिस्तान अलग हुआ था तब ये लोग घर छोड़कर भागते हुए यहाँ आ पहुँचे।

इस प्रकार लेखक ने उपन्यास रचते समय प्राप्त की जाने वाली सामग्री के विविध आयामों को हमारे समक्ष रखने का प्रयास किया है। लेखक ने स्मृतियों की

भी उपन्यास रचने में महत्वपूर्ण भूमिका को स्वीकार किया है। उन्होंने यथार्थ के साथ-साथ कल्पना को भी समान महत्त्व दिया बशर्ते घटनाओं की विश्वसनीयता स्खलित न हो।

दिए गए **अनुच्छेद की संदर्भसहित व्याख्या** लिखिए।

अनुच्छेद :

''उपन्यास की सच्चाई के मानदंड इस बात पर निर्भर नहीं होते कि अमुख घटना वास्तव में घटी थी या नहीं, बल्कि इस बात पर कि जीवन के समूचे यथार्थ के परिप्रेक्ष्य में यह घटना विश्वसनीय बन पाई है या नहीं।''

संदर्भ :

प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक गद्य-विविधा के 'आज के अतीत' नामक 'आत्मकथ्य' से लिया गया हैं जिसे भीष्म साहनी ने लिखा है।

प्रसंग :

इस गद्यांश में उपन्यास की विश्सनीयता को बनाये रखने के पैमानों की चर्चा की गई है।

व्याख्या :

लेखक भीष्म साहनी जी उक्त गद्यांश के माध्यम से इस बात को अभिव्यक्त करते हैं कि उपन्यास की रचना करते समय उपन्यासकार को इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि उपन्यास में उद्धृत सामग्री व्यक्ति के संपूर्ण जीवन के अनुभवों की यथार्थता से मेल खा रहे हैं या नहीं। यदि ये व्यक्ति के जीवन के अनुभवों से मेल खाते दिखाई देते तो लोगों का जीवन को लेकर विश्वास बढ़ जाता है। लोगों को उपन्यास में आई घटना अपने जीवन की घटनाएँ लगने लगती हैं। जो रचना को समाज में स्वीकृति दिलाती हैं। इसके पश्चात इस बात का कोई महत्त्व नहीं रह जाता हैं कि उपन्यास की घटनाएँ सच्चाई पर केन्द्रित हैं या कल्पना पर। अर्थात समाज में वे ही उपन्यास अथवा रचनाएँ कालजयी बन पाती हैं जो व्यक्ति के जीवन को समूचे रूप में उकेरने में सक्षम हों।

विशेष :

१. उपन्यास की सामग्री के संदर्भ में विचारों को रखा गया है।

२. कल्पना के महत्त्व को अभिव्यक्ति दी गई है।

३. उपन्यास में घटना की विश्वसनीयता को प्राथमिकता दी गई है।

प्रश्न १ 'आज के अतीत' नामक आत्मकथ्य का उद्देश्य स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : भीष्म साहनी द्वारा लिखित आत्मकथ्य का उद्देश्य लेखक द्वारा समाज को दी जानेवाली कालजयी रचनाओं के संदर्भ में है। इसमें लेखक अपनी यादों

को सजोंकर 'तमस' नामक उपन्यास को लिखता है। लेखक बताता है कि किस तरह से उसने अपने जीवन के विविध अनुभवों को याद कर शब्दबध्द करने की कोशिश की है। साथ ही समाज को एक उत्कृष्ट रचना भी मिल सके इस बात का ध्यान भी रखा गया है।

लेखक उपन्यास का प्रारंभ कल्पना से करता है। लेखक का मानना है कि यदि कल्पना जीवन के यथार्थ का बोध कराने में और लोगों के विश्वास को बनाए रखने में सक्षम है तो यह उपन्यास में उतना ही महत्त्व रखता हैं जितना यथार्थ घटनाएँ। जिसका प्रयोग लेखक ने स्वयं अपने उपन्यास तमस में किया है। लेखक का यह उपन्यास स्मृतियों पर केन्द्रित है। इस आत्मकथ्य की शुरूआत में उन्होंने मुम्बई से सटे भिवंडी में हुए दंगों के कारण वहाँ की व्यवस्था के चरमराने की स्थिति को अभिव्यक्ति दी है। उन्होंने बताया है कि किस प्रकार बुनकरों के नाम से जानी जाने वाली यह नगरी जहाँ सभी धर्मो के लोग मिलजुलकर काम करते थे। ऐसा लगता है कि उनकी इस दिनचर्या पर किसी की नजर लग गई हो। इसीलिए समाज के कुछ अराजक तत्त्वों ने उनके बीच कटुता का बीज बोने का प्रयास किया है।

उसके पश्चात रावलपिंडी के दंगों का उल्लेख किया है तथा वहाँ की स्थिति को देखकर अंग्रेज डिप्टी कमिश्नर भी चिंतित हो जाते हैं। वे शांतिव्यवस्था को कायम रखने के हर संभव प्रयास करने की तरकीब सोचते रहते हैं। थोहा खालसा की यात्रा के दौरान की घटना भी लेखक के सामने आने लगती है जहाँ दसियों सिख स्त्रियों ने अपनी असमत बचाने के लिए कुएं में कूद मारी थी। जहाँ बाद में सभी लाशें फूल-फूल कर कुएँ से बाहर निकल रही थीं।

लेखक इन यथार्थ स्थितियों को केन्द्र में रखकर उपन्यास की रचना करता है। साथ की कुछ काल्पनिक बातों को भी रचना से जोड़ता है जो कहानी को सकारात्मकता प्रदान करते हुए आगे बढ़े । वह इन दंगों के माध्यम से लोगों को सीख देना चाहता है कि दंगे मनुष्य के जीवन में किस प्रकार बिखराव लाते हैं। उक्त स्मृतियों के माध्यम से लेखक आजादी के दौरान अंग्रेजों द्वारा रची गई साजिशों का पर्दा फास भी करता है। बाद में इस पर फिल्म भी तैयार की गई जिसमें स्वयं लेखक व उसकी पत्नी ने अभिनय किया है। इसी अभिनय के दौरान लेखक की पत्नी की मुलाकात उन एक्स्ट्रा शरणार्थियों से होती हैं जो वास्तव में शरणार्थी थे। उन्होंने बताया कि किस प्रकार उन्होंने पाकिस्तान के अलग होने पर अपना सब कुछ वहीं छोड़कर दर-दर भटकते हुए मुम्बई में शरण ली और आज एक्स्ट्रा शरणार्थी के रूप में अभिनय कर अपने और अपने परिवार का पेट पालने के लिए अभिशप्त हैं।

इस प्रकार लेखक इन सभी दंगों के उत्पन्न त्रासद स्थितियों को अभिव्यक्ति देकर समाज को आगाह करता है कि इंसानियत को बचाए रखने के लिए हमें ऐसी स्थितियों से बचे रहने की आवश्यकता है।

७.६ संभावित दीर्घोत्तरी प्रश्न :

१. 'आज के अतीत' से नामक आत्मकथ्य की संवेदना को स्पष्ट कीजिए।

२. 'आज के अतीत' से नामक आत्मकथ्य का सारांश अपने शब्दों में लिखिए।

३. 'आज के अतीत' से नामक आत्मकथ्य की कथा-वस्तु को स्पष्ट कीजिए।

७.७ टिप्पणियाँ लिखिए :

प्रश्न १ भिवंडी में दंगा ।

उत्तर : 'आज के अतीत' से भीष्म साहनी का अत्यंत ही मार्मिक आत्मकथ्य है। इसमें आधुनिक समय की बिडम्बनाओं को बड़ी गहराई से रेखांकित किया गया है। लेखक को याद आता है कि जिस समय उसने 'तमस' उपन्यास लिखने की शुरूआत की थी। उस दौरान जब वे अपने मित्र बलराज जी के घर मुम्बई पहुँचे तो उन्हें पता चला दो दिन पहले ही मुम्बई से सटे भिवंडी में दंगा हुआ था। उनके मित्र बलराज जी अपने कुछ साथियों ख्वाजा अहमद अब्बास और आई.एस. जौहरी के साथ वहाँ जा रहे थे। मोटर कार में एक आदमी की जगह खाली थी इसीलिए वे भी साथ हो लिए थे।

भिवंडी बुनकरों का नगर था। जिसे लूटेरों की नजर लग गई। जब हम वहाँ पहुँचे तो दंगे के बाद मंजर को देखकर हैरान रह गए। जगह-जगह पुलिस के संतरियों के तंबू लगे थे। सड़क पर सिर्फ आवारा कुत्ते दिखाई दे रहे थे। जगह-जगह भांडा-टिंडर बिखरे हुए थे। अपने घरों के बरामदे व छतों से झाँकते लोग मूर्तिवत दिखाई दे रहे थे। चारों ओर सन्नाटा छाया हुआ था । पेड़ों पर बैठे गिद्द और चील अपना भोजन तलाश रहे थे। गलियाँ लाँघते हुए अपने कदमों की आवाज; अपने को ही सुनाई दे रही थी। गृहणियाँ अपने घरों की दहलीज पर खड़ी अपनों के आने का इंतजार कर रही थीं।

इस नगर की एक विशेषता यह थी कि यहाँ पर साझे-कारोबार, साझे लेन-देन व साझे आदान-प्रदान के उदाहरण मिल जाते हैं। जिनमें हिन्दू और मुसलमान का मिलकर दुकान चलाना व बुनकरों के काम में हिन्दू-मुसलमानों की शिरकत शामिल थी। लेकिन समाज के कुछ अराजक तत्त्वों ने इनकी शांत जिंदगी में एक-दूसरे के प्रति कड़वाहट भरने के इरादे से दंगे को अंजाम दिया। लेखक ने अपने उपन्यास के माध्यम से दंगे के कारण लोगों के बीच की आपसी दूरी को पाटने का प्रयास किया है।

७.६ संभावित टिप्पणियाँ :

१. रावलपिंडी के दंगे।

२. फिल्म के एक्स्ट्रा शरणार्थी।

३. उपन्यास में काल्पनिक व वास्तविक दृश्य।

प्रश्न : निम्मलिखित प्रश्नों के उत्तर एक वाक्य में दीजिए ।

(क) बम्बई के किस नगर में हिन्दू-मुस्लिम दंगे हुए थे?

उत्तर : भिवंडी।

(ख) झुग्गी के बाहर किसका पिंजरा था?

उत्तर : तोते का।

(ग) लेखक का मित्र बलराज कहाँ रहता था?

उत्तर : बम्बई।

(घ) भिवंडी किनका नगर था।

उत्तर : बुनकरों का।

(ड) लाशों पर क्या छिड़का जा रह था?

उत्तर : सफेद पाउडर

(च) सरदार की मरी हुई पत्नी की कलाई में क्या है।

उत्तर : सोने का गोखड़ू।

(छ) लेखक के उपन्यास के काल्पनिक पात्र कौन हैं?

उत्तर : नत्थू और उसकी पत्नी।

(ज) तमस पर फिल्म कौन बना रहा था?

उत्तर : गोविंद निहलाणी।

(झ) फिल्म में सरदार की भूमिका किसने निभाई थी?

उत्तर : लेखक ने

(ञ) स्मिता पाटिल फिल्म में अभिनय क्यों नहीं कर पाई थी?

उत्तर : क्योंकि वह गर्भवती थी।

H H H

इकाई ७.१

७.१

भाषा बहता नीर (निबंध) – कुबेरनाथ राय

७.१.१ इकाई की रूपरेखा
७.१.२ निबंध का सारांश
७.१.३ निबंध का उद्देश्य
७.१.४ संभावित दीर्घोत्तरी प्रश्न
७.१.५ टिप्पणी
७.१.६ लघुत्तरीय प्रश्न

७.१.१ लेखक परिचय

सुप्रसिध्द साहित्यकार कुबेरनाथ राय का जन्म २६ मार्च १९३३ को उत्तर प्रदेश के गाजीपुर जिले के मतसाँ ग्राम में हुआ। उनके पिताजी का नाम स्व. बैकुण्ठ नारायण राय एवं माताजी का नाम स्व. लक्ष्मी राय था। उन्होंने काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी और कलकत्ता विश्वविद्यालय से शिक्षा प्राप्त की। उनकी पत्नी का नाम महारानी देवी था। अपने सेवाकाल के आरम्भ में उन्होंने विक्रम विद्यालय कोलकाता में अध्यापन किया। उसके बाद १९५९ में वे नलबारी कॉलेज, नलबारी, असम में अध्यापक के पद पर नियुक्त हुए। यहाँ उन्होंने लगभग अट्ठाइस वर्षो तक सेवा प्रदान की। नौकरी के अन्तिम आठ-नौ वर्षो में असम में व्याप्त अशांति के कारण उन्हें गाजीपुर लौट आना पड़ा। यहाँ आकर उन्होंने सहजानन्द महाविद्यालय, गाजीपुर, उत्तर प्रदेश में प्राचार्य का पद भार संभाला। उनका पहला ललित निबन्ध 'हेमन्त की संध्या' धर्मयुग के १५ मार्च १९६४ के अंक में छपा। यह उनका पहला निबंध संग्रह 'प्रिया नीलकंठी' का पहला निबन्ध है। उनका देहावसान ५ जून १९९६ को हुआ।

उनके निबंध संग्रहों में प्रिया नीलकंठी, गंधमादन, रस आखेटक, विषाद योग, निषाद बाँसुरी, पर्ण मुकुट, महाकवि की तर्जनी, कामधेनु, मराल, अगम की नाव, रामायण महातीर्थम, चिन्मय भारतः आर्ष चिंतन के बुनियादी सूत्र, किरात नदी में चंद्रमधु, दृष्टि अभिसार, वाणी का क्षीरसागर, उत्तरकुरु। कविता संग्रहःकंठमणि। उन्हें समय-समय पर अनेक सम्मान व पुरस्करों से सम्मानित किया गया है जिनमें ज्ञानपीठ का मूर्ति देवी पुरस्कार, आचार्य रामचंद्र शुक्ल सम्मान १९७१, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान का 'साहित्य भूषण' १९७५ और आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी पुरस्कार १९८७ से सम्मानित किया गया।

७.१.२ सारांश

'भाषा बहता नीर' के माध्यम से कुबेरनाथ राय ने भाषाओं की स्थिति व भाषाओं को लेकर विद्वानों के एकाकी सोच पर चिंता व्यक्त की है। वे महान दार्शनिक

कवि कबीर के भाषा संबंधी कुछ विचारों जैसे भाषा एक प्रवाहमान नदी है, भाषा बहता हुआ जल आदि को लेकर काफी प्रभावित है। लेकिन कबीर की इस उक्ति ''संस्कृत कूप जल है, पर भाषा बहता नीर'' का खंडन करते हैं।

उनका मानना है कि 'नीर' को व्यापक संदर्भ में देखने की आवश्यकता है। वे कहते हैं कि संस्कृत मात्र कूप जल कभी नहीं था। उनका मानना है कि यदि कबीर जैसा व्यक्ति ऐसा कहता है तो उसे या तो इतिहास का बोध नहीं था और था भी तो अधूरा था। अन्यथा वे अत्याचारी व अत्याचारग्रस्त दोनों को एक ही लाठी से नहीं पीटते। अतः निबंधकार कहता है कि संस्कृत की भूमिका भारतीय भाषाओं और साहित्य के संदर्भ में 'कूपजल' से कहीं ज्यादा विस्तृत है। निबंधकार कहता हैं कि कबीर के वाक्यांश 'संस्कृत भाषा कूप जल' का संबंध भाषा साहित्य से है ही नहीं। यह वाक्यांश पुरोहित तंत्र के खिलाफ ढेलेबाजी भर है जिसका प्रतीक थी संस्कृत भाषा।

आगे निबंधकार कहता है कि संस्कृत मेघ व हिमवाह के समान हैं जो अन्य भारतीय भाषा रूपी नदियों को अपना स्नेह से सनाथ करती है। उसे जीवित रखती है। अतः कहा जा सकता है कि संस्कृत एक प्राणवान स्रोत के रूप में भाषा-संस्कृति और आचार-विचार को हस्तांतरित करती रही है।

'लेखन में बोलचाल की भाषा का प्रयोग लेखन को सबल और स्वस्थ रखता हैं।' लेखक कबीर के इस बात का शत-प्रतिशत समर्थन करते हैं। लेकिन जब इसी बात का उपयोग हिन्दी को जड़-मूल से अलग (रूटलेस) करने के लिए किया जाता है तो बात आपत्तिजनक हो जाती है। कबीर ने स्वयं अपनी भाषा में संस्कृत का उपयोग किया है। परंतु कहीं न कहीं जाकर वे भी आम आदमी ही ठहरते हैं और 'संस्कृत भाषा कूपजल' वाली बात उसी 'आम आदमी' की खीझ है।

निबंधकार कहता है कि कबीर की सार्वभौम सत्य 'भाषा बहता नीर' के सारे अंतर्निहित पटलों को खूब समझकर ही हमें इसे स्वीकार करना चाहिए। लेखक कहता है कि उसने कबीर के भाषा-सिध्दांत को अपने लेख में 'सतही अर्थ' में ही नहीं बल्कि 'सर्वांग अर्थ' में स्वीकार किया है। इसीलिए उनके लेख में बाजारू हिन्दी, भोजपुरी, आदि का प्रयोग दिखाई देता है। उन्होंने अपनी पुस्तक लोक-संस्कृति पर केन्द्रित पुस्तक 'निषाद बाँसुरी' में भारत की पुर्नव्याख्या करने की कोशिश की है। जिसमें आर्येत्तर तत्वों पर जोर देते हुए गाँव-देहात की शब्दावली का प्रयोग किया है। जो शब्द जन-समाज के कंठ से निकले होते हैं । वे कहीं भी, कभी भी अपवित्र या अश्लील नहीं होते। अश्लील या अपवित्र तो संदर्भ या उद्देश्य होते हैं।

निबंधकार इस बात को लेकर चिंतित है कि १९८१ के बाद कबीर के 'भाषा बहता नीर' का गंभीर चिंतन किए बिना स्थूल और सतही दृष्टि से सोचना कबीर के एक महाकाव्य को पुनः लंगड़ा और बौना कर देना होगा। 'भाषा बहता नीर' है तो भी भाषा के कुछ शर्तो को ध्यान में रखते हुए ही किसी युग व क्षेत्र के शब्दों को

शामिल किया जा सकता है। १९८१ के बाजार में केवल चालू शब्दों के प्रयोग से ही हमारा काम नहीं चल सकता क्योंकि लेखक फिल्मकार ही नहीं बल्कि वह शिक्षक भी है। उसका दायित्व फिल्म-निर्माता के व्यावसायी दायित्व से बड़ा है।

निबंधकार इस बात को स्वीकार करता है कि भाषा को अकारण दूरूह या कठिन नहीं बनाना चाहिए। सकारण कोई दोष नहीं है। जैसे गोस्वामी तुलसीदास ने मानस की भाषा में ये पक्तियाँ लिखी हैं- 'होड़ घुणाक्षर न्याय जिम, पुनि प्रत्यूह अनेक।' और कबीर भी जरूरत पढ़ने पर योगशास्त्र और वेदांत की शब्दावली का प्रयोग करते हैं। जैसे-लुकाठी और मोती मानस चून आदि। साथ ही लेखक स्वयं की रचना में प्रयुक्त वाक्य का उल्लेख करता है- ''मैंने नदी की ओर अनिमेष लोचन दृष्टि से देखा।'' निबंधकार कहता है कि साहित्यकार पाठक की उँगली पकड़कर नहीं चलता, बल्कि पाठक साहित्यकार की उँगली पकड़कर चलता है। लेखक व पाठक के इस संबंध को जनवादीयुग का सस्ता नारा परिवर्तित नहीं कर सकता है।

निबंधकार कहता है कि आज हिन्दी की भूमिका बहुत बड़ी हो गई है। उसे अब वही काम करना है जो कभी संस्कृत किया करती थी जो आज खंडित रूप में अंग्रेजी कर रही है। हिन्दी को आज शिक्षित वर्ग के माध्यम से संपूर्ण ज्ञान विज्ञान का माध्यम बनना है। अतः 'भाषा बहता नीर' को एक सतही अर्थ में न लेकर उसे व्यापक परिप्रेक्ष्य में देखना होगा। संस्कृत के जो शब्द पर्ययावाची रूप में आए हैं। वे सभी कहीं न कहीं जनभाषा के सामान्य शब्द ही हैं। जिन्हें हिन्दी में प्रयोग कर प्रचलन में लाना होगा।

दिए गए अनुच्छेद की संदर्भसहित व्याख्या लिखिए ।

अनुच्छेद :

'संस्कृत भाषा कूपजल' का संबंध भाषा, साहित्य से है ही नहीं यह वाक्यांश पुरोहित तंत्र के खिलाफ ढेलेबाजी भर है। जिसका प्रतीक थी संस्कृत भाषा।'

संदर्भ :

प्रस्तुत निबंध हमारी पाठ्य गद्य-विविधा के 'भाषा बहता नीर' नामक निबंध से लिया गया है जिसे कुबेरनाथ राय ने लिखा है।

प्रसंग :

इस निबंध में पुरोहित तंत्र के खिलाफ आक्रोश दिखाई देता है।

व्याख्या :

निबंधकार का मानना है कि 'नीर' को व्यापक संदर्भ में देखने की आवश्यकता है। वे कहते हैं कि संस्कृत मात्र कूप जल कभी नहीं था। उनका मानना है कि यदि कबीर जैसा व्यक्ति ऐसा कहता है तो उसे या तो इतिहास का बोध नहीं था और

था भी तो अधूरा था। अन्यथा वे अत्याचारी व अत्याचारग्रस्त दोनों को एक ही लाठी से नहीं पीटते। अतः निबंधकार कहता हैं कि संस्कृत की भूमिका भारतीय भाषाओं और साहित्य के संदर्भ में 'कूपजल' से कहीं ज्यादा विस्तृत है। निबंधकार कहता है कि कबीर के वाक्यांश 'संस्कृत भाषा कूप जल' का संबंध भाषा साहित्य से है ही नहीं। यह वाक्यांश पुरोहित तंत्र के खिलाफ ढेलेबाजी भर है जिसका प्रतीक थी संस्कृत भाषा। वे उन पंडितों का विरोध कर रहे थे, जो भोली-भाली जनता को शास्त्रों की आड़ में ठग रहे थे।

विशेष :

१. निबंधकार ने संस्कृत भाषा की व्याप्ति को अभिव्यक्ति दी है।

२. इसमें पोंगा पंडितों की पोल खोलकर रख दी है।

३. इतिहास की जानकारी को प्रधानता दी है।

प्रश्न : 'भाषा बहता नीर' नामक निबंध का उद्देश्य स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : इस निबंध के माध्यम से कुबेरनाथ राय ने भाषाओं की स्थिति व भाषाओं को लेकर विद्वानों के एकाकी सोच पर चिंता व्यक्त की है। वे महान दार्शनिक कवि कबीर के भाषा संबंधी कुछ विचारों जैसे भाषा एक प्रवाहमान नदी है, भाषा बहता हुआ जल आदि को लेकर काफी प्रभावित हैं। लेकिन कबीर की इस उक्ति ''संस्कृत कूप जल है, पर भाषा बहता नीर'' का खंडन करते हैं।

उनका मानना है कि 'नीर' को व्यापक संदर्भ में देखने की आवश्यकता है। वे कहते हैं कि संस्कृत मात्र कूप जल कभी नहीं था । उनका मानना है कि यदि कबीर जैसा व्यक्ति ऐसा कहता है तो उसे या तो इतिहास का बोध नहीं था और था भी तो अधूरा था। अन्यथा वे अत्याचारी व अत्याचारग्रस्त दोनों को एक ही लाठी से नहीं पीटते। अतः निबंधकार कहता हैं कि संस्कृत की भूमिका भारतीय भाषाओं और साहित्य के संदर्भ में 'कूपजल' से कहीं ज्यादा विस्तृत है। निबंधकार कहता है कि कबीर के वाक्यांश 'संस्कृत भाषा कूप जल' का संबंध भाषा साहित्य से है ही नहीं। यह वाक्यांश पुरोहित तंत्र के खिलाफ ढेलेबाजी भर है जिसका प्रतीक थी संस्कृत भाषा।

'लेखन में बोलचाल की भाषा का प्रयोग लेखन को सबल और स्वस्थ रखता है।' लेखक कबीर की इस बात का शत-प्रतिशत समर्थन करते हैं । लेकिन जब इसी बात का उपयोग हिन्दी को जड़-मूल से अलग (रूटलेस) करने के लिए किया जाता है तो बात आपत्तिजनक हो जाती है। कबीर ने स्वयं अपनी भाषा में संस्कृत का उपयोग किया है। परंतु कहीं न कहीं जाकर वे भी आम आदमी ही ठहरते हैं और 'संस्कृत भाषा कूपजल' वाली बात उसी 'आम आदमी' की खीझ है।

निबंधकार इस बात को लेकर चिंतित है कि १९८१ के बाद कबीर के 'भाषा बहता नीर' का गंभीर चिंतन किए बिना स्थूल और सतही दृष्टि से सोचना कबीर के

एक महाकाव्य को पुनः लंगड़ा और बौना कर देना होगा। 'भाषा बहता नीर' है तो भी भाषा के कुछ शर्तो को ध्यान में रखते हुए ही किसी युग व क्षेत्र के शब्दों को शामिल किया जा सकता है। १९८१ के बाजार में केवल चालू शब्दों के प्रयोग से ही हमारा काम नहीं चल सकता क्योंकि लेखक फिल्मकार ही नहीं बल्कि वह शिक्षक भी है। उसका दायित्व फिल्म-निर्माता के व्यावसायी दायित्व से बड़ा है।

निबंधकार संस्कृत भाषा की दूरुहता को लेकर भ्रमित लोगों को आगाह करते हुए कहते हैं कि भाषा को अकारण दूरूह या कठिन नहीं बनाना चाहिए। सकारण कोई दोष नहीं है। जैसे गोस्वामी तुलसीदास ने मानस की भाषा में ये पक्तियाँ लिखी हैं- 'होड़ घुणाक्षर न्याय जिम, पुनि प्रत्यूह अनेक।' ठीक इसी तरह कबीर भी जरूरत पढ़ने पर योगशास्त्र और वेदांत की शब्दावली का प्रयोग करते हैं। जैसे-लुकाठी और मोती मानस चून आदि। साथ ही निबंधकार स्वयं की रचना में प्रयुक्त वाक्य का उल्लेख करता है- ''मैंने नदी की और अनिमेष लोचन दृष्टि से देखा।'' निबंधकार कहता है कि साहित्यकार पाठक की उँगली पकड़कर नहीं चलता, बल्कि पाठक साहित्यकार की उँगली पकड़कर चलता है। निबंधकार व पाठक के इस संबंध को जनवादीयुग का सस्ता नारा परिवर्तित नहीं कर सकता है।

इस प्रकार निबंधकार भाषा को लेकर समाज को तटस्थ रहने के उद्देश्य से इस निबंध को लिखता है। साथ ही वह जन सामान्य को आगाह करता है कि व्यक्ति अपनी विरासत से कटकर विकास नहीं कर सकता। अतः हम जिस प्रकार अपने पूर्वजों की संपत्ति का संरक्षण साधिकार करते हैं ठीक उसी तरह हमें अपने पूर्वजों की भाषा संस्कृत को संरक्षण प्रदान करना चाहिए। उसके भीतर संचित ज्ञान को आत्मसाद कर उसके पर्यायवाची सरल शब्दों के माध्यम से आगामी पीढ़ी का मार्ग दर्शन करने हेतु रूपरेखा तैयार करनी चाहिए।

संभावित दीर्घोत्तरी प्रश्न

१. 'भाषा बहता नीर' नामक निबंध की संवेदना को स्पष्ट कीजिए।

२. 'भाषा बहता नीर' नामक निबंध का सारांश अपने शब्दों में लिखिए।

३. 'भाषा बहता नीर' के माध्यम से लेखक की चिंता को अभिव्यक्त कीजिए।

टिप्पणियाँ लिखिए :

प्रश्न १ कबीर का भाषा सिध्दांत।

उत्तर : निबंधकार कहता है कि कबीर की सार्वभौम सत्य 'भाषा बहता नीर' के सारे अंतर्निहित पटलों को खूब समझकर ही हमें इसे स्वीकार करना चाहिए। लेखक कहता है कि उसने कबीर के भाषा-सिध्दांत को अपने लेख में 'सतही अर्थ' में ही नहीं बल्कि 'सर्वांग अर्थ' में स्वीकार किया है। इसीलिए उनके लेख में बाजारू हिन्दी, भोजपुरी, आदि से भी मुहावरे व भंगिमाओं की अभिव्यक्ति को माँग के अनुसार बेहिचक

ग्रहण किया है। उन्होंने लोक-संस्कृति पर केन्द्रित अपनी पुस्तक 'निषाद बाँसुरी' में भारत की पुर्नव्याख्या करने की कोशिश की है। जिसमें आर्येत्तर तत्वों पर जोर देते हुए गाँव-देहात की शब्दावली का प्रयोग किया है।

अड्डाबाजी, चोरी, नौकायन के शब्दों से लेकर गाँव देहात के अनेक मुहावरे उसमें आ गए हैं। जो शब्द जन-समाज के कंठ से निकले होते हैं। वे कहीं भी, कभी भी अपवित्र या अश्लील नहीं होते। अश्लील या अपवित्र तो संदर्भ या उद्देश्य होते हैं।

इस प्रकार निबंधकार कबीर के भाषा सिध्दांत को स्वयं भी स्वीकार करते हैं। निबंधकार की चिंता यही है कि भाषा की नवीनता को ग्रहण करते हुए भाषा के प्राचीन स्वरूप का त्याग नहीं करना चाहिए। हमें भाषा की मर्यादा का भी ध्यान रखते हुए; अपने दिमाग को खुला रखकर उचित शब्द को ग्रहण करना चाहिए। उस समय हमें यह चिंता नहीं होनी चाहिए कि वे किसी काल व किस भाषा के शब्द हैं।

संभावित टिप्पणियाँ :

(क) संस्कृत की भूमिका

(ख) लेखक का दायित्व

प्रश्नः निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर **एक** वाक्य में दीजिए।

(१) कबीर का दिल कैसा था?
उत्तर : बड़ा साफ था।

(२) संस्कृत को लेकर कौन सी बात भ्रामक है?
उत्तर : कूपजल वाली।

(३) बहते नीर वाली नदी में जीवन-संचार कब होता है?
उत्तर : हिमवाह के गलने पर।

(४) हिमवाह के अतिरिक्त नदी के बहते नीर का दूसरा स्रोत क्या है?
उत्तर : मेघ हैं।

(५) लेखक का दायित्व किसके दायित्व से बड़ा है?
उत्तर : फिल्म-निर्माता के व्यवसायी दायित्व से।

(६) भाषा को अकारण कैसा नहीं बनाना चाहिए?
उत्तर : दुरूह और कठिन।

(७) कबीर ने जरूरत पड़ने पर किस शब्दावली का प्रयोग किया है?
उत्तर : योगशास्त्र व वेदांत की।

(८) बुध्द ने पहली बार 'अनिमेष लोचन दृष्टि' से किसे निहारा था?
उत्तर : बोधिवृक्ष को।

H H H

इकाई ८

८

‘सरयू भैया’ (संस्मरण) – रामवृक्ष बेनीपुरी

इकाई की रूपरेखा

८.१ लेखक परिचय

८.२ ‘सरयू भैया’ का सारांश

८.३ ‘सरयू भैया’ नामक संस्मरण का उद्‌देश्य

८.४ संदर्भ सहित व्याख्या

८.५ चारित्रिक विशेषताएँ

८.६ संभावित दीर्घोत्तरी प्रश्न

८.७ संभावित टिप्पणियाँ

८.८ लघुत्तरीय प्रश्न

८.१ जीवन परिचय

श्री रामवृक्ष बेनीपुरी का जन्म सन् १९०२ ई. में. बिहार के मुजफ्फरपुर जिलान्तर्गत ग्राम बेनीपुर में हुआ था। सामान्य कृषक - परिवार मे जन्मे रामवृक्ष के हृदय में देश-प्रेम का भाव आरम्भ से ही भरा था। सन् १९२० में असहयोग आन्दोलन में कूद पड़ने से आपका शिक्षा-क्रम भंग हो गया। बाद में आपने हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग से ‘विशारद’ परीक्षा उत्तीर्ण की। वे स्वतन्त्रता के दीवाने थे। पत्र-पत्रिकाओं में लिखकर और स्वयं उनका सम्पादन करके देशवासियों में देश-भक्ति की ज्वाला भड़काने के आरोप में उन्हें अनेक बार जेल-यात्रा करनी पड़ी। पर उनकी स्वतन्त्रता और सरस्वती की आराधना नहीं रुकी। आजीवन वे मूक साधक ही बने रहे और सन् १९६८ ई. में इस संसार से विदा हो गए।

बेनीपुरी जी के क्रान्तिकारी व्यक्तित्व में उत्कट देश-भक्ति, मौलिक साहित्यिक प्रतिभा, अनथक समाज-सेवा और चारित्रिक पावनता का अद्‌भुत मिश्रण था। आपने आठ-दस पत्र-पत्रिकाओं का सम्पादन करके और अनेक नाटकों, निबन्धों, कहानियों, रेखाचित्रों आदि की रचना करके हिन्दी साहित्य के भंडार में श्रीवृध्दि की। भारत की स्वतंत्रता के बाद पदो और उपधियों से दूर रहकर उन्होंने देश में पनपती पद-लोलुप्ता और भोगवादी प्रवृत्ति पर अपनी रचनाओं में तीखे प्रहार करके सशक्त भारत के निर्माण का मंगलमय प्रयास किया।

कृतियाँ – बहुमुखी प्रतिभा सम्पन्न श्री बेनीपुरी की प्रमुख कृतियाँ निम्नलिखित हैं-

'गेहूँ और गुलाब', 'माटी की मूरतें', 'लाल तारा', आदि आपके निबन्धों और रेखाचित्रों के संग्रह हैं। 'जंजीरें' और दीवारें', तथा 'मील के पत्थर' में भावपूर्ण संस्मरण हैं। 'सीता की माँ', 'अम्बापाली', 'रामराज्य' आदि आपके राष्ट्र प्रेम को उजागर करनेवाले नाटक हैं। 'पतितों के देश में' उपन्यास और 'चिन्ता के फूल' कहानी संग्रह हैं। 'कार्ल मार्क्स' 'जय प्रकाश नारायण', 'महाराणा प्रतापसिंह' आपके द्वारा लिखित जीवनियाँ हैं। आपके सुललित यात्रा वृतान्तों के संग्रह हैं— 'पैरों में पंख बाँधकर' तथा 'उड़ते चलें''विद्यापती पदावली' तथा 'बिहारी सतसई की सुबोध टीका' आपके आलोचक रूप का परिचय देती हैं।

वे यशस्वी पत्रकार रहे हैं। 'तरूण भारत', 'कर्मवीर युवक', 'हिमालय', 'नयी धारा', 'बालक', 'किसान मित्र', आदि अनेक पत्र-पत्रिकाओं का आपने बड़ी सफलता से कुशल सम्पादन किया था।

८.२ **'सरयू भैया' का सारांश**

'सरयू भैया' लेखक के पड़ोस में रहते हैं। उनका कोई भाई-बहन न होने के कारण वे लेखक को ही अपना छोटा भाई मानते थे। घर से सम्पन्न थे। लेकिन पिता की मृत्यु के साथ ही उनके ऊपर समस्याओं का कहर बरस पड़ा। ये अपने पिता की लेन-देन वाली परंपरा को नहीं संभाल पाए। बाढ़ ने खेती बरबाद की और भूकंप ने घर का सत्यानाश कर दिया।

यदि सरयू भैया की कद-काठी की बात करें तो इनकी गिनती गाँव के सबसे लम्बे और दुबले आदमियों में की जाती है। उनका रंग गुलाबी, बगुले सी बड़ी-बड़ी टाँगें, चिंपाजी की तरह बड़ी-बड़ी बाँहें हैं। वे हमेशा धोती पहने, और कंधे पर अंगोछा डाले रहते हैं। उनकी नाक खड़ी लम्बी, भवें सघन, बड़ी-बड़ी आखें, गाल पिचके, चमकीले पंक्तिबध्द छोटे-छोटे दाँत और पसलियाँ ऐसी जिन्हें आप आसानी से गिन सकते हो। उनके शरीर की नसें ऐसी दिखाई देती हैं मानो शरीर को कोई रस्सी उलझाए हुए है। उन्हें देखने पर वे भूखमरे या मनहूस आदमी प्रतीत होते हैं। उनकी पाँच संतानें हुई। जिनमें सिर्फ बेटियाँ ही बेटियाँ थी। और उनकी पत्नी लम्बाई में उनसे ठीक आधी थी। हाल ही में बेटा पाने के अरमान को लिए इस दुनिया से चल बसी। उनके पास इतनी संपत्ति है कि अपने परिवार का पेट भरने के अतिरिक्त आगत अतिथियों की सेवा सत्कार भी मजे में कर सकते हैं।

सरयू भैया एक नेक दिल इंसान हैं। वे गाँव के चंद जिंदादिल लोगों में गिने जाते हैं। उन्होंने अपना जीवन परोपकार हेतु समर्पित कर दिया है जिसके चलते उनका शरीर तो सूख ही गया है साथ ही सम्पत्ति का भी बड़ा नुकसान हो गया। गाँव घर में सभी के अच्छे-बुरे कामों में सरयू भैया की उपस्थिति सबसे पहले रहती थी। लोग उनके इस व्यवहार का दुर्पयोग करने से नहीं कतराते थे। उनके पास जो भी व्यक्ति

अपनी समस्या लेकर पहुँचता वह निराश होकर नहीं जाता और जब देने की बात आती थी तो सूद की बात तो दूर मूलधन भी नहीं लौटाते थे।

एक बार वे बड़े ही दुखी अवस्था में लेखक के पास आए। उन्होंने देखा की उनकी हालत बहुत खराब थी और आँखों से आँसू बह रहे थे। मालूम पड़ा उनके घर में एक छोटी सी घटना घटी थी। उन्हों ने बताया कि एक सूदखोर महाजन से उन्होंने कुछ रुपये लिए थे समय पर न लौटा पाने के कारण अब वह नालिश करने की धमकी दे रहा है। लेकिन लोगों ने उनकी समस्या का समाधान करना तो दूर उल्टे उन्हें उल्झाने में कोई कोर कसर नहीं की। मैंने उन्हें आश्वासन दिया लेकिन लोगों की कृतघ्नता ने लेखक की रात भर नीद उड़ा दी।

इस प्रकार लेखक ने समाज के लोगों की लालची, चाटुकारी व स्वार्थी प्रवृत्ति को उकेरने का प्रयास किया। और परोपकार की सीमाओं पर नियंत्रण रखने की ओर संकेत किया है।

दिए गए **अनुच्छेद की संदर्भसहित व्याख्या** लिखिए।

अनुच्छेद :

''विक्टर हयूगो ने अपनी अमर कृति 'ला मिजरेब्ल' में कहा है- डॉक्टर का दरवाजा कभी बंद नहीं रहना चाहिए और पादरी का फाटक हमेशा खुला होना चाहिए- सरयू भैया को निःसन्देह इन दोनों का रुतबा अकेले हासिल है।''

संदर्भ :

प्रस्तुत संस्मरण हमारी पाठ्य पुस्तक 'गद्य-विविधा' के 'सरयू भैया' नामक संस्मरण से लिया गया है जिसे रामवृक्ष बेनीपुरी ने लिखा है।

प्रसंग :

इसके माध्यम से परोपकार की भावना को अभिव्यक्ति दी गई है।

व्याख्या :

इस गद्यांश के माध्यम से लेखक अपने पड़ोसी सरयू भैया के परोपकार की भावना को अभिव्यक्त करता है। लेखक बताता है कि सरयू भैया के गाँव के किसी घर में कोई बीमार पड़ जाए और वैद्य को बुलाना हो तो तुरंत सरयू भैया की खोज शुरू हो जाती है। किसी बुजुर्ग व्यक्ति का बाजार से सौदा लाना हो तो सरयू भैया, किसी का रिश्तेदार किसी दूसरे गाँव में यदि बीमार हो और खबर लानी हो, किसी की रजिस्ट्री करनी हो, शिनाख्त के लिए सरजू भैया, किसी के घर शादी व्याह या मुंडन आदि हो तो सरयू भैया अस्त व्यस्त रहते। किसी के घर पर आधी रात में किसी की मृत्यु हो जाती है तो कफन लाने के लिए सरयू भैया को ही ढूँढा जाता था। इस प्रकार गाँववालों के लिए समर्पित सरयू भैया खुद अपने घर और खेत नहीं बचा पाते हैं क्योंकि इन्हें गाँववालों के कामों से फुरसत ही नहीं मिल पाती

थी। इस प्रकार वैद का दवाखाना और पादरी के फाटक की तरह ही सरयू भैया के सेवा रूपी द्वार गाँववालों के लिए चौबीसों घंटे खुले ही रहते हैं।

विशेष :

१. परोपकार की भावना को व्यक्त किया गया है।

२. समाज में बढ़ते जा रहे स्वार्थी प्रवृत्ति की ओर संकेत किया है।

प्रश्न १ 'सरयू भैया' नामक संस्मरण का उद्देश्य स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : 'सरयू भैया' लेखक के पड़ोस में रहते हैं। उनका कोई भाई-बहन न होने के कारण वे लेखक को ही अपना छोटा भाई मानते थे। घर से सम्पन्न थे। लेकिन पिता की मृत्यु के साथ ही उनके ऊपर समस्याओं का कहर बरस पड़ा। ये अपने पिता की लेन-देन वाली परंपरा को नहीं संभाल पाए। बाढ़ ने खेती बरबाद की और भूकंप ने घर का सत्यानाश कर दिया।

सरयू भैया की गणना गाँव के सबसे लम्बे और दुबले आदमियों में की जाती है। उनका रंग गुलाबी, बगुले सी बड़ी-बड़ी टाँगे, चिंपाजी की तरह बड़ी-बड़ी बाँहें हैं। वे हमेशा धोती पहने, और कंधे पर अंगोछा डाले रहते हैं। उनकी नाक खड़ी लम्बी, भवें सघन, बड़ी-बड़ी आँखें, गाल पिचके, चमकीले पंक्तिबध्द छोटे-छोटे दाँत और पसलियाँ ऐसी जिन्हें आप आसानी से गिन सकते हो। उनके शरीर की नसें ऐसी दिखाई देती हैं मानो शरीर को कोई रस्सी उलझाए हुए है। उन्हें देखने पर वे भूखमरे या मनहूस आदमी प्रतीत होते हैं। उनकी पाँच संतानें हुई। जिनमें सिर्फ बेटियाँ ही बेटियाँ थी। और उनकी पत्नी लम्बाई में उनसे ठीक आधी थी। हाल ही में बेटा पाने के अरमान को लिए इस दुनिया से चल बसी। उनके पास इतनी संपत्ति है कि अपने परिवार का पेट भरने के अतिरिक्त अतिथियों की सेवा सत्कार भी मजे में कर सकते हैं। इतना सबकुछ होने के बावजूद वे सादगी भरा जीवन व्यतीत करते थे।

सरयू भैया एक नेक दिल इंसान हैं। वे गाँव के चंद जिंदादिल लोगों में गिने जाते हैं। उन्होंने आपना जीवन परोपकार हेतु समर्पित कर दिया है जिसके चलते उनका शरीर तो सूख ही गया है साथ ही सम्पत्ति का भी बड़ा नुकसान हो गया। गाँव घर में सभी के अच्छे-बुरे कामों में सरयू भैया की उपस्थिति सबसे पहले रहती थी। लोग उनके इस व्यवहार का दुर्पयोग करने से नहीं कतराते थे। उनके पास जो भी व्यक्ति अपनी समस्या लेकर पहुँचता वह निराश होकर नहीं जाता और जब देने की बात आती थी तो सूद की बात तो दूर मूलधन भी नहीं लौटाते थे।

एक बार वे बड़े ही दुखी अवस्था में लेखक के पास आए। उन्होंने देखा की उनकी हालत बहुत खराब थी और आँखों से आँसू बह रहे थे। मालूम पड़ा उनके घर में एक छोटी सी घटना घटी थी। उन्हों ने बताया कि एक सूदखोर महाजन से उन्होंने कुछ रुपये लिए थे समय पर न लौटा पाने के कारण अब वह नालिश करने

की धमकी दे रहा है। लेकिन लोगों ने उनकी समस्या का समाधान करना तो दूर उल्टे उन्हें उल्झाने में कोई कोर कसर नहीं की। मैंने उन्हें आश्वासन दिया लेकिन लोगों की कृतघ्नता ने लेखक की रात भर नीद उड़ा दी।

इस प्रकार लेखक ने समाज के लोगों की लालची, चाटुकारी व स्वार्थी प्रवृत्ति को उकेरने का प्रयास किया। और परोपकार की सीमाओं पर नियंत्रण रखने की ओर संकेत किया है।

८.६ संभावित दीर्घोत्तरी प्रश्न

१. 'सरयू भैया' नामक संस्मरण की संवेदना को स्पष्ट कीजिए।

२. 'सरयू भैया' नामक संस्मरण का सारांश अपने शब्दों में लिखिए।

३. 'सरयू भैया' के माध्यम से लेखक की चिंता को अभिव्यक्त कीजिए।

८.७ टिप्पणियाँ लिखिए :

सरयू भैया का चरित्र–चित्रण :

सरयू भैया की गणना गाँव के सबसे लम्बे और दुबले आदमियों में की जाती है। उनका रंग गुलाबी, बगुले सी बड़ी–बड़ी टाँगे, चिंपाजी की तरह बड़ी–बड़ी बाँहे हैं। वे हमेशा धोती पहने, और कंधे पर अंगोछा डाले रहते हैं। उनकी नाक खड़ी लम्बी, भवें सघन, बड़ी–बड़ी आँखें, गाल पिचके, चमकीले पंक्तिबध्द छोटे–छोटे दाँत और पसलियाँ ऐसी जिन्हें आप आसानी से गिन सकते हो। उनके शरीर की नसें ऐसी दिखाई देती हैं मानो शरीर को कोई रस्सी उलझाए हुए है। उन्हें देखने पर वे भूखमरे या मनहूस आदमी प्रतीत होते हैं। उनकी पाँच संतानें हुई। जिनमें सिर्फ बेटियाँ ही बेटियाँ थी । और उनकी पत्नी लम्बाई में उनसे ठीक आधी थी। हाल ही में बेटा पाने के अरमान को लिए इस दुनिया से चल बसी। उनके पास इतनी संपत्ति है कि अपने परिवार का पेट भरने के अतिरिक्त अतिथियों की सेवा सत्कार भी मजे में कर सकते हैं। इतना सबकुछ होने के बावजूद वे सादगी भरा जीवन व्यतीत करते थे।

सरयू भैया के गाँव के किसी घर में कोई बीमार पड़ जाए और वैद्य को बुलाना हो तो तुरंत सरयू भैया की खोज शुरू हो जाती है। किसी बुजुर्ग व्यक्ति का बाजार से सौदा लाना हो तो सरयू भैया, किसी का रिश्तेदार किसी दूसरे गाँव में यदि बीमार हो और खबर लानी हो, किसी को रजिस्ट्री करनी हो, शिनाख्त के लिए सरयू भैया, किसी के घर शादी व्याह या मुंडन आदि हो तो सरयू भैया अस्त व्यस्त रहते। किसी के घर पर आधी रात में किसी की मृत्यु हो जाती है तो कफन लाने के लिए सरयू भैया को ही ढूँढ़ा जाता था। इस प्रकार गाँववालों के लिए समर्पित सरयू भैया खुद अपने घर और खेत नहीं बचा पाते हैं क्योंकि इन्हें गाँववालों के कामों से फुरसत ही नहीं मिल पाती थी। इस प्रकार वैद का दवाखाना और पादरी के फाटक

की तरह ही सरयू भैया के सेवा रूपी द्वार गाँव वालों के लिए चाबीसों घंटे खुले ही रहते हैं।

एक बार वे बड़े ही दुखी अवस्था में लेखक के पास आए। उन्होंने देखा की उनकी हालत बहुत खराब थी और आँखों से आँसू बह रहे थे। मालूम पड़ा उनके घर में एक छोटी सी घटना घटी थी। उन्हों ने बताया कि एक सूदखोर महाजन से उन्होंने कुछ रुपये लिए थे समय पर न लौटा पाने के कारण अब वह नालिश करने की धमकी दे रहा है। लेकिन लोगों ने उनकी समस्या का समाधान करना तो दूर उल्टे उन्हें उल्झाने में कोई कोर कसर नहीं की। मैंने उन्हें आश्वासन दिया लेकिन लोगों की कृतघ्नता ने लेखक की रात भर नीद उड़ा दी।

८.७ संभावित टिप्पणियाँ :

१. परोपकार की भावना

२. स्वार्थी लोगों की प्रवृत्ति

३. लेखक की चिंता।

८.८ लघुत्तरीय प्रश्न :

प्रश्न : निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक वाक्य में दीजिए।

(क) 'सरयू भैया' के कितने बच्चे थे।

उत्तर : पाँच

(ख) 'सरयू भैया' की बाँहें किसकी तरह थी?

उत्तर : चिंपाजी

(ग) 'सरयू भैया' गाँव के किन लोगों में गिने जाते थे?

उत्तर : जिंदादिल

(घ) 'सरयू भैया' के पिता किस नाम से जाने जाते थे?

उत्तर : गुमाशता जी

(ड) किसके घर पर बच्चा बीमार था?

उत्तर : गंगोभाई।

(च) राजकुमार के बीमार मामाजी की खोज खबर लाने कौन गया?

उत्तर : सरयू भैया।

(छ) 'सरयू भैया' की पत्नी का अरमान क्या था ?

उत्तर : बेटा पाना।

(ज) रजिस्ट्री किसे करनी थी ?

उत्तर : परमेसर की।

H H H

नमूना प्रश्नपत्र

बी. ए. प्रथम वर्ष

हिंदी (ऐच्छिक)

समय (३ घंटे) **कुल अंक :१००**

प्रश्न - १ निम्न लिखित अवतरणों की संदर्भ -सहित व्याख्या कीजिए :- **24**

(क) "जहाँ बाल - बच्चे और घर-बार होता है सौ किस्म की झंझटे होती ही है| कभी बच्चे को तकलीफ है, तो कभी जच्चा को| ऐसे वक्त में कर्ज की जरूरत कैसे न हो? घर-बार हो तो कर्ज होगा ही"

अथवा

"आप स्वीकार क्यों नहीं कर लेते कि जीवन की वास्तविकता किसी भी काल्पनिक साहित्यिक कहानी से ज्यादा हैरत अंगेज होती है|

(ख) जब तक तेरी अपनी अट्टालिका नहीं बन जाती, तू इसी भवन में रह सकता है, जा भगवान तुझे सफलता दे|"

अथवा

"संस्कृत भाषा कूपजल का संबंध भाषा, साहित्य से है ही नहीं यह वाक्यांश पुरोहित तंत्र के खिलाफ ढेलेबाजी भर है| जिसका प्रतीक थी संस्कृत भाषा|"

प्रश्न - २ निम्न लिहकित प्रश्नो के उत्तर लिखिए :- **30**

(प) बाकर के माध्यम से लेखक समाज को क्या संदेश देना चाहते है?

अथवा

'टेपचु ' कहानी में चित्रित समस्याओं पर प्रकाश डालिए|

(फ) 'महाभारत की एक सांझ' एकांकी में घटित घटना का वर्णन कीजिए|

अथवा

'आज के अतीत 'नामक आत्म कथ्य की संवेदना को स्पष्ट कीजिए|

प्रश्न - ३ निम्न लिखित में से किसी एक प्रश्न का उत्तर दीजिए :- **15**

(ग) 'प्रतिशोध' कहानी में चित्रित पात्रों का चरित्र चित्रण कीजिए|

अथवा

'सरहद के उस पार' रिपोर्ताज में चित्रित राजनितिक ,सामाजिक आर्थिक दशा का चित्रण कीजिए|

प्रश्न - ४ निम्न लिखित विषयों पर टिप्पणियाँ कीजिए| **16**

(ट) 'भेड़िए' कहानी की समीक्षा

अथवा

कुलदीप और भैरो पांडे का संबंध

(ठ) 'जैसे उनके दिन फिरे' व्यंग्य का सारांश

अथवा

रावल पिंडी के दंगे

प्रश्न - ५ निम्न लिखित प्रश्नों के एक वाक्य में उत्तर लिखिए| **15**

१. रजिया किसकी बेटी थी?

२. मुख्तार साहब ने किसे नौकरी पर रखा था?

३. यशपाल की कौनसी रचना पाठ्यक्रम में है?

४. 'भेड़िए' कहानी में चित्रित नटनियों की उम्र क्या थी?

५. कुलदीप के बड़े भाई का क्या नाम था?
६. 'टेपचू' कहानी में किस गाँव का चित्रण है?
७. 'प्रतिशोध कहानी किस विषय पर आधारित है?
८. 'महाभारत की एक सांझ' एकांकी के रचनाकार कौन है?
९. 'जैसे उनके दिन फिरे ' किस विधा की रचना है?
१०. कटिहार जिले से नेपाल की दुरी कितनी है?
११. 'तमस' कहानी में किस शहर के दंगो का वर्णन है?
१२. बहते नीर वाली नदी में जीवन संचार कब होता है?
१३. सरयू भैया के कितने बच्चे है?
१४. दो जून की रोटी किसके नाम पर नहीं मिलती|
१५. 'कला शुक्रवार' कहानी की लेखिका कौन है?